प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण

(तृतीय खण्ड)

सम्पादक

आचार्य नलिनविलोचन शर्मा

शोध-सहायक

श्रीरामनारायण शास्त्री



बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

आचार्य शिवपूजन सहाय मार्ग

सैदपुर, पटना-८०० ००४ (बिहार)

प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण

(तृतीय खण्ड)

सम्पादक
आचार्य नलिनविलोचन शर्मा
शोध-सहायक
श्रीरामनारायण शास्त्री

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना-८०० ००४

❑ प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
सैदपुर, पटना-८००००४

तृतीय संस्करण; शक-सं० १९३४; वि०सं० २०६९ सन् २०१२ ई०

मूल्य : ६० रुपये

❑ मुद्रक :
राष्ट्रीय प्रेस
नया टोला, पटना-४

वक्तव्य

(प्रथम संस्करण)

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थशोध-विभाग से पुरानी पोथियों के दो विवरण पुस्तक-रूप में पहले प्रकाशित हो चुके हैं । उन दो खण्डों में से पहले खण्ड में परिषद्-संग्रहालय में संचित पोथियों का विवरणात्मक परिचय है और दूसरे खण्ड में श्रीमन्नूलाल पुस्तकालय (गया) तथा पटना सिटी (गायघाट) के श्रीचैतन्य पुस्तकालय की पोथियों के विवरण प्रकाशित हैं । पहले खण्ड को तो संशोधित और संवर्द्धित नवीन संस्करण भी निकल चुका है । इस तीसरे खण्ड में तीस ग्रन्थकारों के पचास ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । ये पचासों ग्रन्थ केवल हिन्दी के ही हैं और ग्रन्थकारों में भी आठ बिहार के हैं । ये सभी ग्रन्थ परिषद् के संग्रहालय में सुरक्षित हैं । सबसे बढ़कर महत्त्व की बात यह है कि इस विवरण में पाँच ग्रन्थकार बिलकुल नये हैं, जिनका पता अबतक के प्रकाशित किसी शोध-विवरण में नहीं है । वे हिन्दी-संसार के लिए सर्वथा नवीन है । पुस्तक के आरम्भ में सभी ग्रन्थकारों का संक्षिप्त परिचय भी दे दिया गया है । अन्त में तीन परिशिष्ट भी हैं, जिनमें शोधकर्त्ताओं की सुविधा के लिए आवश्यक विश्लेषणात्मक विवरण सुलभ हैं ।

इस विवरण के आरम्भिक बत्तीस पृष्ठों को सामग्री का सम्पादन प्राचीन ग्रन्थ-शोध -विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉक्टर धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री ने किया था और उसके आगे के पृष्ठों की सामग्री तथा आरम्भ में प्रकाशित ग्रन्थकार-परिचय इस विभाग के वर्त्तमान अध्यक्ष आचार्य नलिनविलोचन शर्मा द्वारा सम्पादित हैं ।

पुस्तक में प्रकाशित विवरणों के तैयार करने में विभागीय अनुसन्धायक श्रीरामनारायण शास्त्री ने बड़ा परिश्रम किया है । उनके द्वारा विभागीय संग्रहालय के जो विवरण तैयार होकर प्रकाशित हुए हैं, उनकी उपयोगिता हिन्दी-जगत् के शोधकर्त्ता विद्वानों ने स्वीकार की है । आशा है कि यह तीसरा खण्ड भी पिछले खण्डों के समान ही शोध-कार्य में सहायक होगा ।

प्रस्तुत-पुस्तक में जिन पोथियों का परिचय छपा है, उनकी प्राप्ति में जो सज्जन सहायक हुए हैं, सबके प्रति हम आभार प्रकट करते हैं । उनके नाम और पते यथास्थान पुस्तक में अङ्कित हैं । विश्वास है कि इस विभाग के अनुसन्धायक श्रीरामनारायण शास्त्री जब कभी ग्रन्थ-शोध के लिए बिहार-राज्य में निकलेंगे, उन्हें पुरानी पोथियों के अधिकारियों से यथोचित सहायता प्राप्त होगी । यदि पोथियों के संग्रह में श्रीशांस्त्री को सहयोग मिलता रहा, तो भविष्य में ऐसे उपादेय विवरणों के प्रकाशित होने से साहित्यिक शोध में विशेष लाभ की सम्भावना है ।

श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी
शकाब्द १८८१

शिवपूजन सहाय
संचालक

वक्तव्य

'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (तीसरा खण्ड) के द्वितीय संस्करण का होना मेरे लिए हर्ष का विषय है । बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के हस्तलिखित ग्रन्थशोध-विभाग ने प्राचीन हस्तलिखित पोथियों के जो विवरण प्रकाशित किये, उनका व्यापक उपयोग शोधकर्त्ताओं ने किया और वे इन विवरणों से पर्याप्त मात्रा में लाभान्वित भी हुए । तभी तो इस खण्ड का द्वितीय संस्करण करना पड़ रहा है । अस्तु ।

इस खण्ड के प्रकाशन के पश्चात् आगे के तीन खण्ड भी क्रमशः तैयार एवं प्रकाशित हुए । तैयार तो विवरण का सातवाँ खण्ड भी हुआ, परन्तु उसकी पाण्डुलिपि आज के लगभग १२ वर्ष पूर्व लुप्त हो गई । अतः उसका प्रकाशन सम्भव न हो सका । अब उसकी पाण्डुलिपि पुनः तैयार कराई जा रही है । तैयार होते ही उसे मुद्रणार्थ दे दिया जायेगा ।

हस्तलिखित ग्रन्थों के सम्पादक-प्रकाशन की दिशा में 'लीलारसतरंगिणी' नामक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ मेरे कार्यकाल की आरम्भिक अवधि में ही (रामनवमी, १९८२ ई० के सद्यः पश्चात्) प्रकाशित हुआ । इसका प्रकाशन सुदीर्घ काल से लम्बित पड़ा था । कतिपय अन्य पाण्डुलिपियों के सम्पादन की दिशा में भी प्रगति हुई । सम्पादन पूर्ण होने के पश्चात् उनका भी प्रकाशन किया जायेगा । यों हस्तलिखित पोथियों के प्रकाशनार्थ यह दृष्टिकोण महत्त्वपूर्ण है कि ग्रन्थ का साहित्यिक महत्त्व हो ।

अन्तः में मैं आशा करता हूँ कि सुधी पाठक एवं शोधार्थी इस विवरण का उपयोग करते रहेंगे और सातवें खण्ड का प्रकाशन होने पर उसका भी समुचित उपयोग करेंगे । मुझे खेद है कि पर्याप्त राशि सुलभ न रहने के कारण प्रकाशन में विलम्ब अनिवारणीय हो जाता है ।

शुक्रवार, दिनांक ४ अप्रैल, १९८७ ई०
चैत्र शुक्ल षष्ठी, २०४४ वि०

रामदयाल पाण्डेय
उपाध्यक्ष-सह-निदेशक

वक्तव्य

'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (तीसरा खण्ड) के तृतीय संस्करण का प्रकाशित होना मेरे लिए हर्ष का विषय है। आज के संघर्ष के युग में भी यह पाठकीय आग्रह सुखद है। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् द्वारा प्राचीन हस्तलिखित पोथियों के विवरण प्रकाशित किये गये थे उनका व्यापक उपयोग शोधार्थियों द्वारा किया गया तभी तो तृतीय संस्करण का प्रकाशन हो पा रहा है।

ध्यातव्य है कि प्रस्तुत खण्ड में जिन ग्रन्थकारों का परिचय दिया गया है उनमें आठ बिहार के हैं। आचार्य शिवपूजन सहाय के अनुसार पाँच ग्रन्थकार तो सर्वथा नवीन हैं। पुस्तक के अन्त में तीन परिशिष्ट भी शोधार्थियों की सुविधा के लिए दिये हुए हैं।

इस संस्करण के इस रूप में आने में परिषद् की पत्रिका सम्पादिका डॉ० मिथलेश कुमारी मिश्र तथा वरीय प्रूफरीडर संशोधक श्री उमेश प्रसाद सिंह का सहयोग प्राप्त होता रहा है। अन्त में मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में सुधी पाठक एवं शोधार्थी इस विवरण का उपयोग करते रहेंगे। अस्तु

विजयादशमी २०६९ वि.
२४ अक्टूबर २०१२

प्रो० रामबुझावन सिंह
निदेशक

सम्पादकीय निवेदन

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थशोध-विभाग की ओर से सन् १९५१ ई० के फरवरी मास से ही प्राचीन पोथियों के संग्रह तथा उनके शोधमूलक विवरण-प्रकाशन का कार्य हो रहा है । सन् १९५८ ई० के मार्च तक ३२७३ प्राचीन हस्तलिखित पोथियाँ संगृहीत हो चुकी हैं । इन पोथियों में से १५१ (हिन्दी १०० + संस्कृत ५१) के विवरण तथा उनके रचयिताओं के संक्षिप्त परिचय (प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण, पहला खण्ड) प्रकाशित हो चुके हैं । इसके अतिरिक्त मन्नूलाल पुस्तकालय, गया और चैतन्य पुस्तकालय, गायघाट, पटना सिटी के १२७ ग्रन्थों के विवरण तथा ग्रन्थकारों के परिचय दूसरे खण्ड में छप चुके हैं । परिषद् में संगृहीत ५० हिन्दी हस्तलिखित पोथियों के विवरण का यह तीसरा खण्ड अनुसन्धित्सु विद्वज्जनों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हम प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं । इसकी ग्रन्थ-संख्या पहले खण्ड की ग्रन्थ-संख्या (१००) के बाद से (१०१ से) है ।

प्रस्तुत खोज-विवरण में तीस ग्रन्थकारों के पचास ग्रन्थों के विवरण दिये जा रहे हैं । इन ग्रन्थकारों में आठ बिहार-राज्यवर्त्ती ग्रन्थकार विशेष रूप से अनुसन्धेय हैं और पाँच ग्रन्थकारों की चर्चा प्रथम-प्रथम इस विवरण-ग्रन्थ में हो रही है ।

अधोलिखित तालिका से विक्रम-शताब्दी के अनुसार रचित और लिपिबद्ध ग्रन्थों की संख्या की जानकारी होगी ।

विक्रम-शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों के रचनाकाल और लिपिकाल

शताब्दी	इस शताब्दी में रचित पोथियों की संख्या	इस शताब्दी में लिपिबद्ध पोथियों की संख्या
सोलहवीं	×	×
सत्रहवीं	१	×
अट्ठारहवीं	२	×
उन्नीसवीं	३	१३
बीसवीं	२	१७

इस अनुसन्धान में निम्नलिखित आठ बिहारी कवियों के हस्तलेख मिले हैं :

घनारंग, दरियादास, परमानन्ददास, प्रेमदास, बच्चू मल्लिक, लक्ष्मीसखी, सूरजदास तथा हलधरदास । जिन नये ग्रन्थकारों के हस्तलेख पहली बार परिषद् के शोध के फलस्वरूप प्राप्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं-घनारंग, नरहर, बच्चू मल्लिक, मानप्रवंत, लक्ष्मीसखी, श्रवणदेव और सत्यभोलास्वामी ।

इनके सम्बन्ध में संक्षिप्त परिचयात्मक टिप्पणियाँ ग्रन्थ-विवरण के प्रारम्भ में दे दी गई हैं । परिषद् में संकलित ४१९ हिन्दी हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थों के संक्षिप्त विवरण भी चौथे खण्ड के रूप में शीघ्र प्रकाशित होंगे । हम उन महानुभावों के कृतज्ञ हैं, जिन्होंने परिषद्- संग्रहालय को हस्तलिखित पोथियाँ प्रदान करने की उदारता दिखाई है ।

श्रावणी पूर्णिमा
सं० २०६९ वि०

नलिनविलोचन शर्मा
अध्यक्ष
प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ-शोध-विभाग

विषयानुक्रम

संकेत-विवरण

पृ०सं०	- पृष्ठ संख्या
प्र०पृ० पं०	- प्रति पृष्ठ पंक्तियाँ
दे०	- देखिए
खो० वि०	- खोज-विवरण
ना० प्र० स० का०	-नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी
वि० सं०	-विक्रम-संवत्
वि० रा० भा० प०	-बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
मि० ब० वि०	-मिश्रबन्धु-विनोद
र० का०	-रचनाकाल
लि० का०	-लिपिकार या लिपिकाल
ग्र० सं०	-ग्रन्थ-संख्या
क० सं०	-कवि-संख्या
१ खं०	-पहला खण्ड
२ खं०	-दूसरा खण्ड
३ खं०	-तीसरा खण्ड



ग्रन्थकारों का संक्षिप्त परिचय

(ग्रन्थकारों के नामों के सामने अंकित कोष्ठकान्तर्गत संख्याएँ विवरणिका में सम्मिलित ग्रन्थों की क्रम-संख्याएँ हैं ।)

१. कबीरदास-(१४१) निर्गुण-काव्यधारा के प्रसिद्ध सन्त-कवि; कबीरपन्थ के प्रवर्त्तक; अनुमानतः १४५५ वि० में जन्म और १५०५ वि० में निर्वाण; रामानन्द के शिष्य और धर्मदास के गुरु । इस विवरण में उपलब्ध 'पंचमुद्र' ग्रन्थ विभाग की खोज में नवीन है । इस ग्रन्थ की एक प्रति काशी नागरी-प्रचारिणी सभा को खोज में मिल चुकी है,[१] जिसका लिपिकाल १७४७ वि० है । परिषद्-संग्रहालय में कवि की अन्य छह रचनाएँ हैं ।[२] नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को कवि की लगभग पहचहत्तर रचनाएँ प्राप्त हुई हैं ।[३]

२. कृष्णदास-(१०६) दानलीला के रचयिता; पयहारी उपनाम से प्रसिद्ध, अट्ठारहवीं सदी में वर्त्तमान । यह हस्तलेख नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी खोज में मिला है।

३. कृपाराम-(११५) रामानुज-सम्प्रदाय के भक्त कवि; १८५५ वि० के लगभग वर्त्तमान। इनके सम्बन्ध में परिषद् के पिछले 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (पहला खण्ड) में चर्चा हो चुकी है । दे० पृ० सं० ञ । इनकी चार रचनाएँ नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज में मिली है ।[४]

४. कुशलसिंह-(१३६) बाराबंकी (उत्तरप्रदेश) जिला-निवासी; १६७७ वि० के लगभग वर्त्तमान । परिषद् के पूर्व प्रकाशित विवरण में इनकी विशेष चर्चा हुई है ।

---

१. नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) का खोज-विवरण-१६३५-३७, ग्र० सं० ४६ एस् ।

२. प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण-पहला खण्ड (वि० रा० भा० प०, पटना, १६५८ ई०) पृ० झ, ग्रं० सं० २३ क, २७, ३२, ८०, ८४ ।

३. हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण-पहला खण्ड, पृ० सं० १८ ।
हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों का त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण (१६२६-२८ ई०) पृ० सं० ५१।
" " चतुर्दश " " (१६२१-३१ ई०) " ५५ ।
" " पंचदश " " (१६३२-३४ ई०) " ४१ ।
" " षोडश " " (१६३५-३७ ई०) " ३५ ।
" " सप्तदश " " (१६३८-४० ई०) " ५७ ।

४. हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिपत विवरण पृ० सं० २६ ।

दे० वि० रा० भा० प० से प्रकाशित (१६५८ ई०) प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण (पहला खण्ड) पृ० ढ, क० सं० २६ और ग्र० सं० १६ ख ।

५. **गुरुप्रसाद**-(१२८) 'रत्नसागर के रचयिता गुरुप्रसाद परिषद् के शोध में नये हैं ? इनका रचनाकाल सम्भवतः सं० १७५५ वि० है । 'याज्ञवल्क्यस्मृति-भाषा' के ग्रन्थकार गुरुप्रसाद से ये भिन्न हैं । नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी इनकी रचनाएँ खोज में मिली हैं । दे० इस खोज-विवरण में ग्र० सं० १२८ की टिप्पणी ।

६. **घनारंग**-(१४४) शाहाबाद (बिहार) जिला के धनगाईं ग्राम-निवासी; डुमराँव-राज्य के आश्रित; कवि और संगीतज्ञ, अट्ठारहवीं शती में वर्त्तमान; परिषद् के शोध में नये मिले हैं ।

७. **चरणदास**-(११४, १३३) दहरा (अलवर-राजस्थान-निवासी; धूसर धनिया; सुखदेव के शिष्य और सहजोबाई के गुरु; चरणदासी सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक; इनका प्रथम नाम रणजित था । परिषद् के खोज-विवरण में पहले भी इनकी चर्चा हुई है ।[1]

८. **जनभुवालस्वामी**-(१३७) भगवद्गीता के दोहे-चौपाइयों में रूपान्तरकार, भुवाल; भूवालस्वामी और जनभुवाल नाम के अभिहित; १७०० वि० में वर्त्तमान । इनकी चर्चा मिश्रबन्धु-विनोद[2], नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज-रिपोर्ट[3] और परिषद के खोज-विवरण[4] में हो चुकी है ।

९. **तुलसीदास**- (१०४, १०७, ११८, १२१, १२७, १२६, १३०, १३८, १३६, १४३, १४७, १५०) प्रस्तुत विवरण में प्रसिद्ध संत-कवि गो० तुलसीदास के ग्रन्थों की बारह पाण्डुलिपियाँ खोज में उपलब्ध हुई हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है :

क्र० सं०	ग्रन्थ-नाम	प्रतियाँ	लिपिकाल
१.	रामचरितमानस	७	१८५८ वि०, १८७१ वि०, १८८७ ई०, १६१७ वि०
२.	छप्पै रामायण	२	
३.	भरथमिलाप	२	१८५७ वि०, १६०७ ई०
४.	कवितावली	१	

१०. **दरियादास**-(१३५, १४५ क, १४५ ख) शाहाबाद (बिहार) के धरकंधा-ग्राम-निवासी पीरनशाह के पुत्र; दरिया-पंथ के प्रवर्त्तक सन्त-कवि, जन्म सं० १७३१ वि० और निर्वाण सं०

---

१. वि० रा० भा० प० (पटना) से प्रकाशित (१६५८ ई०, द्वितीय संस्करण), प्रा० ह० पो० का विवरण-पृ० सं० ट, क० सं० ११ और ग्र० सं० ६६ ।

२. मिश्रबन्धु-विनोद (गंगा-ग्रन्थागार, लखनऊ, पंचम संस्करण, २०१३ वि०), पृ० ८८, क० सं० २५ ।

३. खो० वि० (ना० प्र० स०, काशी) १६०६-११, ग्र० सं० १३२ ।

४. प्रा० हि० लि० पो० का वि० (पहला खण्ड), दूसरा संस्करण, १६५८ ई० पृ० ड, क० सं० २१, ग्र० सं० ६७ ।

१८३७ वि० । इस विवरण में इनकें तीन ग्रन्थों के उल्लेख है । परिषद् (वि० रा० भा० प०, पटना) से प्रकाशित खोज-विवरण (प्रथम खण्ड, द्वितीय संस्करण, १९५८ ई०) में सत्तावन पाण्डुलिपियों के विवरण दिये गये हैं ।

११. नरहर-(१४९) परिषद् की खोज में नये मिले कवि हैं ।

१२. नंददास-(१२३, १३१) गोस्वामी तुलसीदास के अनुज (१; अष्टछाप के कवियों में प्रमुख; स्वामी विट्ठलदास के शिष्य; १६२४ वि० के लगभग वर्त्तमान । इनके रचे हुए पन्द्रह ग्रन्थ अबतक खोज में मिले हैं ।[२] नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) और परिषद् (वि० रा० भा० प०, पटना) के पिछले खोज-विवरणी में इनकी रचनाओं के उल्लेख हैं ।[३] इस विवरण में दो पाण्डुलिपियों के उल्लेख हैं ।

१३. परमानंददास(११२) शाहाबाद जिला (बिहार-राज्य) के कोरी ग्राम-वासी कवि; १८५५ वि०=१७९८ ई० के लगभग वर्तमान । परिषद् के पूर्वप्रकाशित खोज-विवरण में भी इनका ग्रन्थ उल्लिखित हो चुका है ।[४]

१४. प्रेमदास-(१०६) मुजफ्फरपुर (बिहार-राज्य) के हाजीपुर-निवासी; बड़ागाँव (गोरखपुर, उत्तरप्रदेश) में जन्म; नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज में तीन निम्नलिखित प्रेमदास मिले हैं :

(क) प्रेमदास-१८२७ वि० के लगभग वर्त्तमान; जाति के अग्रवाल वैश्य; अजयगढ़-निवासी; प्रेमसागर, नासकेत की कथा, पंचरंग, गेंदलीला और श्रीकृष्णलीला के रचयिता ।[५]

(ख) प्रेमदास-सं० १७९१ वि० के लगभग वर्त्तमान; हितहरिवंश के शिष्य; 'हितहरिवंश चौरासी' के टीकाकार ।[६]

(ग) प्रेमदास-स्वामी रामानुज के अनुयायी; प्रेम-परिचय विसातिनलीला, भगवतविहारलीला के रचयिता ।[७] जैमिनीपुराण के हिन्दी-अनुवादकर्त्ता; सम्भवतः प्रस्तुत ग्रन्थकार ।[८]

१५. बच्चू मल्लिक-(१२६) शाहाबाद जिला (बिहार-राज्य) के डुमराँव, राज्य के आश्रित; संगीतज्ञ और कवि; कविवर घनारंग के समकालीन और उनके भ्रातृज; १९वीं शती में वर्त्तमान ।

---

१. प्रा० ह० लि० पो० का वि०-प्रथम खंड (वि० रा० भा० प०, पटना), द०सरा संस्करण (१९५८ ई०)-पृ० सं० ण और त तथा पृ० सं० २२, ६६, ७७-११४) ।
२. प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण-पहला खण्ड (वि० रा० भा० प०, पटना से प्रकाशित, १९५८ ई० द०सरा संस्करण), पृ० सं० ठ, क० सं० १५ ।
३. उपरिवत् ।
४. प्रा० ह० पो० का विवरण-पहला खण्ड (बि० रा० भा० प०, पटना से १९५८ ई० में प्रकाशित, द०सरा संस्करण), पृ० सं० ठ, क० सं० १८, ग्रं० सं० ९२ ।
५. ना० प्र० स० का०, खो० वि० १९०६-८, ग्रं० सं० ९३ ए, बी, सी, डी ।
६. वही, ग्रं० सं० २०६ ए बी ।
७. ना० प्र० स० का०, खो० वि० १९०९-११ ई०, सं० २२९ ए, बी, सी ।
८. वही, १९२६-२८ ई०, ग्रं० सं० ३५६, पृ० सं० ७४ और ५२३ ।

१६. मनोहरलाल-(११७) परिषद् के शोध में मिले नये कवि; १७२४ वि० के लगभग वर्त्तमान, नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज-विवरणों में तीन मनोहरदास की चर्चा हुई है।[1] विशेष विवरण इस विवरण की ग्रन्थ-संख्या ११७ और पृ० सं० ३७ में दिया गया है, जो द्रष्टव्य है।

१७. मुकुन्ददास-(१४२) साहजादा सलीम (जहाँगीर) के आश्रित; १६७२ वि० के लगभग वर्तमान। मिश्रबंधु-विनोद (गंगा-ग्रन्थगार, लखनऊ, पंचम संस्करण, २०१३ वि०; पृ० सं० ३३५ क० सं० ३८२) और नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज-विवरण १६०६-११, ग्रं० सं० १८३ ए और बी; १६३५-३७, पृ० ३६, क० सं० ६५) में भी इनका उल्लेख हुआ है।

१८. मानप्रवत-१४८) नवोपलब्ध ग्रन्थकार; रचनाकाल अज्ञात; अन्य खोज विवरणिकाओं में अनुल्लिखित।

१६. रामसखे-(११६) जयपुर में जन्म; अयोध्या और चित्रकूट में साधु-जीवन-कालीन निवास; १८०४ वि० के लगभग वर्त्तमान; १३ ग्रन्थों के रचयिता। इनके ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ ना० प्र० स० का० को भी खोज में मिली हैं।[2] सम्भवतः ये मध्वाचार्य के वंशज थे।[3] इनकी दस रचनाएँ मिलती हैं। अन्य मत से ये अट्ठारहवीं शती के मध्य में हुए थे।[4]

२०. लक्ष्मीसखी-(१२२) सारन जिला (विहार-राज्य) के अमनौर-ग्राम-निवासी; सं० १६७० वि० में वर्त्तमान; सखी-मत के प्रवर्त्तक; सरभंग-संत ज्ञानीवावा के शिष्य और सखीमत के आचार्य कामतासखी के गुरु। छपरा-कचहरी और टेरुआ (सारन) में इनके प्रसिद्ध मठ हैं। प्रारम्भ में कवीरपंथी साधु। 'भोजपुरी'-प्रधान पाँच ग्रन्थ इन्होंने रचे हैं-अमरफरास, अमरसीठी, अमरराग, अमरकहानी और अमरविलास।

२१. ललितकिशोरी-(१२५) परिषद् के शोध में नवोपलब्ध; सं० १६२५ वि० में वर्त्तमान; वृंदावन में 'शाहजी का मन्दिर' के निर्माता।[5] नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज में वीसवीं शताब्दी में वर्त्तमान। लखनऊ-निवासी 'शाह कुन्दनलाल' उपनाम से ख्यात और भी एक इस नाम के ग्रन्थकार हो चुके हैं,[6] जो स्वामी हरिदास की शिष्य-परम्परा में हैं। सं० १७३३ वि० में इस नाम के वृन्दावन के एक महन्थ ग्रन्थकार हो चुके हैं।[7]

---

१. हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण (पहला भाग), सं० १६८० वि०, पृ० ११६।

२. ना० प्र० सं० का० खो० वि० १६०५, ग्रं० सं० ७८, ७६, ८०, ८१, ८२।
ना० प्र० सं० का० खो० वि० १६०६-८, ग्रं० सं० २१६ ए, बी, सी।
ना० प्र० सं० का० खो० वि० १६०६-११, ग्रं० सं० २५७ ए, वी।

३. ना० प्र० सं० का० खो० वि० १६१७-१६, ग्रं० सं० १५८ ए, बी, सी, डी, ई, एफ्।

४. ना० प्र० सं० का० खो० वि० १६२०-२२, ग्रं० सं० १५८, ए, बी।
ना० प्र० सं० का० खो० वि० १६२६-२८, ग्रं० सं० ३६५, ए, बी।

५. ना० प्र० सं० का० खो० वि० १६२६-३१, ग्रं० सं० १८८, खो० वि० १६३२-३४, ग्रं० सं० १३४।

६. ना० प्र० सं० का० खो० वि० १६०६-११ (परिशिष्ट १), ग्रं० सं० ३१।

७. ना० प्र० सं० का० खो० वि० १६२३-२५, ग्रं० सं० २४६, खो० वि० १६१२-१४, ग्रं० सं० १०३।

२२. **लल्लूलाल**-(१११) आगरा-निवासी; उपनाम-लालकवि; जाति के गुजराती ब्राह्मण; काजिम अली के समकालीन, सं० १८५६ वि० के लगभग वर्त्तमान; कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज में हिन्दी के अध्यापक; नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को इनकी पाँच रचनाएँ खोज में मिली है ।[१]

२३. **श्रवणदेव**-परिषद् के शोध में नये मिले हैं; उत्तरप्रदेशीय गोंडा जिला के बनकटवा स्टेशन के निकटस्थ नैनकटोली ग्राम में स्थिति अँजावलपुर आश्रम से इनका संस्थापक-सम्बन्ध रहा है । इनका रचनाकाल सम्भवतः सं० १८४६ वि० है । इसी विवरण के, १०१, १०१क, १०१ ख और १०२ संख्यक ग्रन्थों की टिप्पणियाँ विशेष द्रष्टव्य हैं ।

२४. **सत्यभोलास्वामी**-(१०१, १०१क, १०१ख) शोध में नवोपलब्ध कवि; गोंडा (उत्तर प्रदेश) के बनकटवा-निकटवर्त्ती नैनकटोली ग्राम-निवासी; अँजावलपुर-आश्रम के आचार्य; सम्भवतः उन्नीसवीं शती के अन्त में वर्त्तमान । इनकी तीन रचनाओं की पाण्डुलिपियाँ मिली हैं ।

२५. **सबलसिंह चौहान**-(१३४) इटावा के निकटस्थ किसी ग्राम के निवासी; सं० १७२७ वि० के लगभग वर्त्तमान; जाति के क्षत्रिय चौहान; दोहे-चौपाइयों में महाभारत के रूपान्तरकार । श्रीरामनरेश त्रिपाठी के मतानुसार इनका 'जन्म संवत् १७०० के लगभग और निधन संवत् १७६२ के लगभग अनुमान किया जाता है ।'[२] भीष्म-पर्व की रचना १७१८ वि० में और स्वर्गारोहण-पर्व की १७८१ वि० में । महाभारत के अतिरिक्त इनके लिखे हुए रूपविलासपिङ्गल, षट्ऋतु वरवै और भाषा ऋतूपसंहार भी कहे जाते हैं ।[३] सरोजकार के मत से इनका जन्म १६७० ई० = १७२७ वि० में हुआ था ।[४] ग्रियर्सन ने इन्हें चन्दागढ़ औ सवलगढ़ का राजा वताया है ।[५] किशोरीलाल गुप्त ने सवलसिंह का रचनाकाल १७१२ वि० से १७८१ वि० के बीच माना है तथा षट्ऑतु और भाषा ऋतुसंहार को एक ही ग्रन्थ कहा है ।[६] नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी खोज में इनकी रचनाएँ मिली हैं ।[७]

---

१. ना० प्र सं० का० खो० वि० १६०६-८ ग्रं० सं० १६२ ए, बी, खो० वि० १६०६-११, ग्रं०सं० १७२, १७४, १७४, बी; खो० वि० १६२६-२८, ग्रं० सं० २६६ ए, बी, सी, डी; खो० वि० १६२६-३१, ग्रं० सं० २१२ ए, बी, सी ।

२. कविता-कौमुदी; प्रथम भाग, नवनीत प्रकाशन, बम्बई, आठवां संस्करण, पृ० सं० ४३३ ।

३. उपरिवत् ।

४. शिवसिंह-सरोज, क० सं० ६१२, ६१३ ।

५-६. हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास ;द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान, डॉ० ग्रियर्सन-कृत, का सटिप्पण अनुवाद : किशोरीलाल गुप्त-पृ० सं० १८०, क० सं० २१० ।

७. ना० प्र० स० का० खो० वि० १६०४, ग्र० सं० ६६; खो० वि० १६०६-८, ग्र० सं० २२४ ए और वी; खो० वि० १६२३-२५ ग्रं० सं० ३६३; खो० वि० १६२६-२८, ग्र० सं० ४१२ और पृ० सं० ८१ ।

२६. **सूरजदास**-(११५) 'रामजन्म' के रचयिता; बिहार-निवासी कवि; इनकी चर्चा परिषद् से प्रकाशित अन्य खोज-विवरणों में हो चुकी है ।[१] नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी शोध में इनके हस्तलेख मिले हैं ।[२] रामजन्म के आठ हस्तलेख परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित हैं ।

२७. **सूरत**-(१३२) शोध में नवोपलब्ध, पंजाब-निवासी, कवि संतसिंह के पिता, सं० १८८१ वि० के पूर्व मुहम्मदशाह के राजत्व-काल में वर्तमान; जयपुर-नरेश जैसिंह सवाई के समकालीन । इनकी चर्चा गार्सा द तासी[३] और नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज-विवरणों[४] में भी हुई है ।

२८. **सूरदास**-(११३, १२४) प्रसिद्ध कवि; वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव भक्त और अष्टछाप के कवियों में प्रमुख; १५४० वि० और १६२० वि० के बीच वर्त्तमान; जाति के ब्राह्मण, व्रज-निवासी; यह हस्तलेख नागरी-प्रचारिणी सभा[५] (काशी) को भी खोज में मिला है। वि० रा० भा० प० (पटना) से प्रकाशित खोज-विवरणों[६] में इनकी चर्चा हो चुकी है। इस विवरण-ग्रन्थ में इनके ग्रन्थ की दो प्रतियों का उल्लेख है । इनके रचित निम्नलिखित ग्रन्थ अबतक खोज में प्राप्त हुए हैं :

क्रम-सं०	ग्रन्थ-नाम	प्रतियाँ	लिपिकाल	खो०बि०
१.	सूरसागर	२५	१७६२ वि०, १७६७ वि०, १७६८ वि०, १८१० वि०, १८२५ वि०, १८२७ वि०, १८५३ वि०, १८६६ वि०, १८७३ वि०, १८७६ वि०, १८६२ वि०, १६१३ वि०, १६२४ वि०, १७६३ ई०,	ना० प्र० स०, खो० वि० १६०१ ग्रं० सं० २३; १६०४ ग्रं० सं० १४२, १६०६-६ ग्रं० सं० २४४ सी, १६१७-१६ ग्रं० सं० १८६ बी, सी, डी, १६२६-२८ ग्रं०सं० ४७१, १६२६-३१, गं०सं० ३१६ ए, बी, १६३२-३४ ।

१. वि० रा० भा० प० से प्रकाशित प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण (पहला खण्ड), क० सं० २८, ग्रं० सं० १६ क और पृ० ण तथा १६; प्रा० ह० पो० का विवरण (दूसरा खण्ड), क० सं० ४१, ग्रं० सं० ४७ और पृ० ढ तथा ५३ ।

२. ना० प्र० स० का० खो० वि० १६२३-२५, ग्रं० सं० ४१७; खो० वि० १६२६-२८, ग्रं० सं० ४७३ बी ।

३. हिंदुई साहित्य का इतिहास (मूल पुस्तक, इस्त्वार द ल लितरेत्यूर ऐंदुई ऐं ऐंदुस्तानी, गार्सां द तासी, अनु० डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, पृ० सं० ३१८, क० सं० ३३७, प्रथम संस्करण, १६५३ ई० (हिन्दुस्तानी एकेडमी, उत्तरप्रदेश, इलाहाबाद) ।

४. ना० प्र० स० का० खो० वि० १६०४, ग्रं० सं० ७८, खो० वि० १६०६-११, ग्रं० सं० २८२ ।

५-६. ना०प्र०सं०का० खो०वि० १६०१, ग्रं०सं० २३; खो० वि० १६०४, ग्रं० सं० १४२; खो० वि० १६०६-१६०८, ग्रं०सं० २४४ सी; खो०वि० १६२६-२८, ग्रं०सं० ४७१ ।

क्रम-सं०	ग्रन्थ-नाम	प्रतियाँ	लिपिकाल	खो०वि०
				ग्र०सं० २१२ एच्, आई; १६२३-२५ ग्र०सं० ४१६ एफ, जी, एच, आई, जे; बि०रा०भा०प० (पटना), १खं०, ग्र०सं०४३; बि०रा०भा०प०(पटना), २खं०, ग्र० सं० ३६, ८० ।
२.	सूरसागर-सार	१		१६०६-११, ग्र०सं० ३१३
३.	दशमस्कंधटीका	८	१७४२ वि, १६१७ वि०,	१६०६-८, ग्र०सं० २४४ डी; १६१७-१६, ग्रं०सं०१८६ ए; १६२६-३-१, ग्र०सं० ३१६, १६३२-३४, ग्र०सं० २१२ सी
४.	नागलीला	१	१८७७ वि०	१६०६-८, ग्र०सं० २४४ ई
५.	पद-संग्रह	२	१६६७ वि०,	१६०२; ग्र०सं० २६२ १६०६-८, ग्र०सं० २४४ बी
६.	व्याहलो	१		६६०६-८, ग्र०सं० २४४ ए
७.	गवर्धननलीला वड़ी	१		१६१७-१६, ग्र०सं० १८६ ई
८.	प्रानप्यारी	१		१६१७-१६, ग्र०सं० १८६ एफ्
६.	भ्रमर-गीत	२	१८६६ वि०	१६२३-२५, ग्र०सं० ४१६ ए, बी
१०.	कबिरा	१		१६२३-२५, ग्र०सं० ४१६ सी
११.	सूरदास के विष्णुपद	१	१६०४ वि०	१६२३-२५, ग्र०सं० ४१६ डी
१२.	रुक्मिणी-विवाह	१		१६२३-२५, ग्र०सं० ४१६ ई
१३.	सुदामा-चरित	१		१६२३-२५, ग्र०सं० ४१६ ई
१४.	सूररतन	१	१८७४ वि०	१६२६-३१, ग्र०सं० ३१६ सी
१५.	राममाला	१		१६२६-३१, ग्र०सं० ३१६ डी
१६.	विसातनलीला	२	१८३१ वि०	१६२६-३१, ग्र०सं० ३१६ ई
१७.	वंसीलीला	१		१६३२-३४, ग्र०सं० २१२ आई
१८.	पद-संग्रह	५		१६३२-३४, ग्र०सं० २१२ ई, एफ, जी
१६.	बारहमासा	१		१६३२-३४, ग्र०सं० २१२ जी
२०.	बारहखड़ी	१		१६३२-३४, ग्र०सं० २१२ ए
२१.	द्रौपदी के भजन	१		१६३२-३४, ग्र०सं० २१२ डी
२२.	विनयपत्रिका	२		बि०रा०भा०प० (पटना), २ खं०, ग्र०सं० ६३, १०० ।

२६. **हरिवल्लभस्वामी**-(१०३) १७०१ वि० के लगभग वर्त्तमान, जाति के ब्राह्मण। इनका सविस्तर परिचय नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज-विवरण (१६२६-२८ ई०) में सविस्तार दिया गया है।[1] इनकी तीन रचनाएँ खोज में मिली हैं।[2]

३०. **हलधरदास**-(१४६) मुजफ्फरपुर (बिहार राज्य) जिला के निवासी; १६वीं शती के प्रारम्भ में वर्त्तमान। इनके हस्तलेखों में उद्धृत रचनाकाल-बोधक पद १८०० वि० भी इनका स्थितिकाल व्यक्त करता है, किन्तु वह सन्दिग्ध भी हो सकता है। यथा-'ब्रह्म सहस रस बेनि सत कुसुमाकर सुदि पंचदश' इससे एक हजार और रस-६, बेनि-२ = ८ सौ, अर्थात् १८०० संवत् हो जाता है। कवि के सम्बन्ध में अभी तक पर्याप्त अनुसंधान नहीं हुआ है। नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी वह हस्तलेख खोज में मिला है।[3] परिषद् से प्रकाशित विवरण-ग्रन्थ में इनकी चर्चा हो चुकी है।[4]

१. ना० प्र० स० का० खो वि० १६२६-२८, गं० सं० १७३, पृ० सं० ४४ और २६५, २६६।

२. ना० प्र० स० का० खो० वि० १६१७-१६, पृ० सं० १४; १६०१-संगीतभाषा और १६२३-२५-संगीतदर्पण।

३. ना० प्र० स० का० खो० वि० १६०६-८, ग्रं० सं० ५६, खो० वि० १६२६-२८, ग्रं० सं० १६३।

४. वि० रा० भा० प० (पटना), २ खं०, ग्रं० सं० २५

हस्तलिखित प्राचीन पोथियों का संग्रह-विवरण-पत्र'

१०१-राजनीति शत वचन -ग्रंथकार-श्रीसत्यभोला स्वामी । लिपिकार- × ।
अवस्था - प्राचीन, देशी कागज, पूर्ण । पृष्ठ-सं० ७४ ।
प्र० पृ० पं० लगभग-२४ । आकार-८" × ६" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

प्रारंभ- ''श्री गणेशाय नमः श्री गुरुभ्यो नमः श्री रंराज गुरुभ्यो नमः श्री हनुमंते नमः अथ रिखि नागर राजनेतिवानी लिख्यतेः श्लोकः ।।

* बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना की ओर से डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री के तत्त्वावधान में हस्तलिखित पोथियों का संग्रह और अनुसन्धान बिहार-भर में होता है । परिषद् में संगृहीत १०० (एक सौ) पोथियों के विवरण का प्रथम खंड 'साहित्य' के पिछले अंकों में प्रकाशित होता रहा है । अब, दूसरा खंड क्रमशः दिया जा रहा है ।

-सम्पादक

नेतिनेति विशुधारमुनिवरः रंगराजपदाम्युजं ।।
जगूदेवं प्रश्न वाक्यं शृणुतं गुर अम्बुजं ।। १ ।।
पराचीनं चरित विदितंः कथितं गुरमसनं ।।
जगूदेवं प्रसन आननः हर्षितं उर संजननंः ।। २।।
वेद आदिकं नाद वादिकंः नेति सस्त्रंजथोमतंः ।।
रिषीनागरप्रमविदितंः स्वाभीभोलाकथीजतंः ।। ३ ।।
सिख्यवाकं प्रसन्यश्रोनितः स्वामीभोला आनंदंः ।।
जगूदेवं धार ऊरंः सर्वशास्त्र अंवुदं ।। ४ ।।
मनुजकामवीना सहेत्वंः सज्जनं गुण हेतुनंः ।।
भाखितं ममराजनेतं श्रवनरिषिसंम्वादनं ।। ५ ।।

राजनेतवानीः जहां बहुततहथोरः थोरतहलागै ढेरी ।।
है नीच सो ऊचः उच है सोई नरचेरीः
कहै सत्यभोला पुकारिः गुण ओगुण सन्मूखो है
दूनौको साथ दुख हैत है सूखो ।। १ ।।
केवड़ा और गुलाब फुलों में यहै बड़ाईः
तेहिसंगकांटा ला गये तनीय है बुराईः
कहै सत्यभोला पुकारिः वरै दीपक की जोती
तासों कज्जल हुवा फरन को चाहिये मोतीः ।। २ ।।"

मध्य-पृ० ३७ "राज काज रोजगार विना मंत्री ना सोहे ।।
व्योहर व्याह दरवार विना भेदीना मोहै ।।
कहै सत्यभोला पुकारिवातषट दोसर सांचै ।।
दान धाम गुर करत नष्ट गुन दोसर यांचै ।। १६५ ।।

उत्तम केदली वृक्ष पुनीत फूलिकरि नीचेनवता ।।
छुतिहारें उन पाष फुले उपर जवता ।।
कहै सत्यभोला पुकारि गरीबीनवैस्तेऊ ऊचा ।।
नवें ना काठ कुठार जात है फूंका कूंचा ।। १६६ ।।"

अन्त- "रम्य रहो शतलोक शोक भय छुटत शरीरा ।।
होय निज अमर अडोल ।। वसो रंगराज मम तीरा ।।
कहै सत्य भोला पुकारि सुनो जगुदेव उहां वसिये ।।
भजन डोरि मनमोरि पुरि ब्रह्मांड नीजु कसियो ।। ४१३ ।।

राजनीति शतवचन पढ़ै सुनै गहो चित धरिया ।।
सोई होई जग चतुर सयाना जियतभव सागर तरिया ।।

कहै सत्य भोला पुकारि चारि शत चौदह वानी
जगुदेव सुनि नीति ग्रंथ रिषि सब गुणषानी ।। ४१४ ।।
इतिश्र शुभमस्तु
फाल्गुणे नौकृत मासे सप्तमे प्रथ्वी सुतः
लिख्यते राजनीतिश्च नित्यानन्दस्य शर्मणे ।।''

विषयः- सदाचारी जीवन, कर्तव्यनिष्ठा, परोपकार, सत्य-असत्य, पाप-पुण्य, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, धर्म-अधर्म आदि का उपदेशात्मक विवेचन । साधु-असाधु, विद्वान्, मूर्ख आदि की परिभाषा । देखिए-''मित्रता सम नही धन दया सम धर्म न आनो । क्षेमा सम नहि तापसः संतोष सम नहि सुष जानो।। कहै सत्य भोला पुकारि चूप सम आन न वक्ता ।। सूने सम नहि श्रोता आन गुन हृदय मे रक्खा ।। ६७ ।।'' प्रस्तुत पद में मित्रता, दया, क्षमा, संतोष, मौन, श्रवण आदि गुणों के हृदय में स्थान देने के लिए ग्रंथकार निर्देश कर रहे हैं । एक स्थान पर कवि वेश्या के सम्बन्ध में लिखते हैं-

''वेश्या पतिको मारि आपनो लज्जा षोई ।।
करै यार सों प्रीति आपनो मतलब गोई ।।
कहै सत्य भोला पुकारि घात जा दिन करि पावै ।।
त्यागि आपनो शर्म यार को प्रान गवावै ।। ७४ ।।
आपने बच्चा पाय विली कव चूहा वराई ।।
वैश्या लज्जा छाड़ि कव आन वचाई ।।
कहै सत्य भोला पुकारि वैश्या को सतसंगी ।।
यह तन सौ मलमुत्र गहै होय फिरियुग भँगी ।। ७५ ।।''

इसी प्रकार राजधर्म प्रजाधर्म और सचिवों के साथ राजा के बर्ताव आदि विषयों पर भी कवि ने रचना की है । शत्रु-मित्र के सम्बन्ध में कवि की उक्ति-''हंसि कै बौलै यार ताहि दुशुमन करि जानो । डपटि कहै समुझाय ताहित आपन मानो ।। कहै सत्यभोला पुकारि मित्र हिय राषै पीरा ।। दुशमन मनसो हाल उपर हंसि वोलै धीरा ।। १६२ ।।'' गृहस्थधर्म का भी उपदेश इस ग्रन्थ में दिया गया है ।

टिप्पणी- इस ग्रंथ के ग्रंथकार श्री सत्यभोलास्वामी उत्तरप्रदेशीय गोंडा जिले के, बनकटवा स्टेशन के निकटस्थ नैनक टोली ग्रामस्थ ऊँ जाववलपुर आश्रम के आचार्य हो चुके हैं। उक्त आश्रम में, इनके पूर्व ६ आचार्य और हो चुके हैं, जिनके नाम हैं-

श्रीरंगराजस्वामी, श्रीउपरनन्दजी, श्रीउपनन्दजी, श्रीप्रनन्दजी श्री असनन्दजी और श्री दशारामजी। श्री सत्यभोलास्वामी श्री दशारामजी के उत्ताराधिकारी थे। उक्त आश्रम में अनेक हस्तलिखित ग्रंथ और दुर्लभ पोथियाँ सुरक्षित हैं। लगभग २० ग्रंथ अभी तक अप्रकाशित हैं। 'श्रवण यंत्रावली' प्रकाशित है। 'ऋषिनागर' और 'चन्द्र सरोवर' नामक दो ग्रंथ महत्त्वपूर्ण बताये गये। पहला ग्रंथ २५४ पृष्ठों का (प्रारंभ गुरुखंड से ओर समाप्ति व्रतखंड में) और दूसरा १०२ पृष्ठों का है। पहली पोथी की पद्य-संख्या २१२४ दो हजार एक सौ चौबीस है।' 'ऋषि नागर' के कुछ पद-

''रग राज गुरु सुमिरि उर, रामचन्द्र हनुमान।
गणपति सज्जन मुनिगण, श्रवण हृदय गुणगान ।।
.... ।।×
प्रथमै राज जन्म छवि झूला। सुनत कथा मेटत सव सूला ।।
भीमवार मधुमास सुहाई। नौमी सित पुराण श्रुति गाई ।।
पुनर्वसू मैथुन सुभ लगना। मध्य दिवस कोटिन सुभ गनना ।।
चतुर्भुजी प्रभु रूप देखावा। मातु कौसिला अस्तुति लावा।
तेहि तत्काल वाल तनु लीन्हे। सुन्दर स्याम मूरति प्रभु कीन्हें ।।
रोदन करन लगे हरि तहँवाँ। मातु कौसिला वैठी जहँवाँ ।।
.... ।।
गुरु वशिष्ठ उपरोंहित आये। सगुण सोधि गुर नाम धराये ।।
रासि राम श्रीराम उचारा। तुला रासि करि नाम उदारा ।।''

'चन्द्र' सरोवर' (१८०७ पद्य) के भी कुछ पद देखिए-

श्रीरामानन्द साहित्यालंकार, सोनपुर (सारन) द्वारा प्रस्तुत विवरण के आधार पर।

-जे०

''संतदेव जगदेव सो, विनय करौं करजोरि ।
कृपा करो रंगराज गुरु, श्रवन देव निजतोर ।।''

इस ग्रंथ में ग्रंथकार ने उक्त आश्रम तथा अपने नाम का उल्लेख निम्नलिखित शब्दों में किया है-

''सुरसति कुटिला निकट वट, झंजावलपुर धाम ।
विम्वदेव यह लिखत कथा, सदा करत विश्राम ।।''

इस ग्रंथ में ग्रंथकार ने ग्रंथ-रचनाकाल का उल्लेख नहीं किया है । ग्रंथ की लिपि स्पष्ट और आधुनिक है । ग्रंथ विवेच्य और अनुसंधेय है । यह ग्रंथ सोनपुरवासी पं० श्रीरामानन्दजी साहित्यलंकार के सौजन्य से प्राप्त किया ।

१०१क-रंगराज पंजा- ग्रंथकार-श्रीसत्यभोला स्वामी । लिपिकार- × । अवस्था- प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज, पूर्ण । पृष्ठ-सं ३ । प्र० पृ० पं० लगभग-३२ । आकार-८" × ६" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

प्रारंभ- ''श्री रंगराजाय नमः अथ रंगराजी पंजा प्रारंभ ।।
श्री रामनामी वैष्णवा सर्वोपरि अविनाशी ।।
समनाम महाविश्नू अविनाशी ।।
आदि रंगराज गुरुमंत्री अन्याशी अविनाशी ।।
श्रवन्देव श्रीयुत् वीज अतीत पंथ अविनाशी मंत्र सीष
गुरुउपदेशिकं ।।
रंगराज मंत्र संपुट सुधार अविनाशी ।। १ ।।
ररंकारा अहरंकारा निर्गुण सारा हरिहर पारा
सर्गुण पारा अलष अधारा
अद्भुत सकारा मुदित मकारा सोई ओंकार मकारा ।।
सोई सकारा तत्व तकारा मुद्रा तत्व रंकारा ।।
श्रवन्देव जी महामंत्र मणि जपत जक्तभव पारा ।। २ ।।
गुर रोकर्ण पियाय जेहि दिन मंत्र सेवक जानि कै ।।
कर्ण सूत्र सुधारि अंतर अमित उररवि आनि कै ।।
षेडस अंगुल षेडस अनक्षर षेडस अंग सवारि कै ।।
क्षत्रछाह अकाश भूमर मुकुट माल विराज कै ।।
सहस्र पंक बरास आसन दृश्यते रंगराज के ।। ......''

मध्य-पृ० २-''अनंत जोती अनंत किरणी अनंत काशा भाशो ।।

अनंत रंका शक्ती अनंत रूप पंथ ।।
रंकार अनंत रंगराजधेनु ।। रामरंग अनंत शीर्षजिनू ।।''

अन्त- ''सुनह रे मनमूढ़ नर तुम गह्हु गुरु मत धाय के ।।
भली अवसर फेरि भटको काहे अटको आई कै ।।
गुरु मंत्र महेश राघो रटत पुर सुर जाय कै ।।
जासु जस रंगराज पंजा सुफल तन गुर पाय कै ।।
श्रवनदेव शतवार पढ़ि है मुक्ति अग्रपुर पाय कै ।। १।।
इति श्री रंगराजपंजा सम्पूर्णम् ।।''

विषय- इस मत के प्रथम और प्रधान आचार्य श्री रंगराजस्वामी की स्तुति और महिमा के वर्णन में रचना की गई है ।

टिप्पणी- इस लघुकाय पुस्तिका में कुल ११ पद हैं । इन पदों में श्री रंगराजस्वामी की वन्दना करते हुए कवि ने उनकी यशोगाथा गाई है और जीवन-चमत्कार का वर्णन किया है । ग्रंथ अप्रकाशित है । यह ग्रंथ सोनपुर (सारन)-निवासी पं० श्री रामानन्दजी साहित्यलंकार के सौजन्य से प्राप्त किया ।

१०१-ख- ज्ञानरत्न- ग्रंथकार-श्रीसत्यभोला स्वामी । लिपिकार - × । अवस्था-प्राचीन, देशी कागज, पूर्ण । पृ०-सं०-७८ । प्र० पृ० पं० लगभग-२४ । आकार-८" × ६" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-माघ, कृष्ण, प्रतिपदा, सोमवार, सं० १६३६ वि० (१८८२ ई०)

प्रारम्भ- ''श्री गणेशाम्बिकाभ्यानमः श्री सरस्वतैनमः श्री रामचन्द्रायनमः श्री रंगराजगुरुभ्योनमः श्री हनुमते नमः ।। अथ ज्ञानरत्न नाम ग्रंथ ऋषिनागरमते प्रारंभ ।। सवैया ।। प्रथम ।। गुरवाच ।।
श्री गुरगणपति ज्ञान निधानो आदि शक्ति जग माता है ।।
सरस्वती लक्षिमी संती सुष ब्रह्म विष्णु शिवदाता है ।।
वरुण कुवेर शशि सुरेशेषा धर्म ऋषी मुनि लंवता है ।।
स्वामी भोला ध्वनि साहेब डोमा गुर संतदेव गति गवता है ।। १।।

सुमिरो निशु दिन गुरुपद अंतर जो गुरु ज्ञान लषाई है ।।
आठो पहर शीशधरि चरणन नाम रटनि धुनि लाई है ।।
धनि गुर दीन दयाल दया करि निजु मोहि दास बनाई है ।।
स्वामी भोला धनि साहेब डोमा रूप संत देव दरशाई है ।। २ ।।

धनि सत गुर सामरथदाता रामनाम पद दीन्हा है ।।
निजुजन जातिन रूप देषलाई दास आपनो कीन्हा है ।।
देषि रूप गुर भयों मगन मन सुरति रस लीन्हा है ।।
स्वामि भोला धन साहेब डोमा पद संत देव मन चीन्हा है ।।३।।

मध्य-पृ० ३८- "एक शब्द एक सार शब्द निजु नाम नाम मे भेदा है ।।
सत गुर भेद जक्त सों न्यारा जासे प्रगट जग वेदा है ।।
संतदेव है सार शब्द गुर जासे शब्द उमेंदा है ।। १८० ।।

सात शब्द से शब्द प्रगट वहु सार शब्द गुर संता है ।।
कथा पुराण ग्रंथ नहु बानी निगमागम्य कहंता है ।।
आपी होय निरंतर उठे सती शब्द तरंगा है ।।
संत देव सो नाम निअक्षर जाके रूप न रंगा है ।। १८१ ।।

अन्त- "राम नाम एक नाम अनूपा गुरु सुमिरन जग न्यारा है ।।
रामायण शत कोटि में शंकर नाम रकार निकारा है ।।
सोई नाम प्रगट अंतर गुर उठत सदा रंगरारा है ।।
स्वामि भोलाधनि साहेब डोमा मिली संतदास गहिप्यारा है ।। ३६१ ।।

तीनि सो साठि बार एक सम्बत प्रगटवानी गुरनीता है ।।
बार बार वानी पहुंचानी गुर समिरण मन प्रीता है ।।
समय समय गुर रूप नाम गुण देषत कहत दिन बीता है ।।
स्वामि भोला धनि साहेब डोमा संग संतदेव गुरहीता है ।। ३६२ ।।
इतिश्री सवैया सम्पूर्ण ।।"

विषय- संत-साधना का साहित्य । नाद, बिन्दु, इडा, पिंगला, सुषुम्ना, चक्र, अनाहतनाद, ध्यान, शब्द, नाम, रूप, दुःख, सुख आदि का विवेचन और व्याख्या । निर्गुण विचारधारा का प्रतिपादन । कबीर-दर्शन से प्रभावित । देखिए-

"रामरूप देषी उर अंतर आपि में उलटि समानी है ।।
आपन रूप पाय आपुहि माँ आपु आपु निर्वानी है ।।
.... ।। ८६ ।।
आपन रूप आपमै देषै जब गुर ध्यान लगाया है ।।"

यह कबीर के 'उलटि समाना आपमै प्रगटे ज्योति अनन्त' का छायानुवाद-सा प्रतीत होता है । और देखिए-'आपन पिया हिया में पाये ।' मनुष्य साधना में रत रहने के बाद जब सिद्ध हो जाता है, अमरपुर में वास करता है-

"होय अमर अमरपुर जावै अमर रूप पिये पावै जी ।।
जरा मरण छूटै दुष संकट गर्भवास नहि आवै जी ।।'

अधोलिखित पदों में योग-सम्बन्धी चर्चा देखिए-

"नाभि कमल निज है अष्टदल रूप बारह नीलरंगा है ।।
विश्नु लक्षिमी संग सदा निजवास दोऊ एक संगा है ।।
शंख चक्र गद पद्म विराजै वाहन गरुड़ निजु अंगा है ।।
ताहां छौ हजार एक नामा संत देव जपि चंगा है ।। १०२ ।।
हृदय कमल अनहद देषु मन बारह दल रूप श्वेता है ।।
सीवशती वसत है तहपर नंदी वाहन वृषकेता है ।"

इस प्रकार लोक, परलोक, भजन, नाम-महिमा आदि की विस्तृत चर्चा इस ग्रंथ में है ।

टिप्पणी-इस ग्रंथ के ग्रंथकार श्रीसत्यभोला स्वामी प्रतीत होते हैं, किन्तु ग्रंथ में (पदों में) यत्र-तत्र ग्रन्थकार के उत्तरवर्ती आचार्यों का भी नामोल्लेख है । उक्त आश्रम में श्रीसत्यभोला स्वामी का स्थान सातवाँ हैं, किन्तु इनके बाद श्रीधनीदेव जी, श्रीसन्तदेवजी, श्रीडोमा प्रसाद जी की चर्चा प्रायः सभी पदों के अन्त में (स्वामि भोला धनि साहेब डोमा संग संतदेव गुर हीता है ।') आया है । यह भी संभव है कि उपर्युक्त महात्मागण इनके समकालीन हों ।

ग्रंथ में यद्यपि रचनाकाल का संकेत नही है तथापि 'तीनि सो साठि वार एक सम्वत प्रगट वानी गुरनीता है ।' में संवत् के सम्बन्ध में कुछ अस्पष्ट संकेत है । सम्पूर्ण ग्रंथ में ३६२ पद हैं । ग्रंथ की पुष्पिका में लिपिकार ने लिखा है-

"ज्ञान रतन ग्रंथ यह पढ़े प्रीति करि कोइ, जागे ज्ञान वुधि भक्ति मन जीवन मुक्ति फल होइ तीनि सौ वास ठिवाचन गुरज्ञानरत्न है नाम, पढै गुणै सो साधुजन सुनी समुझै पावै सुषधाम ।। २ ।।
पढ़ै लिषै समुझै बुझै होय साधु सो संत, ज्ञान दृष्टि जागै उर दीख परै आदि अन्त ।।
इतिश्री ऋषि नागर मते ज्ञान रत्न श्री संतदेवजी कृत्ये समाप्तम् शुभमस्तु ।।
सम्वत १६३६ माघ मासे कृष्णपक्षे प्रतिपादाया चंद्रवासरे ।। ज्ञानरत्नभीदं लिख्येत श्रवन्देवस्य हेतवे ।।"

ग्रंथ की लिपि स्पष्ट और प्राचीन है । अवश्य, इस ग्रंथ और ग्रंथकार तथा आश्रमस्थ अन्य ग्रंथों के अध्ययन-उद्धार से हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि होगी । यह ग्रंथ सोनपुर (सारन)-निवासी पं० श्रीरामानन्द शास्त्री, साहित्यालंकार के सौजन्य से प्राप्त किया ।

१०२-श्रवण-यन्त्रावली-लंगूर, बाणस्तोत्रम्-ग्रंथकार-श्रीश्रवणदेव । अवस्था- अच्छी, पूर्ण । पृष्ठ सं० ८५ । प्र० पृ० पं० लगभग-४८ । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । आकार-६" × ६" । रचनाकाल-कार्त्तिक, शुक्ल, पूर्णिमा, सोमवार, सन् ११६६, सं० १८४६ वि०, १७८१ ई० ।

प्रारम्भ- "अथ लंगूर बाण ऋषि नागर प्रारंभ; श्रवण उवाच ।। दोहा ।।

ग्रामदेव गुरुदेव निज रामदेव महदेव,
महाबीर रणधीर सब श्रवण देव करुसेव १
लषण भरत रिपु सूदन लवकुश पुहकल बंधु ।।
कवि कोविद हरि राममय कृपाकरौ सब संधु २
धन्य मातु जग अंजनी जानकि राधे मातु ।।
महाकालि महालक्ष्मी सरस्वति बुधि दातु ३
सर्वदेव सवतीर्थ मुनि सर्व रुद्र कपिनाथ ।।
मर्कट वानर भालु यथा करु निज श्रवण सनाथ ४
दिगबंधन करि कहत हौ शीशनाइ करजोर ।।
श्रवणदेव को वचन सुनि, वाक्य सिद्धि करुगोर ।। ५ ।।

सवैया ।। राम के दूत महा अवधूतहि अंजवि पूत महाकवि छैया ।
लोम लंगूर महाछवि सुन्दर, कानन कुण्डल कीट धरैया ।।
हाथ गदा बजरङ्ग लियो कपि, शत्रुन केतु ममान मथैया ।।
मूँज जनेउ दिये वीर श्रवणहि, वेगिहरो दुखराम दोहैया १''

मध्य-पृ० १४-''नाम फाल्गुन सखा पिगहि सीता शोक निवारनं ।
लक्षण रक्षक दशकंठ भक्षक श्री रामदूत गदारनं ११६
महावीर्य्य प्रथमवीरं नागकाय ब्रह्मण्डनं ।।
चरित रचित लंगूरवाणं हनुमते खलखंडनं ११७
भूतप्रेत पिशाच राक्षस ब्रह्मराक्षस वाहनं ।।
डाकिनी शाकिनी अंतरिक्षं श्रवणवैरी गाहनं ११८''

अन्त- ''रामभक्ति वरदान लीजे श्रवणदेव ममदासनं ।।
प्रेम गदगद पवन नंदन रूप मंगल रासनं ३०८
एताधिकहि हनुमंतवीरं जात द्रोणाचल गिरं ।।
श्रवण वन्दि पदारविंदं ढुरत नयनन नीरधीरं ३०६
रंगरंग बजरंग वीर वीर धीरं वीर वरं ।।
जगूदेव श्रवणदेवं रंगराज उर भरं ३१०
पंचमावृत्समाप्तम् ।।''

दो० ''मंगलचरित पुनीत कहि मंगलमोदक नाम ।
बाण लंगूरहि श्रवण कथा सज्जन करो प्रनाम ।।
अर्थ धर्म पद मुक्ति कहा पूर होत मन काम ।
बाण लंगूर जो पठत नर श्रवण मिले कपिराम
सन ग्यारह सौ छानवे कार्तिक मास उजेर ।
तिथि पूरण भोमवार को लिखी बोमदेव केर ।।
इति श्री सम्पूर्ण करि कुटिल वाट के तीर ।
अंजावलपुर धाम मंह मेटि सकल मनपीर ।।
इति श्री श्रवणदेव विरचितं लंगूर वाणस्तोत्रम् समाप्तम्
शुभमस्तु ।।''

विषय- पाँच आवृत्तों (अध्यायों) में सम्पूर्ण ग्रन्थ । हनुमान्-सम्बन्धी स्तोत्र, विनय तथा तन्त्रात्मक पद्य । बीच-बीच में अपने मत के आचार्यों की भी वन्दना की गई है । पूरे ग्रन्थ में ३१० पद्य हैं ।

टिप्पणी- इस ग्रन्थ में, एक ही जिल्द में (८५ पृष्ठों में) श्रीश्रवणदेव जी-रचित १४ (चौदह)-१ लंगूर-बाण पुरश्चरणविधि, २-लंगूरबाण स्तोत्रम्, ३-रंगराज सहस्र नाम स्तोत्रम्, ४-रंगराजगुरु समुदाय, ५- रंगराज कवच, ६-रंगराज पटल, ७-श्रवणतन्त्रावली, ८-रंगराजाष्टक, ९-धनी अष्टक, १०-कुटिलाष्टक, ११-हनुमान पञ्जा, १२-सोनभद्राष्टक, १३-सांगीत शब्द धनाक्षरी, १४-हनुमान भुजा-ग्रन्थ हैं । इनमें विशेषतः हनुमान् और साधारणतः अपने आश्रम के आचार्यों की वन्दना की गई है। ग्रन्थ मुद्रित, किन्तु अलभ्य है । भाषा, साहित्य और निर्गुण विचारधारा के दृष्टिकोण से ग्रन्थ अनुसन्धेय है । यह ग्रन्थ सोनपुर (सारन)-निवासी पं० श्री रामानन्द शास्त्री, साहित्यालंकार के सौजन्य से प्राप्त किया ।

१०३-श्रीमद्भगवद्गीता-(हिन्दी-पद्यानुवाद) ग्रन्थकार-श्रीहरिवल्लभ स्वामी । लिपिकार- श्रीरामसहाय दूबे । अवस्था-अच्छी, प्राचीन, देशी कागज । पृष्ठ सं०-३२ । प्र० पृ० पं० लगभग-४० । आकार-७½" × ११" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल- × । लिपिकाल-सं० १९०१, शाके-१७६६ (१८४४ ई०) श्रावण, शुक्ला द्वादशी ।

प्रारम्भ- "श्री गणेशायनमः । अथ पोथी भगवद्गीता । दोहा
कृष्ण कृष्ण श्री कृष्ण जू प्रथम करौं उच्चार ।
सुफल करन को कामना कामधेनु निर्धार । १ ।
भगवद्गीता अर्थ सम है दोहा के मांह ।
हरिवल्लभ स्वामी सभी भाषा कीन्हो ताह । २ ।

धृतराष्ट्रौवाच ।। धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र से मिले युद्ध के काज ।
संज्जय मो सुत पांडु सुत करत कहां कहु आज । ३ ।

संजय उवाच ।। पांडव सयना व्यूह लखी दुर्योधन ढिग आय ।
आचारज भल द्रोन सों बोल्यों ऐसो भाय ।। ४ ।।
पांडव सैना अति बड़ी आचारज तूं देष ।
धृष्ट दुमन तव सिष्यने व्यूह जो रच्यो विसेष ।। ५ ।।"

मध्य-पृष्ठ २०- "मुकुट विराजत सीस पर संषचक्र तब हाथ
येहि विधि मोहि देषाइये प्रभुजी हो जगनाथ ४६
चारि भुजा धरि प्रगट है मो कों दरसन देह
.....ती जो अनंत है मोकों यासो नेह ४७

श्रीभगवानुवाच- तेहि देषावों रूप मै अति प्रसन्न मन होइ
आदि अंत सो तेजमय देषि सकै नहि कोय ४८
वेद जज्ञ अरु तप कृपा अवर करत बहु दान
अैसे मेरे रूप कों तो विनु लषे न आन ४९"

अन्त- अद्भुत रूप श्री कृष्ण को सुमिरि सुमिरिहों ताहि
हर्ष होत मोंकों बहुत विस्मय को नर ताहि ६१
जोगेश्वर श्री कृष्णजू अर्जुन है जागवर
तहा विजय अरु नीति है असम्पदा अवर ८०
इह गीता अद्भुत रतन श्रीमुष कियो वषान
वारवार निर्धार किय परम भक्ति को ग्यान ८१
भक्तिवस्य श्रीकृष्णजू इहै कियो निर्धर
करै भक्ति इक्ष्या सुनै इहै वेदको सार ८२

इति श्रीमद्भगवद्गीतासुपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सम्बादे ....अष्टादशोऽध्यायः १८"

विषय- प्रसिद्ध गीत का हिन्दी-पद्यानुवाद । १८ अध्यायों में दार्शनिक विवेचन। संस्कृत गीता का संक्षिप्तीकरण ।

टिप्पणी-इस ग्रन्थ में ग्रन्थकार ने सरल और सहज भाषा में प्रसिद्ध श्रीमद्भगवाद्गीता का हिन्दी-पद्यानुवाद (भावानुवाद) किया है । प्रचलित संस्कृत-ग्रन्थ के कई श्लोकों के भाव एक ही पद में दिये गये हैं । अतः ग्रन्थ कुछ संक्षिप्त हो गया है । जहाँ तक हो सका है, ग्रन्थकार ने गीता के दार्शनिक और आध्यात्मिक पक्ष को अपने अनुवाद की भाषा में सरल और बोधगम्य बनाने का यत्न किया है। रचना में दृढ़ता और सर्वांगीणता के निर्वाह की कोशिश की गई है। देखिए-
"फिरि आवत भूलोक में छिन पुन्य जब होई ।
आवागमनते करत है कामवंत जो लोइ ।। २१ ।।
भक्ति करत जे अनन्द है मोही में चित राषि ।
जोग क्षम तिनके करो निज जनको अभिलाषि ।। २२ ।।"

इन पद्यों में संस्कृत के अनुदन का पूर्ण निर्वाह किया है ।
ग्रंथ की भाषा पर 'अवधी' और 'भोजपुरी' का प्रभाव है ।

इन पदों में-''प्राकृत कवन अरु पुरुष को क्षेत्रज्ञ कहाजु,
या जानन की लालसा ज्ञान कि पुनि पुन काज १

श्री भगवानुवाच । छेत्र कहत या देहसों अर्जुन ज्ञानी लोइ,
जानत है या देहकों सो छेत्रज्ञ जो होइ २
सो मम रूप जो आतमा वसत सवनिके देह
ये ही ज्ञान जो जानियो मेरे मत सुनु येह ।।''

१- प्रयुक्त 'भाषा' देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि 'व्रज' और 'कथा' भाषा से भी रचना प्रभावित है । और भी देखिए-
'रिषिन कहो वहुभाँति जो और वेदहु भाषि'

२- ग्रन्थकार ने यद्यपि ग्रन्थ में अपने विषय तथा रचनाकाल के सम्बन्ध में कोई संकेत नहीं किया है, तथापि प्रारम्भ का ''भगवद्गीता अर्थसभ है दोहा के माँह ।
हरिवल्लभ स्वामी सभी भाषा कीन्हो ताह ।''
पद्य ग्रन्थकार श्रीहरिवल्लभ स्वामी के नाम का संकेत कर रहा है।

३- लिपिकार ने अपने परिचय के विषय में ग्रन्थ की पुष्पिका में-
''भगवद्गीता जो पठै अवर सुने मन लाय ।
पावे भक्ति अषंड सो ता को कृष्ण सहाय १,
गीता दिन-प्रति उच्चरे सदा रक्ष जग माह ।
मनसा वाचा कर्मना या सम कोउ नाहि २
जो को उचा है भक्ति को कृष्ण कमल दृग पास ।
अवर सकल श्रम छाड़ि कै करु गीता अभ्यास ३
जब लगि सप्ति भानु की ताप तपत सव देस ।
दृष्ट परे जब लगी नही हरि गीता परवेस ४

इति श्री भगवद्गीता सम्पूर्णम् मासोत्तमे मासे श्रावण शुक्ल द्वादस्यां भृगुवासरे तद्दिने लिषितं पुस्तकं रामसहाय दुवे साकीन अषतियार प्रगने आरे पथनार्थ सीतल प्रसाद साकीन अंषतिआरपुर प्रगने और सम्वत १६०१ साके १७६६ श्रीकृष्ण ।''-इस प्रकार लिखा है ।

४- ग्रन्थ की लिपि स्पष्ट, किन्तु प्राचीन है । ग्रन्थ अनुसंधेय है ।

यह पोथी कलकत्ता प्रवासी पं० श्रीअयोध्याप्रसाद, वैदिक मिशनरी से प्राप्त हुई।

१०४-रामचरितमानस (सटीक)-ग्रन्थकार-गो० तुलसीदास । लिपिकार-×। टीकाकार-श्रीशुकदेव। अवस्था-देशी मोटा कागज पर लीथो-मुद्रण खंडित। पृष्ठ-सं०-८६०। प्र० पृ० पं० लगभग-२८। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। रचनाकाल- × ।
टीकाकाल-× ।

प्रारम्भ- "दो० गिरा अर्थ जल वीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न ।
वन्दौं सीता राम का पद जिनहि परम प्रिय खिन्न १७

कपि पति सुग्रीव ऋक्षराज जामवन्त निशाचर राज लंकेश विभीषण और अंगदादिक जो समस्त वानरों का समाज १ सब के सुन्दर चरण कमलों का मैं वन्दना करता हूँ जिन्होंने अधम शरीर ही में राम पाये २ अव जितने श्री रामचरण उपासक इस संसार में हुए हैं खग जटायु इत्यादि मृग गजेन्द्रादि सुर ब्रह्मादि असुर प्रहलादादि नर अम्बरीप इत्यादि तो निष्काम भगवद्दास हैं तिन सब के चरण कमलों को मैं अभिवन्दन करता हूं । ३।४ या प्रकार समस्त श्री राम परिकर को नमस्कारादि करिके जगज्जननी जनकात्मजा श्री जानकी की चरण कमलों को मानता हूँ जो अत्यन्त प्यारी करुणानिधान श्री रामचन्द्र की हैं और जा की कृपा से निर्मल वुद्धि पाऊंगा ५।६ ता पीछे मन वचन कर्म करिके रघुनायक श्री रामचन्द्रजी के चरण कमलों को अभिवन्दन करता हूँ जो समस्त कल्यान गुणों के अमृतोदधि हैं ७ जैसे गिरा कहें शव्द और शव्द का अर्थ और जल और जल की वीचि कहें तरंग ये कहने मात्र ही भिन्न हैं वस्तुतः एक ही हैं ऐसे ही श्री सीताराम को एकमति कर उनके चरणों को अभिवन्दन करता हूं जिनको खिन्न कहें अत्यन्त आरत जीव परम प्यारे हैं अर्थात् जव यह जीवन कर्म्मोत्पन्नज्ञानरूप समस्त उपाय करिके खेद खिन्न होकर उपाय शून्य हो जाता है और.........होकर भगवद् प्रपत्ति अंगीकार करता है तव भगवत् का परम प्रिय होता है ।"

मध्य- "दो० ग्रह ग्रहीत पुनि वात वश तेहि पुनि वीछी मार ।
ताहि पियाइय वारुणी कहहु कवन उपचार ४ ।।

जिसको नवग्रह ने तौ घेरि ही लिया है और सन्निपातत्रिदोष के वश है और ऊपर से वीछी ने मारा उसको वारुणी मदिरा और पियाई जावे तो कौन सा उपाय है । ।। ४ ।।"

अन्त- "विनु संतोष कि काम नशाहीं ।
काम अछत सुख सपनेहुँ नाहीं १
राम भजन विनु मिटहि कि कामा।
थल विहीन तरु कवहूं कि जामा २
विनु विज्ञान कि समता आवै ।
कोउ अवकाश कि नभ विनु पावै ३

श्रद्धा विना धर्म नहिं होई ।
विनु महि गन्ध कि पावै कोई ४
विनु तप तेज कि कर विस्तारा
जल विनु रस कि होइ संसारा ५
शील कि मिल विनु बुध सेवकाई ।
जिमि विनु रूप न तेज गुसाईं ६
निज सुख विनु मन होइ कि थीरा ।
परस कि होइ विहीन समीरा ७
कवनिहूं सिद्धि कि विनु विश्वासा ।
विनु हरि भजन न भव भयनासा ८

दो० विनु विश्वास भक्ति नहि तिहि विनु द्रवहि न राम ।
राम कृपा विनु सनेहूं जीव कि लह विश्राम ।। ३८''

विषय- रामचरित ।

टिप्पणी- यह प्रसिद्ध रामचरितमानस की विस्तृत टीका है । भाषा व्रजभाषा और शैली प्राचीन है । ग्रन्थ प्रारम्भ में खण्डित है । प्रारम्भ के २४ पृष्ट नहीं है । अन्त के पृष्ठ भी खण्डित हैं ।

यह ग्रन्थ श्रीअंजनिकुमार सिन्हा, बिहार-विश्वविद्यालय, पटना के सौजन्य से प्राप्त किया ।

१०५-रामजन्म-ग्रन्थकार-संत सूरदास । लिपिकार - × । अवस्था-प्राचीन हाथ का बना देशी कागज खंडित । पृ० सं०- २४ । प्र० पृ० पं० लगभग-१५ । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल- × । लिपिकाल × ।

प्रारम्भ- ''व्याहीनी त्रीजा तीनी सौ रानी ।
तेही मों तीनी पाट की रानी ।।
केकइ कोसीला सुमींत्रा जानी ।।
रूप रासी पुर्नी केकइ कैसी
सीव के संग सती रह जइसी ।।
राज करत वहुत दीन गऐउ ।।
आनन्द मंगल वहु वीधी भऐउ ।।
ऐक दीन राउ अहेरही जाइ ।।
तहवां राजा परे भुलाइ ।।''

मध्य- "साठी सहंस्र सुत जो अहइ ।
ताके करव जन सभ रहइ ।
मांटी खोदी के नीर नीकारा ।
लवन समुद्र तीन्ह नाम संवारा ।।
खोदत महं हस्ती ऐक पावा ।
ताही देखी तव वचन सुनावा ।।
जग्य तुरीआ तुम देखा भाइ ।
सो तुम मो कहं देख बताइ ।।"

अन्त- "जग्य तुरंग हमही जे पाइ ।
गरुड़ वचन माना तव राइ ।।
वाजी समेत कुंवर पुन आऐ ।
देखी लोग आनन्द मन भाऐ ।।
हरख सोक तांहां दोनो भऐउ ।
तुरीआ मीलत सब संसै गऐउ ।।"

विषय-राम का जन्म, शिक्षा, विश्वामित्र की यज्ञ-रक्षा, विवाह और परशुराम-पराजय; प्रसंगतः श्रवणचरित और गंगावतरण का वर्णन ।

टिप्पणी- क- ग्रन्थ खण्डित है ।

ख- इस ग्रन्थ की अन्यास ४ प्रतियाँ भी परिषद्-संग्रहालय में हैं । उनमें से एक का विवरण परिषद् द्वारा प्रकाशित 'हस्तलिखित विवरण' के प्रथम खण्ड की पृ० सं० ४५ में देखिए । नागरी-प्रचारिणी सभा की खोज-विवरणिका (सन् १६२६-२८ ई०) में, ग्रन्थ सं० ४७३ बी में भी इस ग्रन्थ का उल्लेख है । उक्त विवरणिका में 'एकादशी माहात्म्य' नामक एक और ग्रन्थ (संत सूरजदास-लिखित) मिलने की सूचना है । एक और ग्रन्थ की सूचना की खोज-विवरणिका (सन् १६२३-२५ ई०) में, ग्रन्थ-सं० १४७ सी में मिलती है ।

ग- ग्रन्थ की लिपि लीथो-मुद्रण है । खंडित होने के कारण लिपिकार के नाम, स्थान आदि के संकेत का अभाव है । अन्य प्रतियों से पाठान्तर भी है ।

घ- यह ग्रन्थ श्री अंजनिकुमार सिन्हा, बिहार-विश्वविद्यालय, पटना के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

१०६-हिन्दी-महाभारत-ग्रन्थकार-प्रेमदास । लिपिकार-द्वारिकानाथ मिश्र । अवस्था-प्राचीन; हाथ का बना देशी कागज, जीर्ण-शीर्ण; खण्डित । पृष्ठ सं०-३३४ । प्र० पृ० पं० लगभग-३६ । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन द्वितीया, सं० १६११ वि०, शाके-१७७६, सन् १२६१ साल ।

प्रारम्भ- ''पुनी ग्योलीनी आई सभ षाई
सुना आऐ जो वाल कन्हाई
जैसे...........से सभी चलीन्हा
ऐकक संग ऐक नही मीलीन्हा
ऐक मही ललीपती सुषी पाई
गोवर हाथ भरे उठी धाई
....
तब गै भेटहु त्रीभुअन नाथा
तब ते तासो उतर दीन्हा
उजर मैल तुम्है नहीं चीन्हा''

मध्य (पृ० १६५)- ''जजुविद श्याम अथरव करता
नमो नमश्ते पातष हरता
कथा कवीत गीती तु अकरवा
बश्वरूप शभै दुष हरता
जौ शंसार वांछा कीछु होई
सभ करता प्रनवौ सोई
वीश्नु नाम प्रुषतोह आही
नमो नमश्ते प्रनवौ ताही
हंश रूप मनी कुंडल काना
नमो नमश्ते प्रनवौ भाना''

अन्त- ''कलिजुगकै भाषौ वेवहारा
सुनहु चीत दै धर्म्म भुआरा
ब्रह्मन सता वेदन रहीहही
नर आधार.....ढ़ दीज कहीहही
धर्म्महीन रोजादीज छीजीहही
थोरो थोरो जो दान करेवे

दीहलहो...........पुन्य कपावें
अस्मेध्य सौ नौ वरष भऐउ
हर्स्थीनापुर बास दुधीष्टील कीए
त्रीपजन्मै स्रोताभौजैमुनी कहमनलऐ
अस्मेध्व कहै भारत चौदह वर्षसीनाऐ

इति श्री अस्मेध्व जग्य महाभारथे जैमुनी संस्कृत भाषा प्रेम दास क्रीत जैमसनी पुराने राजा दुधीष्टीलजग्य करण संपुर्न समाप्तेह भयै पैशर्ठमोअमोध्या ।। ६५ ।। सुभमस्तु ।।''

विषय- महाभारत के अन्त में पाण्डवों के अश्वमेध यज्ञ और यज्ञ के घोड़े के छोड़े जाने तथा उसके देश-देशान्तर में विजय के लिए घूमने की कथा का वर्णन । श्री जनमेजय जैमिनी ऋषि से पूछते हैं और ऋषिवर कथा का सविस्तर वर्णन करते हैं । बीच-बीच में सृष्टि, मृत्यु, पाप, पुण्य और कलियुग में मनुष्य और देवता की स्थिति का विशद वर्णन किया गया है ।

टिप्पणी-(क) निम्नलिखित रूप से ६५ (पैंसठ) अध्यायों में कथावस्तु का निर्वाह हुआ है :

१- अनुशैलातुर आहरनो नाम, १२ (बारहमो) अध्यायः-पृष्ठ सं० ५० तक । (इसके पूर्व ११ अध्याय खण्डित हैं ।)

२- श्री कृष्ण समुझावनो नाम १३ (तिरहमो) अध्याय :- पृ० सं० ५१ से ५५ तक ।

३- महिषामनि नगर तुरग प्रवेशोनाम १४ (चौदहमो) अध्यायः-पृ० सं० ५५ से ६१ तक ।

४- नीलध्वज विजय (को जीतनो) नाम १५ (पंद्रहमो) अध्यायः-पृ० सं० ६१ से ७० तक । (बीच में १६वाँ अध्याय नहीं है । पृष्ठक्रम आदि ठीक हैं, किन्तु उक्त अध्याय, प्रतीत होता है, अंतर्लिखित है।)

५- सुधन्वा (कराहमेलनो) नाम १७ (सतरहमो) अध्यायः, पृ० सं० ७७ से ८५ तक ।

६- सुधन्वा युद्धवर्णन नाम १९ (उनैइशमो) अध्यायः-पृ० सं० ८६ से ९७ तक। (बीच में कई पृष्ठ और बीसवें अध्याय का अन्तिम पृष्ठ खण्डित है ।)

७- स्त्रीराज्य तुरग प्रवेशो नाम २१ (एकइसमो) अध्यायः-पृ०सं०९८ से १०८ तक । (बीच में १० अध्याय खण्डित हैं ।)

८- लछुमन (गवनो) नाम ३२ (बतीसमो) अध्याय पृ० सं० १६१ तक। (बीच के ३ अध्याय खण्डित हैं ।)

९- रामचन्द्र अश्वमेधयज्ञ सम्पूर्णो नाम ३६ (छतीशमो) अध्यायः- पृ० सं० १६३ तक । (३७वाँ अध्याय खण्डित है ।)

१०- पुण्डरीकमणि (आनै पाताल गौ) नाम (अठर्तासमो) अध्यायः- पृष्ट सं० २०३ तक । (३९ वाँ अध्याय खण्डित है ।)

११- अर्जुन वृषकेतु जीवनो नाम ४० (चालीसमो) अध्यायः- पृ० सं० २१५ तक ।

१२- रत्नपुर नगर प्रवेशो नाम ४१ (एकतालीशमो) अध्यायः-पृ० सं० २१६ से २१९ तक ।

१३- ताम्रध्वज युद्ध (करनौ) नाम ४२ (वेआलीसमो) अध्यायः-पृ० सं० २१९ से २२४ तक ।

१४- ताम्रध्वज-अर्जुन युद्धवर्णनोनाम ४३ (ततालीसमो) अध्यायः-पृ० सं० २२५ से २२८ तक ।

१५- कृष्ण प्रार्थना......नाम ४४ (चौआलीसमो) अध्याय-पृ० सं० २२८ से २३२ तक ।

इसी प्रकार ६५ पैंसट अध्यायों में ग्रन्थ समाप्त हुआ है, किन्तु वीच-वीच में कई अध्याय खण्डित हैं ।

(ख)- यह महाभारतान्तर्गत राजा युधिष्ठिर के अश्वमेधयज्ञ के आधार पर श्रीप्रेमदास की मौलिक रचना है । ग्रन्थ की भाषा पर यत्र-तत्र भोजपुरी का असर है । ग्रन्थ और ग्रन्थकार के सम्बन्ध में नागरी-प्रचारिणी की खोज-विवरणिका (सन् १९२६-२८ ई०, पृ० सं० ७४, ५२३, और ग्रं० सं० ३५६) में भी चर्चा है । उक्त विवरणिका में ग्रन्थकार गोरखपुर जिले के वड़ागाँव के निवासी बताये गये हैं । उनका सम्बन्ध मुजफ्फरपुर जिले के हाजीपुरीय श्रीधरणीधर पण्डित से था और उनसे ही कथा सुनकर, इस ग्रन्थ की रचना उन्होंने की थी । नागरी-प्रचारिणी के विवरण में प्राप्त प्रति के उद्धरण से प्रस्तुत प्रति में पठान्तर भी है ।

(ग)- ग्रन्थ के छत्तीसवें अध्याय में रामचन्द्र के अश्वमेध यज्ञ की चर्चा है और वह वाल्मीकिकृत रामायण पर आधारित है । इसके बाद के प्रसंग के आरम्भ के पूर्व दूसरा खण्ड' लिखा है । इससे प्रतीत होता है कि ग्रन्थकार ने ग्रन्थ को कई खण्डों में विभाजित किया है, किन्तु यह प्रति खण्डित, जीर्ण-शीर्ण और व्यस्तक्रम है ।

(घ)- ग्रन्थ के अवतारणा जनमेजय और जैमिनि के कथोपकथन से की गई है । ग्रन्थ अनुसन्धित्सु-जगत् के लिए अवश्य नवीन है और सम्भवतः अमुद्रित और अप्रचलित भी है ।

(घ)- ग्रन्थ की लिपि अस्पष्ट, प्राचीन और कैथी के सदृश है । लिपिकार ने अपना परिचय निम्नलिखित शब्दों में दिया है-"सम्वत १९११ शाके १७७६ शन् १२६१ शाल फालगुन दुतीआ........पठनार्थ श्री वावू जग्रनाथ सिंह आत्मज श्री बावू दुरगा दत्त मालीक महदीपुर

प्रगनै मुंगेर दसषत द्वारकानाथ मिश्र वासींदे महल्ला पुरानीगंज शाकदीपी टोला प्रगने मुंगेर श्री ।''

यह पोथी श्रीअंजनिकुमार सिन्हा, विहर-विश्वविद्यालय, पटना के सौजन्य से प्राप्त हुई ।

१०७-भरथ विलाप- ग्रन्थकार-तुलसीदास। लिपिकार-श्यामलाल । अवस्था-अच्छी, हाथ का बना, देशी कागज। पृष्ठ-सं० ३२। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी। रचनाकाल-×। लिपिकाल २२ जनवरी, सन् १६०७ ई०, सन् १३१४ माघ।

प्रारम्भ-दोहा- ''सुनत भरथ वीकल भए
धरती पर मुरछाऐ
तुलसीदास मन गहबरी
लोग न बोधा जाए

चौपाई- रोवत भरत चली गौ ताहाँ
सोग सो बैठी कौसीला जाहां
रोवत सुमींत्रा देखा जाइ
भरतही देखी माता दोउधाक
भरत के पाँवपरी ढहनाई
भरत उठाइ के हीरदां लगाइ''

मध्य (पृ०सं०२५)''चौपाई-रोवत भरथ पीता पहं जाइ
कर गही लोगन कहा बुझाई
तोहरे रोवत समै मनी जाइ
मरीहै कोसीला सुमींत्र माइ

दोहा- तेहीछन हीरदें..................
बोधे दोनो भाऐ
तुंलसीदास मन गहबरी
वीग्रह दीन्ह छोड़ाऐ''

अन्त-''चौपाई- तुलसी भरथही कहा बुझाइ
नीश्चै सांमीजपहु मन लाइ
जेहीं ते नरक पाप छे जाइ
बाढ़े धरम सुमती गती पाइ
भरथ वीलाप पढ़े मन लाइ
सहंस्र होम सो दीन दीन करइ
जो इछा लरी जो नर पढ़इ

नीसचै ताही सकल सुभ लहइ
राम नाम जीन्ह पुरुवन्ह
गुनत जो एको बार
ताके जन्म सुफल भऐ
तासु जनम हे सार

दोहा- राम नाम जीन्ह के घट
तेही पुरुखा तरी जाऐ
तुलसीदास भजु राम पद
राम नाम मन लाऐ

इतीश्री पोथी तुलसीदास वीरचीत भरथवीलाप संपुरन भइल जो पत्र मो देखा सो लीखा मम दोखन दीजिऐ पंडीत जन सों बीनती मोरी टुटल अछर लेव सभ जोरी । इती पोथी भरथ वीलाप सम्पुरन ।।"

विषय- कैकेयी द्वारा सब समाचार सुनना और भरत की मूर्च्छा और विलाप, दशरथ की दाहक्रिया, राम-भरत-मिलन । कुछ १८ दोहे और १५७ चौपाइयों में ग्रन्थ समाप्त ।

टिप्पणी-(क)- यह ग्रन्थ खण्डित है । ग्रन्थकार तुलसीदास हैं । किन्तु ग्रन्थ की भाषा, रचना-शैली आदि से रामचरितमानस के प्रणेता गो० तुलसीदास नहीं प्रतीत होते हैं । तथापि अन्य सूचनाओं के अभाव में नागरी- प्रचारिणी की खोज-विवरणिका के सम्पादक महोदय ने इसे श्री गो० तुलसीदास की ही प्रति माना है । देखिए-ना ·प्र० की खो० वि० सन् १६२६-२८ ई०, पृ० सं० ७७४, ग्र० सं० ४८५ ए। ग्रन्थ की एक प्रति श्रीमन्नूलाल पुस्तकालय, गया में भी सुरक्षित है। दे० मन्नूलाल० विवरणिका-ग्रन्थ-सं० ४८ ।

(ख)- ग्रन्थ की लिपि स्पष्ट, किन्तु प्राचीन है । यह ग्रन्थ श्री प्रसादीराम जी, मंत्री, आर्य-समाज, लक्खीसराय, मुँगेर के सौजन्य से प्राप्त।

१०८-नागलीला- ग्रन्थकार-× । लिपिकार-श्यामलाल । अवस्था-अच्छी, हाथ का बना, देशी कागज । पृ० सं० १० । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-१ अप्रैल, सं० १६०५ वि० ।

प्रारम्भ- "श्री गनेसजी सदा सहाए नमह
श्री रामजी सदा सहाए नमह
श्री कालीजी सदा सहाए नमह
श्री गंगाजी सदा सहाए नमह
श्री पोथी नागलीला लीख्यते

पार ब्रह्म पुरुसोतम जदुकुल में अवतार
भगती प्रेम वसी नन्द ग्रीही प्रगट भऐं कर तार
चलो चलो सखी जहाँ जाईऐ जांहां नन्द के लाला भऐ
धन धन जसोदा भाग तेरो गोखुला के दुख गऐ
सुभ घरी सुभ दीन मंगल नन्द के लाला भऐ
गोप गोपी गोआल बालक करन उतसव सभ गऐ
ऐक सेहागीनी सोंठ कुटे ऐक वंदत वन्दना
ऐक सोहागीनी चौक पुरे एक चन्दन रोचना''

मध्य (पृ०सं० ७)- ''गोखुला हमारो ग्राम है नन्द के हम पुत्र नागीनी
क्रीस्न हमारो नाम है कहत नागीनी हरी सों बातें
जाहु बालक भागी के जो तुम्हारी खबरी पइहीं
नाग उठी हैं जागी के नाग जागे हमही लागे''

अन्त- ''करजोरी नागीनी करत वीनती प्रभु त्रीआ वंदी छोड़ाइऐ
अही बात दै जसोदा के नंदन वंदी तेरी कहाइऐ
धीर धरु आधीर नागीनी माँगे सो वर पाइऐ
सुन के प्रभु नागलीला रासी मण्डल गोईऐ
इति श्री पोथी नागलीला संपुरन जो पत्र मो देखा सो लीखा मम दोख ना दीजीऐ पंडितजनसों वीनती मौरी टुटल अछर लेव सभ जोरी''

विषय- श्रीकृष्ण-जीवन-सम्बन्धी नागों की लीला । श्रीकृष्ण जीवनोत्सव, गोपियों में उत्साह और हर्ष । शुभ दिन, लग्न आदि देखने के लिए पण्डितों का बुलाया जाना । श्रीकृष्ण द्वारा गेंद का खेल । गेंद के लिए यमुना में कूदना । नागिन का काप और श्रीकृष्ण से परिचय। नाग-जागरण के पूर्व ही श्रीकृष्ण को भागने का नागिन के द्वारा परामर्श दिया जाना । नाग को नाथने का निश्चय और श्रीकृष्ण -नागिन-विवाद । कृष्ण द्वारा वशी-वादन । गरुड़ की पहुँच। नाग की मूर्च्छा । नाग का नाथा जाना । नागिन द्वारा श्रीकृष्ण की विनय। नागलीला-पाठ-फल ।

टिप्पणी- १- ग्रन्थ के प्रारम्भ के ३ पृष्ठ खण्डित हैं । ग्रन्थकार के नाम का उल्लेख नहीं है । कथा श्रीमद्भगवत के आधार पर लिखी गई है। रचना में कवित्व का अभाव है । भाषा में प्रवाह नहीं है ।

२- ग्रन्थ की लिपि अस्पष्ट और प्राचीन है । लिपिकार ने अपना परिचय निम्नलिखित शब्दों में दिया है :
''हमारा ठेकाना-सहर कलकत्ता जान बाजार फेरी इस्कुल रास्ता

नंबर पाँच ५ दूकान के मालीक मोसमात गौरावेवा करमीनी है दसखत सामलाल नाम का ।''

यह ग्रन्थ श्रीप्रसादी राम जी, मन्त्री, आर्य-समाज, लक्खीसराय, मुंगेर के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

१०६-दानलीला- ग्रन्थकार-कृष्णदास । लिपिकार-श्री श्यामलाल । अवस्था-अच्छी, प्राचीन, देशी कागज । पृष्ठ-सं०-१८ । प्र० पृ० पं० लगभग-१४ । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सन् १६०५ ई० ।

प्रारम्भ- ''श्री गनेस जी सदा सहाऐ
श्री रामजी सदा सहाऐ
श्री कालीजी सदा सहाऐ
श्री गंगाजी सदा सहाऐ
श्री पोथी दानलीला लीख्यते

दोहा- चलो सखी जहां जाइऐ जहां मीलै व्रीज राज
गोरस वेंचत हरी मीलै, एक पंथ दुइ काज

चौपाई- प्रभु पुरन व्रम्ह अखंडा जाके रोम कोटि ब्रहमंडा
जब सरगुन ब्रम्ह कहाऐ मथुरा तै व्रींदावन आऐ
जहां देवलोक सभजेते सभ गोप गोवालीनी तेते
देवकी सुत नाम धराऐ वसुदेव ही रूप देखाऐ
तीन्ह नंदभवन पहुँचाऐ ताहां नंद के लाल कहाऐ

छन्द- जनम लीन्ह वसुदेव के ग्रीह नंद के बालक भऐ
छपनकोटी जदु वंशीमाआ जुथ गोप गोवाली के
श्री क्रीस्न के संग बहुत बालक गौचरावन वन गऐ
हरखी गावही दानलीला सुनहु सज्जन कान दे''

मध्य-छन्द- ''सदा जांही ऐही पंथ मथुरा दान हम सों कीन्ह लइ
दयी मांगत छांछ दुरलभ हौ सुता व्रीख भानुकी
कंस राऐ के राज सों प्रभु नइ रीत............जी
नंद के ग्रीह दंद उपजै दुख परे तन छीजीऐ''

अन्त-छन्द-"श्री क्रीस्न घंट बजांए आरती जोती वंदन सभ करे
ग्रीजानंद प्रसाद पावै जन्म जन्म दुख हरै
जो नर गावही दानलीला सुनही मन चीत लावही
कोटी तीरथ करे को फल वीस्नुलोक सीधावही

दोहा- लीला अगम अपार है सोभा वरनी ने जाऐ
छत्रपती तुअ दरस को, सदा रहे चीत लाऐ
इतीश्री पोथी दानलीला संपुरन"

विषय- यमुना-तट पर, समीपस्थ वन की ओर जानेवाली गोपियों से श्रीकृष्ण तथा उनके साथियों द्वारा दधि के दान की याचना। गोपियों द्वारा कंस नृप का भय दिखाया जाना। कृष्ण को दान से विमुख करने का प्रयत्न। कृष्ण का, निर्भयता दिखलाते हुए, अपनी शक्ति का परिचय देना। व्रजवनिता का आत्मसमर्पण और ईश्वर-रूप में श्रीकृष्ण की स्तुति।

टिप्पणी- यह प्रसिद्ध 'दानलीला' की खण्डित प्रति है। इसमें यत्र-तत्र पाठभेद तो है ही, साथ ही मध्य में अनेक पंक्तियाँ छूट भी गई हैं। इसके ग्रन्थकार श्रीकृष्णदास जी 'पयहारी' नाम से प्रसिद्ध हैं। इनकी चर्चा नागरी-प्रचारिणी की खोज-विवरणिका में भी है। देखिए-खो० वि०, १६२६-२८ ई० की पृ०सं० ५६, ग्रं० सं० २४७ और खोज-विवरणिका सन् १६०३ तथा सन् १६२३-२५ ई० ग्रं० सं० १६। स् १६२६-२८ ई० की विवरणिका में ५ हस्तलेखों का उल्लेख है। अबतक प्राप्त प्रतियों में सबसे प्राचीन हस्तलेख का काल सन् १६५६ ई० है। यह ग्रन्थ प्रकाशित है। ग्रन्थ-सं० ७, ८ और ६ एक ही जिल्द में है। यह ग्रन्थ श्रीप्रसादीराम, मन्त्री, आर्य-समाज, लक्खीसराय, मुँगेर से प्राप्त।

११०-बन्दी-मोचन- ग्रन्थकार-× । लिपिकार-× । अवस्था-प्राचीन, हाथ का बना कागज, पूर्ण। पृष्ठ सं०-२६ । प्र० पृ० पं० लगभग-१७ । आकार-६"×४" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपि-काल-भाद्र, कृष्ण चतुर्दशी, बुधवार, सं० १८६७ वि०, सन् १८४० ।

प्रारम्भ- "मन वच क्रम ध्यान सो लावे ।।
लछीमी आपु ताहा चली आवै ।।
उड़ी चलै लछीमी तेही ठाइ ।।
जो ऐह कथा पढै मनलाई ।।
मन वच क्रम शो नर धरै कथा पर ध्यान ।।
लछीमी उड़ी चलै तहौ जो नर करे हीद ग्यान ।।

इतीश्री वन्दीमोचन बांधपुत्र देनी शोक संताप हरनोनाम परथमो अध्याऐ १ ।।

चौपाई ।। कैलापती ऐक राजा रहेउ ।।
सवस्रम जुग्ती पुत्र नहीं भैउ ।।
बारह वर्ष सीव पुजा कीऐउ ।।
बन्दी देवता कासी रहेउ ।।

मध्य (पृ० सं० २४)

"**चौपाई ।।** जब नारद ऐह कथा सुनाई ।।
तब रघुनाथ बहुत हरखाई ।।
जाकी कथा मुनी सोही सुनाई ।।
धन्य प्रताप है वंदी माई ।।
इन्ह समान कोइ भग्तीन दुजा ।।
चलहु जाऐ मुनी करीहो पुजा ।।
जा कह गाद परै अति भारी ।।
सो ऐह कथा करै अनुसारी ।।
नीश्चै गाद सकल मेटी जाई ।।
धनी महिमा है वंदी माई ।।
ताके पुत्र होही कल्याना ।।
जो ऐह धरै कथा पर ध्याना ।।
नीश्चै तासु दुश्ट छै जाई ।।
धन्य महिमा है वंदी माई ।।
जो नर पढै मनचीत लाइ ।।
वाढै धरम पाप छै जाई ।।

दोहा ।। तीनी लोक महबंदी गादे करही उधार ।।
संतजन सुनचीत दै मुकुंती होही संसार ।।"

इतीश्री वन्दामोचन रामचंर्द नारदमुनी वन्दी पुजाध्यान धरनोनाम नमोअध्याए ६ ।। इतीश्री पोथी वन्दीमोचन कै पाठ भाषा लीषते समत १८६७ शर्म नाममी भादोवदी १४ वार बुर्ध के तइआरभईल।।"

विषय- महात्म्य । पुत्रदा देवी की स्तुति । पुत्र-प्राप्ति के लिए वन्दना की पोथी ।

टिप्पणी- १. यह लघु पुस्तिका पुत्र-प्राप्ति के लिए वन्दना के रूप में लिखी गई है । इसमें प्रारम्भ में ग्रन्थ का माहात्म्य, ग्रन्थपाठ अथवा स्तुति का फल लिखा हुआ है । बाद में पुत्र-प्राप्ति के लिए प्रयत्नवान् की गाथा और उसके प्रयत्न का उल्लेख हुआ है । ग्रन्थ में ग्रन्थकार और लिपिकार का नामोल्लेख नहीं है ।

२. इसकी अन्य प्रतियों की प्राप्ति का उल्लेख नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज-विवरण में है । देखिए : क-त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण (१६२६-२८ ई०), तृतीय परिशिष्ट (पृ० सं० ७८२) की ग्रन्थ-संख्या ६४ और ख-चौदहवें वार्षिक विवरण (सन् १६२६-३१ ई०) के तृतीय परिशिष्ट (पृष्ठ-सं० ६७१) की ग्रन्थ-संख्या ५२६। नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के १६२६-३१ ई० के विवरणस्थ ग्रन्थ का लिपिकाल सन् १८८८ ई० है ।

३. ग्रन्थ की लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है । यह ग्रन्थ परिषद्-मन्त्री आचार्य शिवपूजन सहाय जी के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

१११-सभाविलास- ग्रन्थकार-लल्लू (लाल कवि) । लिपिकार-श्रीदुर्गा मिश्र । अवस्था-अच्छी, देशी कागज । पृष्ठ सं०-५४ । प्र०पृ०पं० लगभग-२३ । आकार "६¼" × ६¼" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी। रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

प्रारम्भ- "अथ सभा विलास लिख्यते । सोरठा ।।
विघन हरन गनराय मूषक वाहन गजवदन
गनपतिचरनमनायतवै काज कछु कीजिये ।।

दोहा ।। आनन भावत स्वाद हम पर्‌यौ गह्यौ सुमलिन्द
कृष्णचरण अरुविन्द को पियत सदा मकरन्द २
ममता भ्रमता के मिटे उपजे समता ज्ञान
रमता रमता रामशों जमता गहे न मान-३
साध सक्यौ न तु साध संग लाय न सक्यौ समाध
विषै विषाद उपाधि तज हरि पल आध-४
निगमरु गीता ने कह्यौ धर्म पुनीता नाम
वीत्यौ जन्म जु जात है भज ले शीताराम ५"

मध्य-(पृ० सं० २७) : "अथ कुंडलिया ।।
वैरी बधु वानियां ज्वारी चोर लवार
विभीचारी रोगीरीनी नगर नार कौ पार
नगर नारकौ पार भूलि परतीत न कीजै
सौ सौ सौहे खाय चित्त एको नहिं दीजै
कहै गिरधर कविराय धरै आवै अनघेरी
हितको कहै बनाय जानियै पूरो वैरी १"

अन्त- 'देसकार कंचन वर्न खेलत पिय के संग
हिये हुलास सहै काम कौ चढ्यौ जो जोवन अंग ६८
वीन गहे गावत बहुत रोवति हे नल ढार
तन दुर्लबल विरहा दहै विर्हनी नारि मलार ६९
सेज विछाइ कमल दल लेटि रहि मनमारि
लेत उसास उसी परी तनतनक वियोगनि नारि ७०"

विषय- सभा में वर्त्तालाप के योग्य विभिन्न शैली के दोहे प्रश्नोत्तर, कुण्डलियाँ और पहेली आदि ७० पदों के संग्रह ।

टिप्पणी-१. ग्रन्थ में ग्रन्थकार का नामोल्लेख सम्भवतः स्पष्ट नहीं है । नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के हस्तलिखित पोथियों के त्रयोदश विवरण (सन् १९२६-२८ ई०) के २६६ संख्यक ग्रन्थ के विवरण में लिखा है ।-"आगरे के लल्लूजी लाल प्रसिद्ध रचनाकार हो चुके हैं ।" इस ग्रन्थ की प्रति, उक्त विवरण में विवृत है । देखिए २६६ सी और डी ।

इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थ की अन्य प्रतियाँ भी नागरी-प्रचारिणी सभा को खोज में मिली है; देखिए-चौदहवाँ त्रैवार्षिक विवरण (सन् १९२९-३१ ई०) पृ०सं० ६० और ४१५, ग्रन्थ-सं० २१२ डी, ई और एफ् । साथ ही देखिए नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) से प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण', पहला भाग की पृ० सं० १५१ । कवि की निम्नलिखित अन्य कृतियाँ भी मिली हैं-१. लालचंद्रिका, २. प्रेमसागर, ३. हिन्दी-अँगरेजी और फारसी कोष, ४. राजनीति, ५. माधवविलास । इनमें 'प्रेमसागर' का रचनाकाल-सं० १८६० (१८०३ ई०) और लि० का० सं० १९१० (१८५३ ई०) है । 'राजनीति' का रचनाकाल सं० १८५९ (१८०२ ई०) और लि० का० सं० १८६७ (१८१० ई०) है । 'सभाविलास' (प्रस्तुत ग्रन्थ) की जो प्रति नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को खोज में मिली है, उसका र० का० सं० १८७० (१८१३ ई०) है और लि० का० सं० १८७३ (१८१६ ई०) है । इसके अतिरिक्त इनके ग्रन्थों के लिए देखिए-विवरणिका, सन् १९०९-११ ई० की ग्रन्थ-सं० १७४ ।

२-ग्रन्थकार श्रीलल्लूलालजी हिन्दी के प्रथम गद्य-लेखक समझे जाते हैं । इनका उपनाम 'लालकवि' था । ये काजिम अली के समकालीन, आगरा-निवासी; जाति के गुजराती ब्राह्मण और कलकत्ता के फोर्टविलियम कॉलेज में हिन्दी के अध्यापक थे । सं० १८६९ वि० के

---

१. नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज-विवरण (सन् १९२९-३१ ई०) की पृ०सं० ६० और ग्रन्थ-सं० २१२ के आधर पर ।

लगभग वर्त्तमान थे ।[२] नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज-विवरण में उद्धृत इस ग्रन्थ की पुष्पिका में इनका परिचय निम्नलिखित है-"इतिश्री लल्लूजी लालकवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगरेवासीकृत सभा विलास संपूरन समाप्तं ।"

इनके अन्य ग्रन्थ मुद्रित हो चुके हैं । कवि उदित-विदित है । यह ग्रन्थ सम्भवतः अप्रकाशित और साहित्य-जगत् के लिए अपरिचित है । ग्रन्थ प्राचीन लीथो-मुद्रित है ।

३-यह ग्रन्थ परिषद्-मंत्री आचार्य शिवपूजन सहाय जी के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।

११२-बारहमासा- ग्रन्थकार-सन्त परमानंददास । लिपिकार-सन्त परसाद । अवस्था-अच्छी, पुराना कागज । पृ०सं०-२४ । प्र० पृ० पं० लगभग-१८ । आकार-५" × ८" । रचनाकाल-× । लिपिकाल-भाद्रपद अष्टमी, शुक्रवार, सन् १२७७ फसली ।

प्रारम्भ- "छती अनवजर केवार जजीरादे गए ।
सुनीसेज भेआवन भारी रात है ।।
नीस दीन ही पछतात बीरह से जात है ।
कासे कहो इअह दरद में अपने प्रीत की ।
आगी लगो वोही देस चलन वोही रीत की
सभ सखीअन पीव बीदेस से आइआ
मेरो वलम्ह आमीत बीदेसे छाइआं

दोहरा ।। असे समे आसढ को ।। पीव रहे बीदसे छऐ ।
नीरखो घट घन की छटा ।। पीव बीनु मन कक्षाऐ ।।

मास-सावन। ।। सावन मास सोहावन जल थल मही भरे
कंत कुमतबीदेस न जानो बस रहे ।।
घन गरजत घन बरसत दमकत दामीनी ।।
डरपत भवन भेआवन सुनी भामीनी ।।
कबही झटाके छूट घटाके रोकसे ।।
कबही झकोरत मेध पवन के झोंक से
गगन बडकत मेघ कडकत छातीआं ।।
बीरह भरी रस बन सुनावत बातीआँ ।।
वोलत दादुल मोर बीरह की बोलीआं ।।
बीरहीन के होए मांह लगे जस गोलीआं ।।"

मध्य-(पृ० सं०-१३)

"मास पुस ।। आए पुस के मास.......तरवरवास है ।।

---

१. ना० प्र० स० (काशी) से प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' की पृ० सं० १५१ के आधर पर ।

बीरहीन को इअह मास गले का फांस है
रात बड़ी मोही नीद न आवत नैन मे ।।
सीसीर समे की रात न कुछ चीत चैन मे ।।
करवट करवट फेरत कर है अलग फटे
मेरो छोह पीआ के तन मन सो घटे ।।
कोइ न साथी संग सखीआ सहेलीआ
जाको बुझ बुझावों वीरह पहेलीआ ।।
एक दीपक है साथ सोवातन बोलही ।।
सुसुकी सुसुक जल नैन गीरत तन डोलही।।"

अन्त- "बहुभाती के दास दे काम जगावही ।।
नाही वोहां के मधमे अधरस पावही ।।
पुरी आस दोउ की बहुत सुख तोर की ।।
वैसे पुरवहु आए सदा सींव आवरकी ।।

दोहरा ।। मीलबहुरे संजुगत होए मुख होकर पगु जान
वचन सुधा सम परेमकी कहत भऐवनी सभ से

ईती श्री बीरहमासा मूनशी परमानन्द साकीन करी मोकाम आरे मत वे मूंशी सन्तपरसाद में क्षापाग्या ता० ८ भादो रोज सूक सन् १२७७ फसला ।"

विषय-विरहिणी की बारहों महीने की विरह-दशा का करुणापूर्ण वर्णन ।।

टिप्पणी- १. इस लघुकाय पुस्तिका में बारह महीनों में विरही और विरहिणी की मनोदशा का बड़ा ही रोचक और साहित्यिक वर्णन है । ग्रन्थ में 'गुलावीआं, रीकाविआँ, आइआं, पाइआं आदि शब्द-प्रयोग पंजाबी भाषा से प्रभावित प्रतीत होते हैं ।

२. ग्रन्थ की लिपि स्पष्ट है । अन्य हस्तलिखित पोथियों के समान ही 'व' और 'ब' तथा 'य' ओर 'ज' के प्रयोग हुए हैं । लिपि प्राचीन लीथो-सी है ।

यह ग्रन्थ श्रीअवधेन्द्रदेव नारायण, दहियावाँ, छपरा (सारन) के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

११३ - सूरसागर- ग्रन्थकार-सूरदास । लिपिकार-× । टीकाकार-× । अवस्था-प्राचीन, मोटा देशी कागज । पृष्ठ-संख्या-३१६ । लिपि-नागरी । प्र० पृ० पं० लगभग-३८ । आकार-८" × ६" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

प्रारम्भ- "अथ सूर सागर राग संग्रह कृत ।।
श्री कृष्णायनमः ।।
राग सागरोद्भव राग कल्पद्रुम ।।
अपनो दीनत्व प्रभुजी के महात्म्य तथा विनै पत्रिका ।

राग विलावल ।। करनी करुना सिंधु की कहत न आवे' ।।
कपट कपट तरे पर सेव की जननी गति पावे ।।
दुखित गजेन्द्रहि जानि के आपुन ऊठि धावे ।।
कलि में जाम प्रगट नीचता की छानि छवावे ।।
ऊग्रसेन की दीनता प्रभु के जिय भावै ।।
कंस मारि राजा कियो आपुन सिरनावे ।।
वरूण पासवे वृज पतिहि छिन मे छिटकावे ।।
बहुत दोष मो सूर कहँ ताते गह रुल गावे ।।

राग विलावल ।। माधौ भुज कहां दुराए ।।
जिन्ही भुजनि गोवर्द्धन धार्यौ सुरपति गर्व नसाए ।।
जिन्ही भुजनि काली को नाथ्यो कमल नाल लै आए ।।
जिन्ही भुजनि प्रह्लाद ऊवार्यो हिरण्याक्ष को धाए ।।
जिन्ही भुजनि गजदन्त ऊपारे मथुरा कंस ढहाए ।।
जिन्ही भुजनि दांवरी बंधाए जमसा मुक्ति पठाए ।।
जिन्ही भुजनि अघासुर मार्यो गोसुत गाय मिलाए ।।
तेहि भुज की वलि जाय सूर जन तिनका तोरि दिखाये ।।''

मध्य-(पृ० सं० १५८) :

''रागगौरी-मुरली प्रकट भई सो कैसी ।।
कहां रहति कैसे यह आई गीधे श्याम अनैसी ।।
मात पिता कैसे हैं वाके या की गति प्रति एसी ।।
एसे निठुर होहि गे तेऊ जैसे की यह तैसी ।।
यह तुम नहीं सुनी हो सजनी याके कुल को धर्म ।।
सूर सुनहु अवही सुख पैहौ करनी उत्तम कर्म ।।''

अन्त- ''तीय मान हरि एसे छुड़ायो भक्त हित लीला करी ।।
निगम नेति अपार गुण सुख सिंधु नट नागर हरी ।।
यह मान चरित पवित्र हरि का प्रेम सहित जु गावहीं ।।
करहि आदर मान तिनको संत जन सुख पावहीं ।।
राधा रसिक गोपाल को कौतूहल रस केलि ।।
वृज वासी प्रभु जनन को सुखद काम तरु वेलि ।।
सुफल जन्म तास जे अनुदिन गावत सुनत ।
तिनको सदा हुलास सूरदास प्रभु की कृपा ।।
इतिश्री कृष्णानन्द व्यास देव राग सागरो ।।
उद्भव सूर सागर राग कल्पद्रुम रास लीला संपूरनं ।।''

विषय- श्रीकृष्ण की महिमा, उनका गोपियों के प्रति प्रेम, गोपियों का विरह और ऊधो के हाथ संदेश भेजना आदि ।।

टिप्पणी- इसके ग्रन्थकार सन्त कवि सूरदास हैं । ग्रन्थ भागवत का अनुवाद-मात्र है । कथावस्तु का आधार श्रीमद्‌भगवत है । प्राचीनता के कारण ग्रन्थ के पन्ने कहीं-कहीं खण्डित हैं । लिपि-नागरी का अर्द्धविकसित रूप है । कहीं-कहीं कैथी अक्षर भी लिखे गये हैं । सम्पूर्ण ग्रन्थ श्रीकृष्ण-गुणानुवाद से ओत-प्रोत है । ग्रन्थ के अन्त में ग्रन्थकार ने श्रीकृष्ण की भक्ति-विषयक भावना का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है ।

११४- ज्ञान सरौदे - ग्रन्थकार-श्री चरनदास । लिपिकार-× । अवस्था-प्राचीन, मोटा देशी कागज । पृष्ठ-संख्या-३२ । प्र० पृ० पं० सं० लगभग-१६ । लिपि-नागरी । भाषा-हिन्दी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-फाल्गुन कृष्ण १२ । संवत् १८७७ ।

प्रारम्भ- "राम जी
श्री गनेसाऐ नमः ।
सुखदेंव जी सहाऐ ।। गरंथ ग्यान सरौदे ।।
श्री चरनदास क्रीत ।

दोहा ।। नमो नमो सुखदेव जी । प्रनमो कुरू अनंत
तु प्रसाद संचर भेद को ।। चरनदास वरनंत ।
परसोतीम पर आतमा ।। पुरन वीस्वो बीस
आदी पुरुस अवीचल तेही ।। ताही नवावो सीष ।।

कुंडलिया - छर दड सो कहत है ।। अछर सो टंग जान
नीह अछर स्वासा रहीत ।। ताही को मन आन
ताही का मन आनी ।। राती दीन सुरती लगावो
आप आप बीचारी ।। औरन सीस नवावो ।"

मध्य-(पृ० संख्या १६) :
"हानी होई वहुरनही, आवन की नहीं आस
दहीने चलत न चलीए दछीन पछीम जानी ।
जोर जाऐ बहुरे नही तहां कछु आवे नाही
दहीने स्वर मह जाइऐ, पुर्व उत्तर मत जी
सुख संपती आनन्द कै सभे होई सुभकाज
वांऐ स्वर मह जाऐ दछीन पछीम देस
सुख संपती अनंद करे जोर जाऐ परदेस ।।"

अन्त- ''नीर चलै जब सास मो रन ऊपर चढ़ी मौत
वैरी को सीर काटी कै घर आवै रन जीत
प्रीथी के प्रगास मे जुधी करै जो कोऐ
दोउ दल रहे बरावरी हारी बाऐ मो होऐ
अग्नी तंत के बहतही जुधकरन मती जाव
हारी होऐ जीतै नहीं और आव तन घाव ।।''

विषय- सन्त-साहित्य । कबीर-दर्शन से मिलती-जुलती भावना । नाद, बिन्दु, इड़ा, चक्र, अनाहतनाद, शब्द, बैन, पहिया, काल और निकाम आदि का विवेचन । निर्गुण-विचारधारा की मीमांसा से ओतप्रोत ।

देखिए-

''नीराकार त्रलीप तु देही जानी अकार ।
आप न देही मानते ऐही तन तत् प्रसार ।।
देह मेरे तु अमर अविनासी त्रीबान ।
देह नही तु ब्रभ है व्यापो सकल जहान ।।''

योग की स्वर-प्रक्रिया और गमनागमन से सम्बन्धित श्वास के फलाफल का दिग्दर्शन। विभिन्न दिशाओं की यात्रा में दक्षिण, वाम एवं मध्य श्वास की प्रक्रिया एवं आरोहावरोह के परिवर्त्तन की विधि और उसका प्रभाव । पाप, पुण्य, सद्गति, सतपुरुष, नाम, परमलाभ आदि का पुनः पुनः प्रयोग और मोक्ष-धाम तथा निर्वाण की विशिष्ट व्याख्या ।

टिप्पणी- इस ग्रन्थ के ग्रन्थकार श्रीचरणदास हैं । जैसा कि पुस्तक के नाम से ज्ञात हाता है, सम्पूर्ण पुस्तक स्वर-प्रक्रिया की विधि से भरी-पड़ी है । भाषा सरल है । हस्तलिखित प्रति अव्यवस्थित हालत में है। दोहा, कुण्डलिया और चौपाई-ये तीन प्रकार के ही छन्द इस पुस्तक में मिलते हैं । कबीर के समान अनहद', 'सूक्ष्म' आदि पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हुआ है । 'ब्रभ' शब्द का प्रयोग 'ब्रह्म' के अर्थ में किया गया है । स्वर-प्रक्रिया को ब्रह्म-प्राप्ति (निर्वाण) का माध्यम वताया गया है । देखिए-

''आसन पदुम लगाइके ऐक व्रत नीत साच ।
बैठे लेटे डोलते स्वास ही अव राच ।''

यह ग्रन्थ पं० श्रीगणेश चौबे, ग्रा० बँगरी, जि०-चम्पारन के सौजन्य से प्राप्त किया ।

११५-भागवत भाषा- ग्रन्थकार-कृपाराम । लिपिकार - वाः महेश्वर दास । अवस्था-प्राचीन, सजिल्द, हाथ का बना देशी कागज । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । पृष्ठ संख्या-२४४ । प्र०पृ०पं०सं० लगभग- १८ । रचना-काल-× । लिपिकाल-आषाढ़ कृष्ण पक्ष संवत् १६५० वि० (१८१५ शाके) ।

प्रारम्भ-।। १ ।। श्रीः गणेशाय नमः ।
श्रीः राधाकृष्णाए नमः
श्रीः पोथी भागवत भाषात्कः
त्पकृपादासजी एकादशश्कंध
पोथी लीखल वाः महेशर दास

शोरठः ।। वंन्द्यौ श्रीः रघुर कृपा शेंधु शंतत शुखद
प्रनत पाल रणधिर दुख हरन दारिद्रदमन
दोहा ।। हरन मोह तम दंद्व शव श्रीः गुरू पद करी ध्याँन
राम कथा वरणौ वीमल अघ हरन करन कल्याँन
सोरठा ।। मै मती मंद मलीन कुर कपट कलीमल चर्यौः
जानौ अतीशै दीन गुरू दक पाल पावन कियौं
दोहा ।। रमारवन विधीशो कहि तीन नारद कह दिन्ह
व्यास शुनी तीन सो सकल शुक पढ़ी लींन्ह
दोहा ।। वेद कल्प तरु ताशुः फल श्री भागवंत पुरान ।। १।।
शुकमुष ते अवनी प्रगट शुषद शुषद कंल्यान''

मध्य-(पृ० सं० २२२)

''श्री सूक दे (देव) उवाच ।।
अव अध्याय सत्रह के माही
भक्ती लक्षण अरु धर्म कहाही
ब्रह्मचर्य्य अरु जे गृहवाशी
ताशु धर्म कही हे शुष रासी
सुनेउ वीभुती माझहरी वानी
(शान्त) सां तत्व कर्म्म माहा सुष षानी
तहां एकैर्मक (कर्म) रतगती लहहि
कोउ एक भक्त महा दुष शहहि
अश वीचारी उर भा शंदेहा ।।
पुछत नाशो सही शनेहा ।।''

अन्त- ''सुनै सुनावे पुनी कहै कृष्ण कथा सुख कन्द
उपजय भक्ति अनन्य तेहि मीटे जगत दुष दंद
ध्याण योग तप दान मख पुजा अरु वरत नेम
सकल सीषि तेहि होइ फल कृष्ण कथा जे प्रेम

ईतीश्री भागवते माहा पुराने एकादश्कंधे श्री शुकदेंव परिछीत संवादे भाषा नीवन्ध कृपा रामकृत श्रीकृष्ण वैकूंठ पआन नाम एकतीसमो अध्या ।। ३१ ।। सुभ संम्वत १६५०।

शाके १८१९ । समय नाम........कृष्ण दसम्यों भोम वासरे पोथी एकादस स्कंध समाप्त संपुरन भेल दशपती वाः महेशर दास साधु । सर्म नाम अषाढ़ ताः । रोज सुक के तेआर भएल जो देषा सो लीषा मम दोष न दिअते । सूभ सम्वत १६५० । शाके १८१५ । शन १६२० साल मौजे टीकुआ (कुटिआ) तापापण्डा प्रगना मद्रौआ ।

पोथी दसपती लीपत वाः महेशर
दास साधू दसषत शहिः ।"

विषय-भागवत के एकादश स्कन्ध का अनुवाद । कृष्ण-कथा-वर्णन ईश्वर-भक्ति का माहात्म्य-वर्णन । कहीं-कहीं अव्यक्त ब्रह्म का निरूपण ।

देखिए- "तीन के तनए भए शत एका ।
ब्रह्म चार भए शहीत विवेका ।।" आदि

सर्वत्र भगवद्भक्ति के उपदेश भरे-पड़े हैं । देखिए-

"हरि वीनु रहित शकल जे करमाँ
ते शव जानेहु माण के भरमाँ
श्री मुख आपु कह्यौ जगदिशा
लहै जीव जेही वीधी करिइशा ।।"

उद्धव का ज्ञानोपदेश और गोपियों की अनन्य कृष्ण-भक्ति का वर्णन। सम्पूर्ण पोथी ३१ अध्यायों में विभक्त है । लेखक ने विपयों का वर्गीकरण वड़े सुन्दर ढंग से किया है-

(क) ईश्वर-गुणानुवाद ।
(ख) जाना णारद का वशुदेव कीहां ।
(ग) कवी नाम प्रथमे योगी ने बोले ।
(घ) हरी नामा नाम दूसरा जोगी बोले ।
(च) हंस औतार कथा ।
(छ) भगवत उद्धव जी ।
(ज) सन्तों का हाल वरनन ।
(झ) उद्यौजी का वदरीकाशरम जाना ।

इस ग्रन्थ के लेखक कृपाराम हैं । यह ग्रन्थ भागवत के एकादश स्कन्ध का अनुवाद है । इसका प्रारम्भ सोरठा में हुआ है । सोरठा, दोहा, चौपाई और छन्द-ये चार प्रकार के छन्द ग्रन्थ में प्रयुक्त हुए हैं । भागवत की कथा के अतिरिक्त ईश्वर के अव्यक्त स्वरूप का विस्तृत विवेचन, भागवत के मूलपाठ का स्मरण दिला देता है । उपदेश और कथा-प्रसंग का निर्वाह सुन्दर है । भाषा हिन्दी के प्रारम्भ-काल की है । लिपि-नागरी है । कहीं-कहीं कैथी का भी प्रयोग है । पुस्तक सजिल्द है । यह ग्रन्थ पं० श्रीगणेश चौवे, वँगरी (चम्पारन) से परिषद् के चौवे-संग्रह के लिए प्राप्त ।

भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । पृष्ठ-संख्या-२२ । प्रतिपृष्ठ पंक्तियाँ-लगभग ४४ । आकार-६"× ६" । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

प्रारम्भ- ''श्री सीतारामाय नमः चंवरीक
वरनो बाहयांतर सीव रघुवर सेवकाइ
सीये राम पलपलखत कोटिन मुष वरनत नित कहि न सकहि
सारद विधि सिय स्रुति अहिराइ
मै निज मति हित विलास पिअतह रोजिय पियास चांतकज्यौ
आनंदयेक-स्वाती बुंद पाइ
जामयेक उठि सवार सुखकेर भत दवार बैठी के ये कान्त राम मंत्र जपै भाई......''

मध्य-(पृ० सं० ११) ''नीर्त गान करो वीवीधी वीधी सीअ राम रीझाई
राम सीय रुष परि पुनि वीवीधी वेआरी आई
पीकदान दे दुइ सषी पुनी आचमन कराई
पट दे धुप दीप करी पुनि भोजन अरचाई ३४''

अन्त- ''नीज नीज सेवा अली लगै पुनी पगु सतगुर सेव
प्रम उपध्यासक सो सही जो येही जाने भवे २१
येह सेवा सेवे सदा वीदान होष छन येक
अन्य साधनातर कीचीत्त व्रत अनन्य दृढ़ टेक २२
अस्ट समै सुष भावना पुअनन्य स्रुती नेती
तीनमे सत दोह रचे मन समुझावन हेतु २३
नमे.....कृपा परे पार करे निति प्यार
कृपा जानकीलाल जानकी लहे महल अधीकार २४
मया प्रसाद.....सुष लह्यौ अनादी.....
रह्यो घमंडि रस.....कह्यौ प्रकास नीवास
इती भावना.......क्रीपानेवासजी संपुरन श्री रघुनन्दन जी १''

विषय-राम-विषयक स्फुट कविता । प्रारम्भ के तीन जीर्ण तथा कीटविद्ध पत्रों में जीवन, ब्रह्म, पुनर्जन्म, गुरुभक्ति, सन्तपूजा, वेद-प्रामाण्य, निराकार-भक्ति-भर्त्सना और राम-भक्ति तथा रामचरित-कथन के अभिप्राय के सम्वन्ध में विवेचन । वाद में सखियों द्वारा राम को जगाना, नृत्य, वाद्य आदि का आयोजन और सीता का विवोधन । जम्हाई और आलस्य के वाद नित्य-क्रिया । फिर सखियों द्वारा नृत्य आदि प्रस्तुत करना । वन तथा प्रमोदकारी वस्तुओं का वर्णन । ग्रन्थ के पठन-पाठनादि का फल ।

टिप्पणी १-यह ग्रन्थ कविवर रामसखे द्वारा रचित है । प्रारम्भ के पृष्ठ खण्डित हैं । पूरा ग्रन्थ तीन भागों में विभक्त है । पृ० सं० १ से ५ तक कवि ने भगवद्भजन के

सम्वन्ध में अपने विचार दिये हैं । दूसरे भाग के वारह पृष्ठों में रामचरित पर स्फुट छन्द हैं । तीसरे भाग के पाँच पृष्ठों में रामचन्द्र तथा सीता का वाटिका-विहार वर्णित है ।

२-ग्रन्थकार का कुछ नामोल्लेख-मात्र है । नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज-विवरणिकाओं के अनुसार इनकी जन्मभूमि जयपुर थी, साधु होकर अयोध्या में रहने लगे थे और कुछ दिन चित्रकूट में भी रहे थे । सं० १८०४ वि० के लगभग वर्त्तमान थे। इनकी अन्य सात रचनाओं का पता चला है । मतान्तर से ग्रन्थकार अट्ठारहवीं शती के मध्य में विद्यमान थे । यह ग्रन्थ नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी खोज में मिला है। दे० खो० वि०, संवत् १६०५, ग्रं० सं० ८० ।

३-ग्रन्थ की लिपि प्राचीन और कैथी से प्रभावित है । प्रारम्भ के पृष्ठ खण्डित है तथा वीच के पृष्ठ कीटविद्ध हैं । यह ग्रन्थ श्रीअवधेन्द्रदेव नारायण (दहियावाँ, छपरा) के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

११७. नीति-शृंगार-शान्त-शतक-ग्रन्थकार-मनोहरलाल । लिपिकार-× । अवस्था-अच्छी, पुराना कागज । पृ० सं०-२६ प्र० पृ० पं० लगभग-१७ । आकार-६" × ६"। भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

प्रारम्भ- "बड़े-बड़े अभिमान कर खोय गये जाग माहि ।।
महिरावण रावण सकल कौरव दीखत नाहि ।। ४६ ।।
भयें अधिक अधिकारके यों मति कहियो में ।।
मरत अजा की खालसों कूट कहावत तैं ।। ४७ ।।
दयो दई अधिकार तौ अहंकार मति लाइ ।।
अहंकार में आ गयो फिर धिकार रहि जाइ ।। ४८ ।।
कुटिल नरन में कुटिलता स्वान पूंछसम जानि ।।
गडी रहे सौ वरष तक पूँछ न छोडे वानि ।। ४६ ।।
ज्वारी विभचारी छली इनसों मति करि मोह ।।
सदां झूठ के पात्र यं करनों उचित विछोह ।। ५० ।।"

मध्य-(पृ०सं० ३३) "अथ चित्रदर्शन ।।
छिनक छिनक हियलाय तिय निरखि मित्र को चित्र ।।
चित्र लिखीसी है रही लखो जु चित्रविचित्र ।। १२१ ।।
अथ प्रत्यक्षदर्शन ।।
लाखों लाज कुल छांडि अव बुरैं कहौ सब लोग ।।
दिन रैंन पियसांमरो सदा निरखिवे योग ।। १२२ ।।

अथ श्रवणदर्शन ।।

सुनत प्रशंसामाधुरी थक्ति भई नहि चैंन ।।

वह चितौन हँसिवोलिवौ कब देखो निज नैंन ।। १२३ ।।

इति श्री शृंगारस मनोहरकृत संपूर्णम्"

अन्त- "करि विरोध श्री राम सों लह्यौ कौन सुख तात ।।

रावण महरावण मरे सबकुटंवन भ्रात ।। ६६ ।।

अरेदेखिरा कहत ही सकल पाप बतरायँ ।।

चलौ भाजि नातर तुरत परम काल गिरजायँ ।। १०० ।।

शांत शतक पूरण कियो सकल छांडि मद मोह ।।

कवि कोविद निज कृपातैं सोधि लेहु तजि कोह ।। १०१ ।।

इतिश्री शांत शतक मनोहर लाल कृत संपूर्णम् ।। शुभम् ।।"

विषय-"नीति, शृंगार और वैराग्य ।

टिप्पणी १-कवि मनोहरदास की सात कृतियाँ इस संग्रह में है । उक्त तीनों शतकों के अतिरिक्त-(१) पद, (पाँच); (२) बारहखड़ी, (वयालीस पद); (३) कवित-श्लेष, (बीस) और (४) होली, (नौ पदों के बाद खण्डित)-ये चार रचनाएँ हैं ।

ग्रन्थ के प्रारम्भ के (नीति-शतक के) छह पृष्ठ (चौआलीस पद) खण्डित हैं। कवि ने अपने तथा ग्रन्थ-रचना-काल के सम्बन्ध में कोई संकेत नहीं किया है, किन्तु 'बारहखड़ी' के अन्त में-

"जुगदृग शशिनव वामगति संवत विक्रम जानि ।।

श्रावन शुक्ला तीन तिथि भृगुवासर पहिचानि ।। ४२ ।।

इतिश्री मनोहर कृत बारह खड़ी संपूर्णम् शुभम्" लिखा है ।

२-नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) की खोज-विवरणिका (सं० १६६-३६५ वि०; सन् १६०६-५ ई०) में भी एक 'मनोहरदास निरंजनी' और उनके दो ग्रन्थ (ज्ञान-मंजरी और वेदान्त-परिभाषा) की चर्चा है । इनका रचना-काल सं० १७१६ और १७१७ वि० तथा लिपिकाल सं० १८४० वि० है । सभा के खोज-विवरण में इनके सम्बन्ध की अन्य कोई चर्चा नहीं है । सभा को इनके निम्नलिखित अन्य ग्रन्थ भी खोज में मिले हैं-षट्प्रश्नी, शतप्रश्नोत्तरी, ज्ञानवचन (दि० खोज-विवरण, सन् १६००, ग्र० सं० ५८; सन् १६०३, ग्र० सं० ८३, ८४ और १५२; सन् १६०६-८, ग्र० सं० २६३ डी, २६३ सी और २६३ ई) । सम्भवतः, प्रस्तुत ग्रन्थ के ग्रन्थकार और सभा के खोज-विवरण में लिखित ग्रन्थकार एक हैं । उपर्युक्त बारह-खड़ी के उद्धरण में 'जुग दृग शशि नव' से रचनाकाल का जो संकेत मिलता है, उसमें 'शशिनव' का अर्थ नवीन चन्द्र करने से सत्रहवाँ चाँद होता है और तब कवि का समय, १७२४ वि०, सभा के खोज-विवरण में निर्दिष्ट रचनाकाल (सं० १७१६) के समीप प्रतीत होता है । इनके

सम्बन्ध' में नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) से प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों की खोज का पिछले पचास वर्षों का परिचयात्मक विवरण' की पृ०-सं० ४१ और यृ०-सं० २७५, २७६ तथा नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) से प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (पहला भाग) की पृष्ठ-सं० ११६ द्रष्टव्य है ।

यह ग्रन्थ श्रीअवधेन्द्रदेव नारायणद, हियावाँ, छपरा (सारन) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

११८. रामायण (सुन्दर कांड)-ग्रन्थकार-तुलसीदास । लिपिकार-लाला शिवचरण। अवस्था-प्राचीन देशी कागज, पूर्ण । पृ०सं०-३६ । प्र०पृ०पं० लगभग-३६ । आकार-६³⁄₄" × ५¹⁄₄" । भाषा-(हिन्दी) (अवधी)। लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १८७१ वि०, माघ-सुदी त्रयोदशी, रविवार ।

प्रारम्भ- "श्रीगनेसजीवसहाऐ श्रीरामजीवसहाऐ श्रीहनुमानजीवसहाऐ
श्रीठाकुरजीवसहाऐ श्री पोथीसुंदरकाडली......

दोहा- सुमीरी सीभु भवानी रामनामजी........छ
हरिदैऐ कहो जोरी जुगपानी : दीजै भगवती जो वीमलजसः

चौपाई- जामवंत के वचन सुहा.....
सुनी हनुमान हीरदै अतीभा.....
तौलगी मोही परीखीहहु
सही दुख कंदमुलफल खाइ"

मध्य-(पृ०सं० २५)

"चौपाई-वेद पुरान स्रुती समबानी
कही बीभीखन नीती बखानी
सुनत दसानन उठा रीसाइ
खल तोही म्रीतु नीकट चल आइ
जीअसी सदासठ मोर जीआवा
रीपुकर पछमुट तोही भावा
कहसी न खल अस को जगमाही
भुजबल जाही जीत मैं नाही"

अन्त-"दोहा"- सकल सुमंगल दाऐक रघुनाएँक गुनगान
सादर नहीते भगवतरही सीधु वीना जलजान
इतीस्री पोथी सुंदरकांड संपुरन जो देखा सो लीखा मम
दीख न दीअते पंडीत जन सो वीनती मोरी टुटल आखर
लेव सव जोरी समत १८७१ साल समे माघ सुदी

तीरोदसी रोज ऐतवार के तैयार भइल आगरे कीलामे दसखत लाला सीवचरन सीघ काऐथ सन् १२२९ साल''

टिप्पणी-प्रकाशित अन्य प्रतियों से कई स्थानों पर पाठान्तर हैं । ग्रन्थ की लिपि प्राचीन है । यह ग्रन्थ परिषद्-संचालक आचार्य शिवपूजन सहायजी के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

११६. आयुर्वेद-सम्बन्धी ग्रन्थ-ग्रन्थकार-× । लिपिकार-× । अवस्था-खण्डित । लिपि-प्राचीन । पृ०सं०-६२ । (कुल पृ०पं० ११६, किन्तु ६४ पृष्ठ तक खण्डित) प्र०पृ०पं०- लगभग-४२ । आकार-६½" × ६" । भाषा-(हिन्दी) । लिपि-नागरी-कैथी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

प्रारम्भ- ''श्रीगणेशाय नमः अथ पारा मारने की वीधी-हीरा काशीश तोलाः २ काचकानोनोनतोलाः २ जवाषार तोलाः २ शोराकलमीः २ तोला पारातोलाः १ छोटी नोनी काशागतोलाः २ शबको षल करै नोनी के शागमो षल करै जब नोन शुषै बुकनी होए तब आधी बुकनी फेर डालैः नीमुन्द्र करै मुन्दै तब शात प्रत कपरकुट माटी कदु प्र चढावै जब पुव माटी शुषै तव कमर भर गडहा षोदै उशमो कडरा आधा भर तव कदु रषै कडरा तब फेर भरैः कदु को षडा रखैः वारह पहर के आचदे तव शुद होए पारा शव तब चावर भर मगही मगहीपानपर धरकेषाऐ छत्तीश रोजगाऐ भुष लगै षटावादी वारै''

मध्य-(पृ०स० ८६) ''रकतवीकार का घीव

कुष्ठजायेठाशंभालुकापत्ता तोला ८ जैइत्ताका पत्तातोला ४ रेगनीकाजरकेछालतोला ८ जीरतोला ३ ।। कालीमुशलीकी बीज तोला २ पीपरकेछालके राष तोला २ चैइतारी घीव शेर शवा ऽ१ । कराहीमोघीव चढाकै शुधकरै आचदे अकवन का लकरी काकगहीआ का लकरी शो चलावे पहीले जइत का पात दे तव रेगनी का जर दे तव शहजनेका पातदे तब शंभालु का पातदे तवकेशरमोशाचा चले तव गोआलगेरु तोला १ चारघरी षलकरे पेफर मीरीचडाल के.... तब कराही उतारकै पेफर शंभालुका पत्ता दे तब जीरा मीरीचपीपर की रष तुलशीका बीज शोहजने के रश मो पीशे तबदे मंदी आचदें तबउतारकैरगरै जब आधा रहै तब अकरकराहा डाले पुव चलायेकेघरीअधापीछे-उतारले वाशनमोरषै शुवा ही षाय तो.......''

अन्त- ''शुपारी शो षाए तो अजीरन जाए ।। ३८ ।। नीर गुडी शो षाए तो कोठ जाए ।। ३६ ।। रत्ती भर कशतुरी २ ।। भर शहत शो षाए तो दुना भुष होए ।। ४० ।। करकरा शो पाए तो नामर्द मर्द होए ।। ४१ ।। तमाम......... शर्वशीतजाए ।। शुंबुल माशा १ शींगीरीक माशा २ ।। गोंद बबुल का माश ४ । अदरष के रश में गोली बनावे शरशो प्रवान शीतजोर वाले को देवै चंगाहोए अजमुदे है''

विषय-पारा मारने की विधि, हरताल मारने की विधि, कुष्ठरोग-निवारण- विधि, ताँवा पकाने की विधि, राँगा मारने की विधि, जस्ता मारने की विधि, ताँवा- भस्म की तरकीब, जमालगोटा शोधने की विधि, सीसा शोधने की विधि, रक्तविकार का तेल, रक्तविकार का घी, रक्तविकार की दवा, सुनबहरी का यत्न, रसचिन्तामणि की गोली, सोहागवटी, रसपर्पटी आदि औषध के निर्माण तथा रोगोपचार की विधियाँ ।

टिप्पणी-प्रारम्भ के चौवन पृष्ठ खण्डित हैं । अपूर्ण होने के कारण ''ग्रन्थ पुष्पिका' के अभाव में ग्रन्थकार, लिपिकार और उनके समय, स्थान आदि का संकेत ग्रन्थ में नहीं है। ग्रन्थ की लिपि अस्पष्ट और पुरानी है । 'ख' के लिए 'ष' और 'य' के लिये नीचे विन्दु देकर 'य', 'स' के लिए 'श' तथा 'ज' के लिए केवल 'य' का प्रयोग लिपिकार ने किया है । यह ग्रन्थ मुँगेर-जिलान्तर्गत वरबीघा (शेखपुरा) ग्रामवासी श्रीशंकर प्रसाद 'आर्य' के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

१२०. वन-यात्रा ग्रन्थकार-× । लिपिकार-×। अवस्था-अच्छी प्राचीन, देशी कागज। पृ०सं०प्र०-७६ । पृ०पृ० पं० लगभग-२२ । आकार-६" × ५½" । भाषा-हिन्दी (व्रज) । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-×।

प्रारम्भ- ''श्री कृष्णाय नमः श्री गोपीजनवल्लभाय नमः ।
अथ वन यात्रा परिक्रमा व्रज चौरासी कोस की लिख्यते ।
प्रथम श्री गोशाई जी करी सो श्री गोशाई जी अपने सखन सो कहते हैं श्री गोशाई जी
श्री संवत् १६०० भाद्रपद वदी १२ द्वादशी को सैन आरती करिके पींछे श्री गोशाईजी मथुरा जी को पधारे व्रज की परिक्रमा करिबे को सो तहा प्रथम श्री मथुरा जी में विश्राम घाट है तहाँ कस को मारि कै श्रीकृष्ण ने विश्राम कियो है...........''

मध्य-(पृ० सं० ३८)

''यह कीटवन की लीला है ताके आगे खीर सागर सेषसाई हें तहाँ व्रज भक्तननें श्री टाकुर जी से कह्यो जी सीर सागर में श्री लक्ष्मीनारायण कौन प्रकार तपस्या करत है सो हमको दिखावो भष

श्री वलदेवजी तो शेषरूपभये' तिनकी सिज्या ऊपर आय चतुर्भुज स्वरूप भये के शंखचक्र स्वरूप भये के शंखचक्र गदा मल्लेके पाटे नाभि कमल मेते व्रह्मा आदि देखाये तव देवता आनमो स्तुति करन लागे............."

अन्त- "श्री गोसाईजी की वैठक व्रज में ।। ६ ।।

श्रीकुंड पै १ रासोली मे २ गोपालपुर में ३ सुरभी कुंड पै ४ पररासोली ५ संकेतवट पै ६ टीकरी पै ७. मानकसिला पै ८ श्री गोकुलजी में ६ व्रज में कुंड ८४ विमल कुंड १ धर्म कुंड २ यज्ञ कुंड ३ पंचतीर्थ कुंड ४ मनकर्णिका कुंड ५ यशोदा कुंड ६ निवास कुंड ७ लंका कुंड ८ मनकामना कुंड ६ श्वेतबंध रामेश्वर कुंड १० महोदधि कुंड ११ क्षीरसागर कुंड १२ जलविहार कुंड १३ प्राग कुंड १४ पुस्कर कुंड १५ द्वारिका कुंड १६ घोखराना कुंड १७ गोपी कुंड १८ किशोरी कुंड १६ मोती कुंड २० नृसिंह कुंड २१ सरस्वती कुंड २२ परमदारा कुंड २३ अभिमत कुंड २४ रुद्र कुंड २५ सूकरा कुंड २६ गुलाल कुंड २७ संकेत कुंड २८ सुरभी कुंड २६ सीतल कुंड ३० रंगीलो कुंड ३१ छवीली कुंड ३२ दवीलो कुंड ३३ हठीलो कुंड ३४ सेत कुंड ३५ सूर्य कुंड ३६ विसाषा कुंड ३७ विश्राम कुंड ३८ भोग कुंड ३६ संकर्षण कुंड ४० मानसी कुंड ४१.......अवंती कुंड ८२ गरुड़ कुंड ८३ व्रजवल्लभ कुंड ८४ ।। इतिश्री वनयात्रा परिक्रमा व्रजचौरासी कोस की संपूर्णम् ।"

विषय-मथुरा-परिक्रमा, मधुवन, कामोद-वन, बहुला-वन, वसाई ग्राम, गोपालकुंड, बरसाने, क्षीर-सागर, द्रुम वेलि, भूषण-वन, सवई ग्राम, गरुड़गोविन्द ग्राम, सोलह-वन, बुढ़िया का खेरा और महावन का वर्णन तथा विस्तृत चित्रण ।

टिप्पणी-यह ग्रन्थ प्राचीन लिथो (प्रस्तराक्षर) में है । ग्रन्थ की लिपि-शैली प्राचीन है। प्रारम्भ या अन्त में ग्रन्थकार और लिपिकार का नामोल्लेख नहीं है । ग्रन्थ में स्थान-स्थान पर चित्र भी दिये हुए हैं, जो व्रज के विशेप स्थानों, ग्रामों, वनों आदि के प्रतीत होते हैं। ग्रन्थ में मथुरा तथा उसके आसपास के विविध स्थानों की विस्तृत सूचना संकलित है ।

यह ग्रन्थ श्रीअवधेन्द्रदेव नारायण, दहियावाँ, छपरा (सारन) के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

१२१. **रामचरित-मानस (सटीक)**-ग्रन्थकार-गोस्वामी तुलसीदास । टीकाकार-शुक्रदेव। लिपिकार-रामविहारी शुक्ल । अवस्था-पुराना कागज, लीथो-मुद्रण। पृ०सं०-६३४ (पत्र) । प्र० पृं० पं० लगभग-१६ । आकार-७¼" × १४" । भापा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सन् १८८७ ई० ।

प्रारम्भ- ''भूमिका श्रीमते रामानुजायनमः । अथ मंगलाचरणं लिख्यते ।
जयति रघुवंशतिलकः कौशल्याहृदयनंदनो रामः ।
दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ।।
दूर्वादलद्युतितनुं तरुणाब्जनेत्रं हेमाम्बरं वरविभूषणभूषितांगम् ।
कन्दर्पकोटिकमनीयकिशोरमूर्त्तिं पूर्त्तिम्मनोरथभवां भज जानकीशम्।।

(मूलग्रन्थ)- यान्माय वशवर्त्तिविश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवाः सुरा
यत्सत्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः ।
यत्पादप्लवमेकमेव हि भवांभोधेस्तितीर्षावतां
वन्देहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम् ।। ६ ।।
नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि ।।
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथाभाषानिबन्धमतिमंजुलमातनोति ।।
।। सोरठा ।। जेहि सुमिरित सिधि होइ गणनायक करिवरवदन ।
करहु अनुग्रह सोइ वुद्धिराशि भगुण सदन ।। १ ।।''

''**(टीका)** इस छठे श्लोक में तुलसीदास अने इष्टदेव श्रीरामचन्द्र को उनका परात्परत्व, सव्वेश्वरत्व, जगत्कारणत्व, बन्धमोक्षप्रदत्व और सत्त्वत्व दशति हुए अभिवन्दन करते हैं जिस ईश्वर की प्रबल माया के बशवर्त्ती हैं ब्रह्मा, रुद्र इत्यादि समस्त देव और दानव और अखिल विश्व जैसा कहा है ।।''

मध्य-(पृ० सं० ३२५) **''चोपाई-** सुनि मुनि वचन भरत हिय शोचू ।
भयउ कुअवसर कठिन सकोचू १
जानि गरुइ गुरु गिरा वहोरी । चरण वन्दि वोले कर जोरी २
शिरधरि आयसु करिय तुम्हारा । परमधर्म यह नाथ हमारा ३
भरत वचन मुनिवर मन भाये । शुचि सेवक सब निकट वुलाए ४

''**(टीका)**-ऐसे भरद्वाज मुनि के वचन सुनते ही भरत के हृदय में बड़ा शोच हुआ कि यह तो इस कुसमय में कठिन संकोच हुआ १ फिरिई वड़ों की आज्ञा को गरुइ जानि उनके चरणों को प्रमाण करके बोले २ आपकी आज्ञा को माथे मानिकर कीजिये यही हमारा परम धर्म्म है ३ भरत के वचन सुनिकर भरद्वाज ने सेवकों को वुलाया और कहा ४''

अन्त-''।। दो० ।। मो समदीन न दीन हित तुम समान रघुवीर ।
अस विचारि रघुवंशमणि हरहु विषम भवभीर ।।
कामिहिं नारि पियारि जिमि लोभिहि प्रिय जिमिदाम ।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहुँ मोहि राम ।। ५० ।।

''**(टीका)** अब गुसाईं जी अपने जो दीनतादि सम्वन्ध रामस्वामी से हैं सो दरशाते हुए प्रार्थना करते हैं कि रघुवीर स्वामी मेरे समान तो इस संसार में दीन नहीं है और आपके समान कोई दीन हितकारी नहीं है इसी प्रकार और अनेक सम्बन्ध....विचारि करि हे रघुवंश

मणि इस महादुस्सह जन्म जरामर्रण भवभीर को हरिये ।।...यह उत्तर काण्ड का तीसरा खण्ड हुआ और ग्रन्थ भी परिपूर्ण हुआ ।।......इति श्री शुकदेवकृते भाषा टीका मानस हंस भूषणे रामचरित्र मानसे उत्तर काण्ड सप्तमस्सोपानस्समाप्तः ।।"

विषय-राम-काव्य ।

टिप्पणी-इस ग्रन्थ में प्राचीन लीथो-टाइप में मुद्रित और प्रचलित रामचरितमानस से, अनेक स्थलों पर, पाठान्तर है । टीका की शैली पुरानी है । टीकाकार ने प्रारम्भ में बारह पृष्ठों की एक भूमिका दी है, जिसमें प्रत्येक काण्ड में प्रयुक्त छन्द आदि की संख्या तालिका द्वारा विवृत हुई है । साथ ही 'मान-सरोवर' का चित्र वनाकर भी संख्याओं का परिदर्शन कराया गया है । टीकाकार ने बीच-बीच में अनेक उद्धरणों तथा प्रमाणों का भी उल्लेख कर रामायण-सम्वन्धी दार्शनिक तत्त्वों का विवेचन किया है । यह ग्रन्थ पं० श्री बदरीनारायण शर्मा, आर्य-निवास, सन्दलपुर (मुँगेर) के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

१२२. अमर फरास-ग्रन्थकार-लक्ष्मीसखी । लिपिकार-जनकराय । अवस्था-अच्छी । पृ०सं०-२२२ । प्र० पृं० पं० लगभग-४० । आकार-६¼" × ८¼" । भाषा-हिन्दी (भोजपुरी) । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

प्रारम्भ- "गइल बसन्त अब आइल गरमीयाँ । चलु भजु छोड़ि दे जाल वो शरमीयां ।।
ना तव भले तोरे रोजा मोहरमीयाँ । नीकली कइल उजे तीज वो पवनीयां ।।"

मध्य-(पृ० सं० १११) "अमहक केहु ना करी तोरे साहारा ।
हीत मीत बात का गांहारा के गांहारा ।।

जेह दिन होइये तु शरीर के वाहारा । केहु ना खोजी जे गइले कवना ठाहारा ।।
पाकल कुटल खेत वा चरत चाहारा । साखी वो शब्द ले तुं चढ़की वो पहारा ।।
लछिमी सखी नात आइल वा हाहारा । एह वेर मखे भा वीहान भीनुसारा ।। ४३ ।।

अन्त-"वानीवार ओवार समुझावत कोटा । वाकी बुकल जैसे जैसे आदी के सोठा ।।
नात दुर होउजा ओने आँखी का ओटा । का तु वारे वदन देखावत मोटा ।।
तोरा ले अधिका लीग रहल ह ढोठटा । जेकरा रल सोना के थारी वो लोटा ।।
मर सीरी गैले घर भ्मह वा लीटा । टूटी गैले कुरसी गइले ओटा ।।
लक्षिमी सखी कैसन कैसन कोठा । एक दू के के कही कोटिन वा काठा ।।"

विषय-सखी-मत का दार्शनिक विवेचन ।

टिप्पणी-यह ग्रन्थ 'सखी-मत' के प्रवर्त्तक श्रीलक्ष्मीसखीजी के भजनों का संग्रह है। अमर सीढ़ी, अमर राग, अमर कहानी और अमर विलास-ये इनके अन्य भजन गीतों के प्रकाशित संग्रह हैं । इनके अतिरिक्त होली, ककहरा, कजली, चातुर्मास, झूमर, सोहर और झूलना आदि पदों के छोटे-छोटे संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं । इनका जन्म बिहार प्रान्त के सारन जिले के अमनौर ग्राम में हुआ था । प्रारम्भ में ये कबीरपंथी साधु थे । बाद सरभंग-सम्प्रदाय के संत

ज्ञानीदास के साथ विचरने लगे । कुछ दिनों तक उक्त सम्प्रदाय में रहने के वाद इन्होंने ज्ञान, वैराग्य और भक्ति से समन्वित एक नये पंथ 'सखी-मत' का प्रवर्त्तन किया । इन्होंने अपने नाम के पीछे 'सखी' शब्द का प्रयोग किया है । ये एक पद्य में लिखते हैं-

'लक्षिमी सखी धरु भेष जनाना । चलु भजु पार ब्रह्म भगवाना ।'

इनकी रचना में इसी प्रकार आत्मा-परमात्मा के स्वरूप का विवेचन है । इनका रचना-काल सं० १६६६ वि० है । इनके पंथ के प्रधान उत्तराधिकारी कामतासखीजी छपरा-कचहरी स्टेशन (उत्तर-पूर्वी रेलवे) के निकटस्थ वगीचे में स्थित सखी-मठ में निवास करते हैं । इनकी रचना में कहीं-कहीं कवीर से भी अधिक कठोर, उद्धत एवं अश्लील शब्दों का प्रयोग हुआ है ।

यह ग्रन्थ बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् (पटना) की ओर से की गई मूल ग्रन्थ की प्रतिलिपि है । सखी-मत के वर्त्तमान महन्थ कामतासखी के सौजन्य से यह ग्रन्थ प्राप्त हुआ।

१२३. नाममाला-ग्रन्थकार-नंददास । लिपिकार-जयनन्दनसिंह । अवस्था-पुराना मोटा देशी कागज । पृ०सं०-१५ । प्र० पृं० पं० लगभग-५६ । आकार-८" × ११" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-ज्येष्ठ शुक्ला दशमी, सं० १६४१ वि०, शनिवार ।

प्रारम्भ- "श्री गनेसाऐनमंह अथ मानमंजरी भाषानाम माला

दोहा- तंनमामीपद परमगुर कीश्नु कमल दल नैंन
जग कारन करुनारनव गोकुल काको अैन १
उचरी सकत नहीं संसक्रीत जानेवो चाहत नाम
तींनलगीनंद सुकतीजथा रचतनामकीदाम २
गुँथीन नाना नाम को अमरकोष के भाई
मानवती के मान पर मीले अर्थ सव आई"

मध्य-(पृ०सं० ७) "दुर्गानाम । उमा । अप्रना । ईश्वरी । गौरी । गौराजा । होई ।
काली । कुंडी अंवीका सीवा । भवानी । सोई ।
....।
मा आजेही आधारजगवीश्तारत है भांम ।।"

अन्त- "जुगल नाम । जुगल जुगमजुग दोद दोय उभय मीथुन वी वी वीअ ।
जुगल कीसोर वसौ सदानंददास के हीअ ।।

ऐतिश्रीनाममाला जुगलकीसोर प्रेमनीरूपननंददासक्रीत मानमंजरी संपुरनसमांपतह जो देखासोलीखम्मदुखन नेदीअतेदसखत श्री जैनदनसीघ शंवत १६४१ शाल जेठ सुदी दशमी रोज सनोवार दोधरी दीन वाकी रहा था तीशवखत तईआर भैआ श्री राम जै राम जै जै राम।"

विषय-शब्द-कोष ।

टिप्पणी १-इस ग्रन्थ का नाम 'मानमंजरी' भी है । इसकी प्रति नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी खोज में मिली है; दे० खो० वि० १६०२, ग्र० सं० २०६; खो० १२ १३,

ग्र० सं० १५४ । खो० वि० १६०६-११, ग्र० सं० २०८ सी०; खो० वि० नि० ६२६-२८, ग्र० सं० ३१६ एन् और खो० वि० १६२६-३१, ग्र० सं० २४४ ई-एफ । नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा प्राप्त हस्तलेख इससे प्राचीन है । यह परिषद् को खोज में प्राप्त हुआ है; दे० प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण, सं० २, ग्र० सं० ८८ और परिषद् में सुरक्षित हस्तलेख का समय है १८५८ वि० सं० ।

२-इसके ग्रन्थकार, नागरी-प्रचारिणी सभा के खोज-विवरण (दे० खो० वि० १६२६-२८ और १६२६-३१) के अनुसार, प्रसिद्ध कवि तुलसीदास के भाई थे । इनका में अष्टछापसातवाँ स्थान था । ये स्वामी विट्ठलदास के शिष्य थे और जाति के ब्राह्मण थे । ये सं० १६२४ वि० के लगभग वर्त्तमान थे ।

३-ग्रन्थ की लिपि-शैली पुरानी और कैथी से मिलती-जुलती है ।

यह ग्रन्थ गया जिला-पुस्तकालय-संघ के मन्त्री, दरियापुर, नवादा (गया)-निवासी श्रीनागेश्वरप्रसाद नगीना के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

१२४. सूर-सागर (राग-कल्पत्तुम)-ग्रन्थकार-सूरदास । लिपिकार-× । अवस्था-अच्छी, पुराना कागज । पृ०सं०-३१६ । प्र० पृं० पं० लगभग-३६ । आकार-८½" × १०½" । भाषा-हिन्दी (व्रज) । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

प्रारम्भ- "अथसूरसागर रागसंग्रहकृत । श्रीकृष्णायनमः ।।
राग सागरोद्भव राग कल्पद्रुम ।।
अपनो दीनत्व प्रभुजी के महात्म्य तथा विनैंपत्रिका ।। प्रारंभ
राग विलावल ।। करनी करुना सिंधु की कहत न आवे ।।
कपटतरे परसेवकी जननी गति पावे ।।
दुखित गजेंद्र हि जानि के आपु न ऊठि धावे ।।
कलि मे नाम प्रगट नीचता की छानि छवावे ।।
ऊग्र सेन की दीनता प्रभु के जिय भावे ।।
कंस मारि राजा कियो आपुन सिर नावे ।।
वरुण पास ते वृज पतिहि छिन में छिटकावे ।।
वहुत दोष मो सूर कहँ ताते गहरू लगावे ।। १।।

मध्य-(पृ० सं० १५८)" ।। राग गौरी ।।
सुनहु सखी या को कुलधर्म ।। रहत श्यामा अधरनतें लागी को जाने यह मर्म।।
वे वरषत जल चरन संपूरन परस लेत अवगाह ।।
चातक सदा निरास रहत है एक वून्द को चाह ।।"

अन्त- "सुनि तिय वचन श्याम सुख पायो । ऐसे कहि हरि मान छुड़ायो ।।
ताय मानहरिए से छुड़ायो भक्त हित लीला करी ।।
निगम नेति अपार गुण सुख सिंधु नटनागर हरी ।।

यह मान चरित पवित्र हरि को प्रेम सहित जु गावहीं ।।
करहिं आदर मान तिनको संतजन सुख पावहीं ।।
राधा रसिक गोपाल को कौतूहल रसकेलि ।।
वृजवासी प्रभुजनन कों सुखद कामतरु वेलि ।।
सुफल जनम है तास जे अनुदित गावत सुनत ।।
तिनको सदा हुलास सूरदास प्रभु की कृपा ।।

इतिश्री कृष्णानन्द व्यास देवरागसागरोद्भव सूरसागर राग कल्पद्रुम रासलीला संपूरन ।।"

विषय-सूर-साहित्य ।

टिप्पणी-(क) व्रजभाषा के सुप्रसिद्ध कवि, वल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव भक्त और ष्टछाप के कवियों में प्रमुख श्रीसूरदासजी के पदों का संग्रह । हस्तलेख में ग्रन्थ कथा पूरा नाम है-'सूरसागर रागलीला कल्पद्रुम' । ग्रन्थ मुख्यतः (१. 'विनयपत्रिका रागकल्पद्रुम', २. 'दानलीला कल्पद्रुम', ३. 'अनुरागलीला कल्पद्रुमु', ४. 'रागलीला कल्पद्रुम', ५. 'मुरलीलीला कल्पद्रुम', और ६. 'रासलीला कल्पद्रुम') छह खण्डों (शीर्षकों) । में विभक्त है । अन्य प्रतियों से इसमें कई स्थलों पर पाठभेद है ।

(ख) ग्रन्थ की लिपि पुरानी और अस्पष्ट है । लिपिकार ने अपने नाम तथा लिपिकाल का संकेत नहीं किया है ।

(ग) इसके और भी हस्तलेख परिषद्-संग्रहालय को प्राप्त हुए हैं । विवरण के लिए दे० प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण, खंड १, ग्रं० सं० ८१ और खण्ड २, ग्रं० सं० ३६ और ८० । विशेष विवरण के लिए बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से और प्रकाशित विवरण के दूसरे खण्ड के 'ग्रन्थकारों का संक्षिप्त परिचय' की सोलहवीं क्रम-संख्या द्रष्टव्य ।

यह ग्रन्थ श्रीनागेश्वरप्रसाद नगीना, दरियापुर, नवादा (गया) के सौजन्य का प्राप्त हुआ ।

१२५. लघुरस-कलिका-ग्रन्थकार-ललितकिशोरी । लिपिकार-कुन्दनलाल । अवस्था-अच्छी, लीथो-मुद्रण । पृ०सं०-५६४ । प्र० पृं० पं० लगभग-२१ । आकार-६½" × १०" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी, कैथी-लिपि का काल-सं० १६३५ वि० ।

प्रारम्भ- "श्री राधारमणचरणकमलेभ्योनमः श्रीकृष्ण चैतन्यपाद पद्मेभ्यो नचत्र अथ लघुरस कलिका ललित किशोरी विरचिते लिख्यतं पद रागसहाश नमो नमो श्री शची किशोर अथ यो रासविलास प्रेमरस उदेकित करुना की कोर वलि वृन्दावन चंद्र प्रकश्यो पतितन अन्ध हिये वरजोलय ललित किशोरी मोसी कुटिलै दीनों सरवस बिना निहोरो

नमो नमो श्री भटगोपाल प्रगटे श्री वृन्दावने जिनहित शसि श्री
राधारमन लाल वजें विविधिसु रवाजन वीना मुरली महुवर डमरू
करताल ललित किशोरी गोपी निरतहिं मधुरे गावहिं गीत रसाल ।।२।।"

मध्य-पृ०सं० २८२) "रागकाफी
खेलत होरी भरे उमंगन ।।
भजतमारि पिचाकारी रसिया दुरतल तन कुंजन कुअसंगन ।।
पीछो करत कमोरीलीने ललित किशोरी भरीतरंगन ।
चूमत मुष उरलाय विहारी ढोर तरंगलाडिली भंगन ।। ६२१ ।।"

अन्त- "।। रागपरज ।। चांपत चरन तन कोंष तउ राने
मन मोरपच्छ सीस लै पगन पर सावही ।।
आवतन मुखा बात ढोरत वसन गात
प्यारी जिहि ओर मुरै तहीं ढरी आवही ।।
मान मान त्याग मान नाहि नाहि छोड़ि वान
हेरि नेक प्रान प्यारो कैसिक मनावही ।
होठन मुसक प्रिया आतुर मिली पियै
भुजन विशाल भरि अंक उर लावही ।। २१३३ ।।
इति मान प्रसंग सम्पूर्णम् ।। इति श्री ललित किशोरी विचरित लघुरस
कलिका द्वितीय भाग समाप्तम् ।"

विषय-राधाकृष्ण का शृंगार और प्रेम-वर्णन । वृन्दावन-शोभा, प्रिया-प्रीतम-जागरण, प्रातःकाल-वर्णन, नव अनुरागादि, स्नान को गमन, पनघट-प्रसंग, मार्ग में मिलन, जलकेलि, शृंगार-रचना, शृंगार-शोभा, श्रीअंग-शोभा, परिहास-विलास, जुगलछवि, राजभोग ब्यालू, आचमन, मंगल-आरती, धूप-आरती, पाशाकेलि, होरी, हिंडोरा, फूलवीनन का सांझी, दान और मान आदि शीर्षकों में रचना ।

टिप्पणी-(१) इस ग्रन्थ के कर्त्ता खोज में नवोपलब्ध कवि प्रतीत होते हैं । नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) के खोज-विवरण के अनुसार ये स्वामी हरिदास की शिष्य-परम्परा में हैं । इनका मन्दिर 'शाहजी का मन्दिर' कहा जाता है । ललितकिशोरीजी की कविता बड़ी ललित है । विवरण के लिए दे० ना० प्र० स० (काशी) खो० वि० १६२६-३१, ग्र०सं० १९८ और खो० वि० १६३२-३४, ग्र० सं० १३४ । ग्रन्थ के प्रारम्भ में इनके विषय में लिखा है: "श्री कृष्ण चैतन्य चरण उपासी श्री गोपाल भट्ट गोस्वामि परवार गोस्वामि श्री राधागोविन्द जी महाराज के कृपापात्र श्री गौरिश्याम महाउज्ज्वल रसाधिकारी साह कुंदन लाल लखनऊ शहिर में रहनेवाले उन्होंने मकुटुम्ब आय के मिती बैसाष शुक्ल १३ संवत् १६१३ को श्री वृन्दावन में वास किया और रासलीला द्वारा अतिगुह्य उज्ज्वल भावना रस को प्रघट दरसायो और माघ शुक्ल ५ संवत् १६१७ को अति अभिलाष संयुक्त तन मन धन अर्पन करि के श्री जी के मन्दिर को आरम्भ करायो सो मन्दिर संगमरमर पत्थर को अति अपूर्व वरष ८

में निरमान होयकर मिती माघ शुक्ल ५ संवत् १६२५ को वामे उनके नित्य निज सेव्य श्री राधारमणजी विराजे महोत्सव बड़े उत्साहसों कियौ ललित निकुंज मन्दिर को नाम धरायो ता पीछे कार्तिक शुक्ल २ संवत् १६३० को दिवस राधेश्याम नाम संकीर्तन धुनि आनन्द में साह कुन्दनलाल ने श्री वृन्दावन नित्य निकुंज निवास पायो उन्होंने जो पुस्तक रचना करी वाको नाम रसकलिका है वाही में से साह कुन्दनलाल उनके लघुभ्राता ने समय समय के थोड़े थोड़े पद और कोई-कोई लीला संयुक्त करि के यह पुस्तक बनाई यासों लघुरस कलिका याको नाम रख्यौ।।"

(२) ग्रन्थ दोहे-चौपाइयों तथा विविध छन्दों और अनेक गेय रागों में रचित है। काव्य के दृष्टिकोण से रचना उत्तम और हृद्य है। उदाहरणार्थ-

"लटकी लट तिय भालपै भृकुटी वंक विशाल।
विन जिह काम कमान पै वान मनोहर लाल।।"

इसी प्रकार खम्माच राग में-

"भृकुटिन की कुटिलाई नीकी। पलकन की अलि अनियाँ नीकी
लोचन ललित वंकाई नीकी।
मृदु मुसक्यान कटरिया अलकैं नागिनियां लहिराई नीकी।
ललित किशोरी गरेलागि पीसव निशिजाग जगाई नीकी।। ५३२।।"

राग जिला झंझोटी-

"चन्द से कपोल गोल चपला से गंड लोल अलकैं निचोल अली अवली अरविंद की।
खंजन से नैनरैख अंजन दुऊकोर नमन रंजन चिवुविंदु श्याम शोभा गोविंद की।।
ललित किशोरी कटि छीन नाभि कुंड रूप रोमावलि उठी तापै पंकति मलिंद की
गुल्फ की गुलाई शरदिंदुहू न पाई सकुचाई अरुनाई लखिलाली अरविंद की।।"

ललितजी की भ्रमणशीलता की छाप इनकी भाषा पर है। व्रजभाषा प्रधानकाव्य में स्थान-स्थान पर अन्य क्षेत्रीय बोलियों के भी नात्यधिक शब्द आये हैं।

बिहार-आर्य-प्रतिनिधि-सभा-भवन (पटना)-निवासी श्रीपरमानन्द आर्य के सौजन्य से यह ग्रन्थ प्राप्त हुआ है।

१२६. सुरप्रकाश-ग्रन्थकार-बच्चू मल्लिक। लिपिकार-×। अवस्था-प्राचीन देशी कागज।
पृ०सं०-३४५। प्र० पृं० पं० लगभग-२०। आकार-११" × ८½"।
रचनाकाल-×। लिपिकाल- ×।

प्रारम्भ- "श्री गणेशायनमः।। श्री स्वरस्वतैनमः। श्री शंकरायनमः।।
श्री रामायनमः।। श्री शूजायनमः।।

दाताजानहुगजमुषेनितप्रनवोमहिमांहि।। सुमिरतगणपतिहीविभोप्राप्तिहोहिंछनमाहि।
प्राप्तिहोहिंछनमाहिविनायकतनपरकामा।। एकदसनसुरवरनदेईगरिमासुषधामा।।
सूपकरनवसिकरनविघ्नहरला घिमाधाता।। अणिमादेहेरम्बइष्टलम्बोदरदाता।। १।।
वानीजूकेदरसतेंबजारौबुद्धिनसाय।। सजे नीलपटसारदापद्मआसनाभाया।।
पद्मआसनाभायमहापद्मजकेनारी।। कंठसेषसेगामुकुंदगुनविनहिधारी।।
कुंदकलीरदगिराभारतीमकरसआनी।। कुछप्रगटेरत्नसर्वतीत्यौकरवानी।। २।।"

मध्य-पृ० सं० १७३) :

''**चौपाई** ।। यह द्विज कथा कहे हम गाई ।। अब गिरिचरित सुनो नृपराई ।।

ऐकसमैहिरनाक्षदंईता ।। तीनो लोकनि के सुरजीता ।।

भागेगिरसब.....श्रिमवोरा ।। प्रविसिपतालनीरतनवोरा ।।

मज्जहिगजइवमनउमगाई ।। तेहि धैअसुरनिजानबनाई ।।

असुरप्रतापदेषिबाराहू ।। हनिरिपुइंद्रहिदीनउछाहू ।।

तहपरजुतगिरिरविससिछेपे ।। तमनिहारिसुरपतिहिअकोपे ।।

अन्त- ''अवतुमजासुरपुरसुपगाऊ ।। ऐसुनिगेनृपमोसिरनाऊ ।।

असकहिजमसत्यवानज्याई ।। सावित्रीवरदउहरषाई ।।

लच्छवरसपतिकेहोआंऊ ।। नानासुषसौपुत्रउछाऊ ।।

तिमितवपितृसतसुतगृहभ्राजू ।। ससुरअंधद्रिगलहुनिजराजू ।।

जमप्रनामकरिदेपतिगेहा ।। पायोसकलविभोजतनेहा ।।

अंतलहीपतिजुतगोलोका ।। ऐकथकहिसुनिहोयअसोका ।।''

विषय-दोहे-चौपाइयों में श्रीमद्भागवत की कथा और सगुण, निर्गुण, सृष्टि, प्रलय आदि का विश्लेषण एवं विविध भक्ति-आख्यानों का महिमा-वर्णन ।

टिप्पणी-इस ग्रन्थ के रचयिता संगीतज्ञ श्रीवच्चू मल्लिकजी विहार के शाहावाद जिलान्तर्गत विक्रमगंज के निकटस्थ धनगाईं ग्राम-निवासी थे । ये प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्रीघनारंगजी के परिवार के थे और डुमराँव-महाराज के आश्रित थे । इन्होंने इस ग्रन्थ के अतिरिक्त 'रस-प्रकाश' और 'कृष्ण-रामायण' की रचना की थी । उक्त दोनों ग्रन्थ भी परिषद्-संग्रहालय में सुरक्षित हैं । इनकी रचना में रस, अलंकार तथा विविध छन्दों की विशेषता तो है ही, संगीत के श्रुतिमधुर बोलों तथा स्वर-प्रतीकों का वैविध्य-वैशिष्टम् भी है । प्रस्तुत रचना में कवि ने भागवत के आधार पर श्रीकृष्ण के जीवन पर मनोरम पद लिखे हैं । यह प्रबन्ध-काव्य हृद्य है । इसमें भोजपुरी के शव्दों का प्रयोग-वाहुल्य है । ग्रन्थ की लिपि पुरानी है । ग्रन्थ के प्रारम्भ या अन्त में रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नहीं है ।

यह ग्रन्थ धनगाईं, सूर्यपूरा (शाहाबाद)-निवासी श्रीसहदेव दूबे के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

१२७.रामायण (बालकाण्ड)-ग्रन्थकार-गो० तुलसीदास । लिपिकार-× । अवस्था-प्राचीन देशी कागज और खण्डित । पृ०सं०-१५६ । प्र० पृं० पं० लगभग-४२ । आकार-८½" × ६½" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल- × ।

प्रारम्भ- ''जोवीनकाजदाहिनेवाऐ परहितहानीलाभजीनकेरे

हरीहरजसराकेसरा ते ।। परअकाजभटसहसबाहसे

जेपरदोखलहहीसहसाथी परहिध्रीतजीनकेमनमाथी

....

..........................अघअवगुनधनधनीकधनेसा

उदैकेतुसमहितसबहीके कुंभकरनसमसोवतनीके

परअकाजलगोतनपरिहरही जीमीहीमीउपलक्रीखीदलगलही''

मध्य-(पृ० सं० ७६) :

''**दोहा** ।। बोलेक्रीपानीधान तब अतीप्रसन्यमोहीजानी

मागहुबरजोभावमन महादानीअनुमानी''

अन्त- ''तदपीजाइतुमकरहुअस जथावंसवेवहार

बुद्धीवीप्रकुलवंधुगुरु वेदवीदीतआचार''

विषय-रामचरितमानस के बालकांड की राम-कथा ।

टिप्पणी-गोस्वामी तुलसीदास की प्रसिद्ध रामायण के बालकाण्ड की खण्डित प्रति। आदि (प्रारम्भ के तीन पृ० और अंत खण्डित । लिपि-काल का उल्लेख नहीं है । लिपि-शैली प्राचीन है । यह ग्रन्थ दरियापुर (नवादा-गया)-निवासी श्रीनागेश्वर प्रसाद 'नगीना' के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

१२८. रत्नसागर-ग्रन्थकार-गुरुप्रसाद । लिपिकार-लाला वृन्दावन । अवस्था-प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज। पृ०सं०-२२० । प्र० पृं० पं० लगभग-३२ । आकार-९¼" × ६" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १८९७ वि० ।

प्रारम्भ- बोलेतववेसकलहीसुनिपैकुंवरसुजान

सिंघरवकनौसतहैपेमनगरसुस्थान १४

तहाराजकरतौसदाछत्रपतीसिरमौर

परजासगरीचैनसौषुसीरहततिहिठौर १५

इकदिनअपनैतषतपैबैठोहोवहभूप

आयौतबढिगिराजकेमानसयेकअनूप १६

कहौराजायासौतनैयहचित्तअपनेलाव

तैदेषेजेतेनगरतिनकीकथासुनाव १७

तववानैउतिरदियौसुनयहचित्तदेभूप

रूपनगरसबतैसरसदेषाऐकअरूप १८''

मध्य-(पृ० सं० ११०)

जिमितिमिकरपाँचौरितैकाटीदुषचित आन

अबपावसआईसषीकैसेंवचैपिरान ३५

उपमावाचकधर्मजोहोइलुप्तजिहिठौर
उपमावाचकधर्मलुपभाषतकरमनदौर ३६
तोमुपलषकैंलालुसषिरहौविकलअतिहोइ
चलिमिलिरीवाकेसगैकठिनाई चित्तषोइ ३७''

अन्त- ''भान के समानरोपुमानिकुमनिकुमआरलालसुक्रकेसमानबज्रपूरबलगाइये
सोमकेसमानअग्निमुक्तकासितकेमंगुसौमुँगादिसदछिनधराइये''

विषय-नायक-नायिका-वर्णन के साथ कथा के माध्यम से काव्य के लक्षणों का सोदाहरण वर्णन । रत्नों की जाति, गुण और उनकी पहचान आदि का निरूपण ।

टिप्पणी १. यह ग्रन्थ प्रेमनगर के राजा और उनके पास अचानक आनेवाले हंस (मानस) की कथा, हंस के द्वारा की गई विभिन्न देशों की भ्रमण-चर्चा और उन-उन देशों में प्रचलित अनेक परम्पराओं के वर्णन के अतिरिक्त अनेक प्रेमाख्यानों से भी युक्त है । इसमें नायिका-भेद सोदाहरण वर्णित हुआ है । विविध रत्नों के लक्षण, उनकी पहचान तथा उनके प्रभाव को भी विशद चर्चा ग्रन्थ में हुई है । ग्रन्थ महत्त्वपूर्ण तथा अनुसंधेय । प्रारम्भ का एक पृष्ठ (तरह पद) खण्डित है । ग्रन्थान्त के पाँच पृष्ठ कीटविद्ध और दुष्पाठ्य हैं । ग्रन्थ का लिपिकाल सं० १८६७ वि० है ।

२. यह पोथी नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी खोज में मिली है । नागरी-प्रचारिणी सभा के खोज-विवरण के अनुसार यह कवि सं० १७५५ वि० के लगभग वर्त्तमान थे; दे० खो० वि० १६०५ ई०, ग्रं० सं० २५; खो० वि० १६०६-१६०८ ई०, ग्रं० सं० ३२६ । सभा की प्रति से यह पोथी प्राचीन है । सभा के विवरण में उल्लिखित पोथी का लिपिकाल सं० १६३० वि० है, जब कि परिषद् की प्रति का लिपिकाल है सं० १८६७ वि०।

३. सभा के खोज-विवरण में ग्रन्थकार की दूसरी रचना भी मिली है-'कवि-विनोद' और 'वैद्यक-सार', जिनका रचनाकाल है सं० १७४५ : १६८८ ई०, और लिपिकाल है सं० .१८६१ : १८३४ ई०; दे० खो० वि० १६२६-३१ ई० की पृ० सं० ४७ और रचयिता-सं० १३३ की टिप्पणी । उक्त विवरण से कवि के स्थान आदि का संकेत नहीं मिलता है ।

ग्रन्थ की लिपि पुरानी है । यह ग्रन्थ नयाटोला, पटना-निवासी श्रीकाशीप्रसाद रामचन्द्रप्रसाद के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

१२६.रामचरितमनस (बाल-अयोध्याकाण्ड)-ग्रन्थकार-तुलसीदास । लिपिकार-× । प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज। पृ०सं०-३०४, प्र० पृं० पं० लगभग-३६ । आकार-८१/७" × ५" । भाषा-हिन्दी (अवधी) । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

प्रारम्भ–''हीअहरषेकामारीतव संकरसहज़सुजान
वहुवीधीउमहीप्रसंसीतववोलेश्रीभगवान १४७

सोरठा ।। सुनुसुभकथाभवानीरामचरित्रमानसवीमल
कहाभुसुंडीवषानी; सुनी वीहंगनाऐकगरुर
सोसंवादउदारजेहीवीधीभोआगेकहव
सुनहुरामऔतार : चरीत्रपरमसुंदरअनघ
हरीगुननामअपारकथारूपअग्नीतअमीत
मैनीजुमतीअनुसारकहौउमासादरसुनत ।। १६ ।।''

मध्य-(पृ०सं०१५५) :
''तेहीऔसरसीतातहाआई गीरीजापुजनजननीपठाई
संगसपीवीधुवदनीकुमारी श्रीगसावकलोचनअधीकारी''

अन्त- ''सकलकुसलकहीभर्थसुनावै पुछीतवनीजग्रीहकुसलावै
कह.........सवभ्राताकहासीअरामलपनप्रीत्रभ्राता
सुनसुतवचनसनेहमौ कपटनीरभरीनैन
भरथस्रवनमन..........वोलीवैन १५७''

टिप्पणी-गोस्वामी तुलसीदास-विरचित रामचरितमानस की खण्डित प्रति । बालकाण्ड के प्रारम्भ में ६५ पृष्ठ खण्डित हैं । अयोध्याकाण्ड के अन्त के पृष्ठ भी खण्डित हैं । ग्रन्थ की लिपि पुरानी और अस्पष्ट है तथा कैथी से मिलती-जुलती है । यह ग्रन्थ श्रीनागेश्वरप्रसाद 'नगीना', दरियापुर, नवादा (गया) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

१३०.रामचरितमनस (बालकाण्ड)-ग्रन्थकार-तुलसीदास । लिपिकार-× । प्राचीन, हाथ का बना देशी कागज । पृ०सं०-२५२, प्र० पृं० पं० लगभग-३२ । आकार-६½" × ६" । भाषा-हिन्दी (अवधी) । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल सं० १८५८ वि० : सन् १२०८ साल ।

प्रारम्भ-''श्रीगनेसाऐनमः श्रीरामजीसहाऐ श्रीभवानीजीसहाऐ श्रीगंगाजीसहाऐ
श्रीहनुमानजीसहाऐ श्री पोथीवालकाण्ड रमाएनक्रीत तुलसीदासभाखापरवंध ।

सोरठा ।। जेहीसुमीरेसीधीहोइ गननाएककरीवरवदन
करहुअनुग्रहसोइ वुधीरासीसुभगुनसदन
मुकहोहीवचाल पंगुचरेगीरीवरगहन
जासुक्रीपासुदआल छुटैसकलकलीमलहरन''

मध्य-(पृ० सं०-१२७) :
''परमउछाहमोदमनराजा गंनगंधर्वजुरेसवराजा
वेदवीदीतसवकीन्हअपारा सुनुमुनीसएहचरीतआपारा
मंगलवीधवेदजसगावा प्रेमप्रमोदभुपमनभावा''

अन्त- ''नीजगीरापावनीकरनीकारनरामजसतुलसीकहा
रघुवीरचरीतअपारवारीधपारकवीकवनेकहा
उपवीतव्याहउछाहमंगलसुभीजोसादरगावही
वैदेहीरामप्रतापसेइजनस्रवदासुखपावही

सोरठा ।। सीअरघुवीरवीवाहजोसप्रेमगावहीसुनही
ताकरसदाउछाह मंगलाएतनरामजस''

इती श्री रामचरीत्रेमानसे सकल कलीकलुषवीधंसीनो नाम बालकांडरमाएन संपुरन समापत जो देखा जो लीखा ममदोखनदीअते पण्डित जनसोवीनती मोरटुटलअछर- लेवसवजोरी समंत १८५८ सालसमैनाम मीः जेठ बदी दुइजी २ बार बीहसपतीके लीखा-तेआरभइलमोकाम साहाबाद ।। पोथी तयफल सींघकैप्रगनानेनेरीगावसाहीपुरकैवसीन्दा सन १२०८ साल ।''

टिप्पणी-गोस्वामी तुलसीदास-विरचित रामायण के इस हस्तलेख में प्रकाशित प्रतियों से पाठभेद है । लिपि पुरानी और अस्पष्ट है ।

यह ग्रन्थ अख्तियारपुर, विक्रम (पटना जिला)-निवासी श्री बा० शिवरत्नप्रसाद सिंह के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

१३१.अनेकार्थ-मंजरी-ग्रन्थकार-नन्ददास । लिपिकार-जैनन्दन सिंह (मथुरापुर) । अवस्था-अच्छी पूर्ण, पुराना देशी कागज । पृ०सं०-७ । प्र० पृं० पं० लगभग-२६ । आकार-८" × १०¼" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-आषाढ़ शुक्ल सप्तमी, भृगुवार, १८४१ वि० ।

प्रारम्भ- ''श्री गनेसाऐनमह श्री अर्थमंजरी अनेकार्थ
दोहा- जो प्रभु जोती जगत्र मै कारनकरन अभेव ।
वीघनीहरन सब सुखकरननमोंनमोतेहि देव ।।
एकैवस्तु अनेक है जगमगात जगधाम ।।
जेवोकंचनते कींकनी कंकन कुण्डलनाम ।।
उचरी सकतनही संसक्रीत अरुसमुझनअस्मर्थ ।
तीनहीतनंद सुमतीजथा भाखा अनेका अर्थ ।।''

मध्य-(पृ० स० ४)-अनंतनामा
''गगन अनंत जो कहतकवी बहुरी अनंत अनेक ।
सेस अनंतही कहत है हरी अनेक अरु ऐक ।।''

अन्त- ''सनेहनाम तेल सनेह प्रेम ध्रीत बहुरो प्रेम सनेह ।
सो नीजचरननी गीरी धरन नंददास कों देह ।।
जो ई अनेका आर्थकौ पठे गुनै नर कोई ।
ताकों अनेका आर्थ ऐ अरु परमारथ होई ।।''

ऐतीश्री अनेका आर्थ नंददासक्रीत समपुरन समांपतहजोदेखा सो लीखाम्मदोखनदीअते संवत १६४१ साल समैनाम आषाढ सुदी सप्तमी श्रीगुवासरे दीन गतऐकप्तहर दसखतजैनदनसीघ शा० मधुरापुर ।

विषय- पर्यायवाची कोष ।

टिप्पणी-प्रसिद्ध नन्ददास-रचित अनेकार्थध्वनिमंजरी का यह एक भाग है । यह ग्रन्थ 'नाममाला' कहा जाता है । 'मानमंजरी नाममाला' नामक इनकी रचना भी खोज में मिली है । इनकी रचना के हस्तलेख पहले भी परिषद् को प्राप्त हुए हैं और उसके संग्रहालय में सुरक्षित हैं । विवरण के लिए दे० वि० रा० भा० प० से प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (पहला खण्ड)-पृ० ७ और ५; दे० वि० रा० भा० प० से प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (दुसरा खण्ड)-पृ० ६ और कवि-सं० ८८ तथा १४। नागरी-प्रचारिणी सभा (काशी) को भी इनके अन्य अनेक हस्तलेख खोज में मिले हैं। दे० 'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण', पहला भाग, पृ० ७३ । लिपि पुरानी कैथी है।

यह ग्रन्थ अख्तियारपुर, विक्रम (पटना जिला)-निवासी श्रीशिवरत्नप्रसाद सिंह के सौजन्य से, मित्र पुस्तकालय के संग्रह से प्राप्त हुआ है ।

१३२.वैतालपचीसी - ग्रन्थकार-सूरत । लिपिकार-खगेशदास । अवस्था-अच्छी, पूर्ण । पृ०सं०-६३, प्र० पृं० पं० लगभग-२७। आकार-६'/," × १०" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-महमदशाह और सवाई जैसिंह का समय। लिपिकाल सं० १६१६।

प्रारम्भ- "बैतालप्रचीसी ग्रन्थ प्रारम्भ ।। श्री गणेशाय नमः ।। शुरू की कहानी का यह है प्रथम ।।

कि धारा नगरनाम एक शहर वहाँ का राजा गन्धर्वसेन उसकी चार राणीयां थी उनमें छः बेटे थे एक से एक पण्डित और जोरावार थे। कजाकार बादचंद रोजके वह राजा मर गया और उसकी जगह बड़ा शंषनाम राजा हुआ फिर कितने दिनों के पीछे उसका छोटा भाई विक्रम बड़े भाई को मारकर आप राजा हुआ और बाषुवी राज करने लगा दिन बा दिन उसका राज ऐसा बढा कित्तमाम जम्बु दीप का राजा हुआ और अचल राज करके सांका बांधा कितने दिनों के बाद राजा ने यह अपने दिल्में बिचारा की जिन मुल्कों का नाम में शुन्ता हूँ उनकी सैर किया चाहिए यह अपने दिल में ठानि राजा गद्दी अपने छोटे भाई भरथरी कों सौप आप जोगी बन मुल्क २ की सैर करने लगा"

मध्य- (पृ०' सं० ४५) ''वह बोली आज के पाँचवें दिन मेरी शादी होगी तो पहिले मैं तुझसे मिल जाऊँगी । पीछे अपने शौहर के इहां रहोगी यह वचन दे सौ गंद खा वह अपने घर को गई और यह अपने घर आया गरज पाँचवें दिन उसकी सादी हुइ खावीन्द ऊसका व्याह कर उसे अपने घर ले आया''

अन्त- ''यह सुन योगी ने ज्योंहि दण्डवत करने का सिर झुकाया ज्योंही राजा ने एक खडग मारा कि सिर जुदा हो गया और बैताल ने आन फूलों का मेह बरसाय ऐसा कहा है कि जो अपने त्ताई मारा चाहे उसे मारने से अधर्म नहीं उसमें राजा का साहस देख इंद्र समेत सव देवता अपने २ विमानों पर बैठ वहाँ जैजैकार देने लगे और राजा इंद्र ने प्रसन्नहो राजा वीर विक्रमाजीत से कहा कि वर माँग तव राजा ने हाथ जोड़ कर कहा महाराज यह कथा मेरी संसार में प्रसिद्ध हो इंद्र ने कहा कि जब तक चंदा सूरज प्रिथ्वी आकास स्थिर है तब तक यह कथा तेरी प्रसिद्ध रहेगी और तू सबं इमि का राजा होगा इतना कह राजा इंद्र अपने स्थान को गया और राजा ने उन दोनों लोथों को ले उस तेल के कढाई में डाल दिया तव दोनों वीर आ हाजिर हुए और कहने लगे कि हमें क्या आज्ञा राजा ने कहा जब मय याद करू तब तुम आना इस तरह से उनसे वचन ले राजा अपने घर आया राज करने लगा । ऐसा कहा है कि पंडित हो या मूरख या लड़का हो या जवान जो बुद्धिमान होगा उसी की जीत होगी २५ इति बेतालपचीसी- समाप्तम् सुभम भूयात ।''

विषय-विक्रम से बैताल द्वारा पच्चीस कहानियों का कथन और विक्रम की प्रशंसा।

टिप्पणी-प्राचीन हिन्दी गद्य-साहित्य का महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ । संस्कृत 'वेतालपञ्चविंशति' के आधार पर रचित प्रस्तुत कथा-साहित्य के प्रारम्भ की निम्नलिखित पंक्तियाँ कवि सूरत के समय का संकेत देती हैं :

''इबतिदाय दास्तान यों है कि महमदशाह बादशाह के जमाने में राजा जैसिंह सवाई ने जो मालिक जैनगर का था शूरत नाम कबीश्वर से कहा की बैतालपचीसी को जो जवानि संस्कृत में है तुम ब्रजभाषा में कहो तब उसने वभुजीवहुकुमराजा के ब्रज की बोली में कही सो अव उसको जवान ऊर्दू में क्षापा करते हैं जो खास आम के समझने में आवै ।'' इससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि ग्रन्थ-रचना का समय सवाई जयसिंह का राज्यकाल (अठारहवीं सदी) है । लिपि पुरानी; लीथो-मुद्रण । उपलब्ध बैतालपचीसी में यह ग्रन्थ और ग्रन्थकार नवीन हैं।

यह ग्रन्थ अख्तियारपुर (विक्रम-पटना)-निवासी श्रीशिवरत्नप्रसाद सिंह से प्राप्त हुआ है।

१३३.ज्ञानस्वरोदय-ग्रन्थकार-चरनदास । लिपिकार-गंगाप्रसाद । अवस्था-अच्छी, पूर्ण, देशी कागज। पृ०सं०-२२, प्र० पृं० पं० लगभग-३०। आकार-६½" × १०" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-४ माघ, मंगल, सन् १२५६ साल ।

प्रारम्भ- "श्री गनेसाएनमः श्री रामजीसहाए श्री महादेवजीसहाए श्री महावीरजी सहाए श्री पोथी ग्यान सरोदे

दोहा

नमो नमो सुखदेवी परनाम करो आनंद ।
तुम परसाद सुर भेद को चरनदास बरनंत ।। १।
परंसोतीम परमातमा पुरन वीस्वावीस्न ।
आदी पुरुष अवीचलहुहीतेही न पापी सरीर ।।
धरम अंग सो कहत है अंदर सो सोहंग जान ।
नीह अंदर स्वासा रहे ताही को मन आनंद ।।
ताही को मन आन रातदीन सुरती लगायो ।
आपही आपवीचारी आपर नाही सीसनवायो ।।

मध्य-(पृ०सं० ११)- "जब सीधे असी लखै छूटे महीना काल ।
आगे ना.......करे बइठे गोल तत्काल ।।
ऊपर खैचै आपना को प्रान आपना मीलाए ।
उत्तीम कर समाध सो ताको काल न खाए ।।"

अन्त- "बाल अवस्थामाह : भोरदीने मे आऊ रमतमीले सुखदेव ।
नाम चरनदास.........
जोगजुगुत हरीभजकरझर भग्यानदीठकरगही
आतम तंतुवीचार अजपामे मन सुन हरो २६"
अती ग्यानसरोदे सुभक्रीतचनदासजी समपुरन सुभमस्तु ।

विषय-संत-साहित्य । श्वास और स्वर के आधार पर यौगिक साधनों का विवेचन।

टिप्पणी-स्वर-प्रक्रिया-विधि के अवबोधन के लिए रचित संत चरणदास की यह रचना पहले के विवरणों में भी आ चुकी है । दे० वि० रा० भा० प० से प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (पहला खण्ड)-पृपृ० पृ० ११७, ११८, ११६ (ग्रं० सं०६६)। ग्रन्थकार के सम्बन्ध में श्री रामनरेश त्रिपाठी ने 'कविता-कौमुदी' में रचनाकाल-विषयक मतभेद

प्रकट किया है । दे० क० कौ० (नवनीत-प्रकाशन, बम्बई, आठवाँ संस्करण), पृ० ४८५ । ग्रन्थ की लिपि अस्पष्ट और पुरानी कैथी है ।

ग्रन्थ अख्तियारपुर, विक्रम (पटना)-निवासी श्रीशिवरत्नप्रसादसिंह के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

१३४.चक्रव्यूह महाभारत-ग्रन्थकार-सबलसिंह चौहान । लिपिकार-× । अवस्था-अच्छी । पृ०सं०-२४, प्र० पृं० पं० लगभग-३४ । आकार-६" × ६" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

प्रारम्भ- ''श्रीगनेसजीवसहाऐन्मह श्रीदुरगाजीवसहाऐन्मह श्रीभवानीजीवसहाऐन्मह श्रीहनुमानजीवहाऐन्मह श्रीपोथीचकराबुहमाहाभा रतलीखतेसही..........

दोहा

चकराबुहनीरमाऐउ करैजुधएहरूप ।
बोलुपारथऐहअसजगतमह भेद न जाने भुप ।।

चौपाई

नीसामध्यमहगडन्नीमाआए ।
जाकर अंतकेहु न पाए ।।
सात दीवार देखत मन भाए ।
जाके जुधी काहु न पाए ।।
प्रथमही दोवार जैदरथही साधा ।
सैन अनेकजाऐ न भाखा ।।
तीजे दोवार करनदीछकीन्हा ।।
संरथ सारथी बहुत सो लीन्हा ।।
चौथे क्रीपाचरज वे संका ।
पंचैद्रोनपुत्र रनरगा ।।
छठै दीवार वीर बहुकहो ।
सुरी सखा आ पुताहारहो ।।''

मध्य (पृ० सं० १२)- 'अभीमन कीन्ह सैन नीकंदन । क्रोधीतभैदेखी रवीनंदन ।।
पत्र वान तेही कर लीन्हा । तेस्र जोर सीस पर लीन्हा ।।''

अन्त- ''संकर कहै बीसन सो उपजाचीत आनंद ।
बीहसी वदन नीरखन लागे संघनसाम सुखकंद ।।
जो एह कथा पढ़ै मन लाइ । ताकर पाप तुरंत ही जाइ ।।
महाभारथ मह सो जस पावै । अंतकाल बैकुंठ सीधावै ।।
मातुपीता अग्वा जो करई । कवी जन तुरत ताही के करई ।
जतफल नगनवसार पहीराऐ । ततफल बहीपी उपराए ।।
जसफलकासी करवातकीन्है । जाए सोना गंगामह दीन्हा ।।

अंतफल होही तुरंतही कथा पढ़े चीतलाऐ ।

जंभु तेही नीकट ने आवही बीसु न घर सो जाऐ ।।

ऐतीश्रीमहाभारथचकरावुह से पुरन भैआ ममदोखनदीअते पंडीतजनसो बीनतीमोर टुटलआखर लेबजबजोर ।"

विषय-महाभारत का भाषानुवाद ।

टिप्पणी-ग्रंथकार सबलसिंह चौहान महाभारत के प्रसिद्ध रूपान्तरकार हैं । ग्रन्थ में रचनाकाल का संकेत नहीं है । इसका रचनाकाल सं० १७२७ वि० के लगभग है । ग्रन्थकार इटावा के निकट किसी गाँव के जमीन्दार और जाति के चौहान क्षत्रिय थे । कहा जाता है कि इनके वंशज अभी तक हरदोई में वर्त्तमान हैं । इनके सम्बन्ध में श्रीरामनरेश त्रिपाठी ने कविता-कौमुदी (प्रथम भाग, नवनीत-प्रकाशन, वम्बई, आठवाँ संस्करण; पृ० सं० ४३३) में विस्तृत प्रकाश डाला है । इनकी रचना की पाण्डुलिपियाँ नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी को भी खोज में मिली हैं । दे० ना० प्र० स० का०, खो० वि० १६०४, ग्रं० सं० ६६; खो० वि० १६०६-१६०८, ग्रं० सं० २२४ ए और बी; हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों का त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण (१६२६-२८), पृ० ८१ । ग्रन्थ की लिपि अस्पष्ट और पुरानी कैथी है । यह ग्रन्थ, प्रतीत होता है, ग्रन्थकार के वृहत् ग्रन्थ का अंशमात्र है ।

यह ग्रन्थ अख्तियारपुर, विक्रम (पटना)-निवासी श्रीशिवरत्नप्रसादसिंह से प्राप्त हुआ है।

१३५. प्रेममूला और भक्तिहेतु-ग्रन्थकार-दरियादास । लिपिकार-लोकराजदास और विजुलीदास। अवस्था-अच्छी । पृ०सं०-३७, प्र० पृं० पं० लगभग-१७। आकार-६" × ६" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-सं० १६६६ वि० ।

प्रारम्भ- "ग्रन्थ प्रेममूला भाखल दरीआ साहव नामनीसान सब्रसूक्तिसाहब

प्रेमकंवल जलभीतरे प्रेमनपर लेवास ।

होतप्रात सुपट खुले भानातेज प्रगास ।।

मयरपुहुपमे वासा कीन्हा । गंध सुगंध प्रेम रस लीन्हा ।।

जो जन प्रेम नाम वसी भैउ । सतगुरू चुन सुधार सपैउ ।।"

मध्य (पृ० सं० १२)- "सतगुरगुरगुनाहिपहचाना । नहिसंत सेवा लपटाना ।।

नाहिदाआदरवीलआनाना । प्रआतमनीहि पहचाना ।।

अन्त- "मनपवन का साधीऐ साधो सब्दहिसार ।

मूल अकहंमे गमीकरो मोतीघनापसार ।।

ग्रन्थ समप्रुन्न ।।"

विषय-सद्गुरुभक्ति-प्रतिपादन, साधु-असाधु-चर्चा, स्त्री-संपत्ति-लोभ-त्याग, आत्मा की अमरपुर-यात्रा का वर्णन आदि । दरिया-पंथ के प्रवर्त्तक दरियादास-कृत निर्गुण-भक्तिकाव्य।

टिप्पणी-ग्रन्थ की लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है । यह ग्रन्थ डॉ० धमेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री से प्राप्त हुआ है ।

१३६.रामरतनगीता-ग्रन्थकार-कुशलसिंह । लिपिकार-×। अवस्था-अच्छी, पुरान देशी कागज । पृ०सं०-५२, प्र० पृं० पं० लगभग-३६। आकार-५½" × ६" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-×।

प्रारम्भ- ''श्री गनेसजी सहाए श्री भवानीजीव सहाऐ श्री हनुमानजीव सहाऐ ।
श्री पोथी रामरतन गीता ।
श्री गुरुवीसुन के चरन मनावों । जाहीप्रसाद गोविंद गुन गावों ।।
श्री किसुन अरजुन रसबानी । गुरुप्रसाद कछु कहौ बखानी ।।
ऐकसमै श्रीजादो राइ । आरजुन संग भै ऐक ठाइ ।।
धुपदीपले आरती कीन्हा । च्रनोदकपुनीमाथे लीन्हा ।।
हाथजोरी आरजुन भैटाई । प्रमप्रीतिही दैवामोवा........।।''

मध्य (पृ० सं० २६)- ''सुनु आरजुन नीस्चैचीतलाई । भजन भेद तोही कहौ बुझाई।।
अंगुरी रेख भजन जो करई । अस्ट गुन तेही प्रापती होई ।।
मोतीमाला जो सुमीरे कोई । दस गुन जानहुतेही फलहोई ।।''

अन्त- ''एहभाव राखै चीतलाई । तव दाआ कछु कीन्ह गोसाई ।।
तवकछुग्वानहींदेवाभोपावा । रामरतनगीता तवगावा ।।
गुरुदैआभौ मोहीयर छुटी गैसर्भभ्रम ।
रामनामचीतलाएकै और न जानेउर्भम ।।
ऐती स्री पोथी रामरतन गीतासपुरन जोदेखासोलीखाममदोख न दीअते
पंडीतजन सोवीनती मोर टुटल अछरलेव सवजोरी ।।'

विषय-राम-नाम-महिमा का वर्णन । मानव-जीवन की श्रेष्ठता और गुरुभक्ति का महत्त्व। अर्जुन और श्रीकृष्ण का प्रश्नोत्तर ।

टिप्पणी-बारावंकी जिला के निवासी कुशलसिंह इस ग्रन्थ के रचयिता हैं । सम्भवतः इनका जन्म-सं० १६७७ वि० था । इनके सम्बन्ध की सूचना के लिए दे० वि० रा० भा० प० से प्रकाशित 'प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण' (पहला खण्ड), पृ० द (कवि-सं० २६) । यह रचना काशीनागरी-प्रचारिणीसभा को भी खोज में मिली है दे०खो०वि० १६२३-२५, ग्रं० सं० २३१, खो० वि० १६२६-२८, ग्रं० सं० २५४ ए और बी । यह ग्रन्थ अख्तियारपुर, विक्रम (पटना)-निवासी श्रीशिवरत्नप्रसादसिंह से प्राप्त हुआ है ।

१३७.अर्जुनगीता-ग्रन्थकार-जनभुवालस्वामी । लिपिकार-× । अवस्था-अच्छी, पूर्ण । पृ०सं०-७८, प्र० पृं० पं० लगभग-४८। आकार-५½" × ६" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-सं० १७०० वि०। लिपिकाल-×।

प्रारम्भ- ''श्रीं गनेसजीवसहाऐ । श्रीरामजीवसहाऐ । श्री हनुमानजीवसहाऐ ।
श्री भवानीजीवसहाएं । श्री पोथी आरजुन गीता ।
वंदौ आदी अलख करतारा ।। सुमीरत नाम होऐ नीसतारा ।।
सुमीरौ गुरु गोविन्द के पाउ । अगम अपार है जाकर नाउ ।।
करनुमे तुम अंतरजामी । भग्तीभाव हेतु गरुगामी ।।
दीन दीआल तुम बालक धाई । आपन जनप्र होहु सहाई ।।
क्रीपा करहु तुम सारंग पानी । न्रीमल अछर कहो बखानी ।।
क्रीपा करहु जगदीस वर बीनती सुनहु चीतमोर ।
भगती भाव देहू स्वामी कहै भुआल करजोर ।।
सम देवन वरनो चीतलाइ । अछर अछर कहहु बनाई ।।
सारद सरसतो आदी भवानी । न्रीमल अछर कहहु बखानी ।।
मम बीनती सुनो पुरुख पुराना । जुगेस्वर तोही रूप बखाना ।।
अछर सुभक रही समदेवा । महादेव देवन्हकै देवा ।।
कथा अजर अगम है सुनु स्वामी चीतलाऐ ।
गीता ग्वान प्रगासहू कहही भुआल सीरनाऐ ।।''

म० (पृ० सं० ४०)

तुहगीलोक के ठाकुर सामी कहहु मोही पार ।
न्रीमल बुधी होऐ जाहीते सोइ कहहु सुरनार ।।
अब सुनु मैं कहो वेभूती । लोकन व्यापीत रहै जौनीती ।।
बीसुनकथा सुनावौ तोही । चाँद सूरज देखावहु अब मोही ।।''

अन्त- ''सब सत्र कर मता जो लीन्हा । ताहीनी चोरी के गीता कीन्हा ।।
जस देवसजोगओ भाखा । गुपत अरथ कछुवो गोइन राखा ।।
आरजुन सो कहै गोवींदा । छुटेउमोह होऐ सदेहा ।।
मनसा वाचा कर्मना तीनी मुहजो आही ।
सुनते कथां पापकी नार्स सत कहा सुनुतोही ।।

ऐतीस्रीभागवंतगीतासंपुरनीरव असतुतीव्रभावीदवाजोगसासत्र श्रीहरसन आरजुन संमादमोछनोनामजोगवनाम अठारहमो अध्याऐ १८ ।।''

विषय-गीता के आदर्श और विषय का अवलंवन कर स्वतन्त्र दार्शनिक मत का प्रतिपादन ।

टिप्पणी-ग्रन्थकार का रचना-काल मिश्रबन्धुओं के अनुसार १००० वि० है (दे० मिश्रबन्धु-विनोद, गंगा-ग्रन्थकार, लखनऊ, सं० २०१३ वि० में प्रकाशित (पंचम संस्करण),

पृ० ८८ और कवि-सं०-२५), किन्तु उक्त विवरण में जो उदाहरण हैं, उनके, प्रस्तुत प्रति के पाठ के, अनुसार सं० १७०० वि० होता है । वर्ष के साथ जिस मास, पक्ष और तिथि का उल्लेख हुआ है, उनकी संगति मिलाने पर ही रचनाकाल के सम्बन्ध में असन्दिग्ध मान्यता स्थापित की जा सकती है । काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा की भी यह रचना खोज में मिली है; दे० खो० वि० १६०१-११ ई०, ग्रं० सं० १३२ । वि० रा० भा० प० से प्रकाशित प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण (पहला खण्ड), पृ० ड, कवि-स० २१ तथा ग्रं० सं० ६७ भी द्रष्टव्य है । ग्रन्थ की लिपि अस्पष्ट और प्राचीन कैथी है ।

यह ग्रन्थ अख्तियारपुर, विक्रम (पटना)-निवासी श्रीशिवरत्नप्रसादसिंह से प्राप्त हुआ है।

१३८.रामचरितमानस (किष्किन्धाकाण्ड)-ग्रन्थकार-तुलसीदास । लिपिकार-लाला रामलाल। अवस्था-अच्छी । प्र० पृं० पं० लगभग-३६। आकार-५½" × ८"। भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी, पुरानी कैथी । लिपिकाल-सन् १२६७ साल ।

प्रारम्भ- "श्रीगनेसजीवसदासहाऐ श्रीगंगाजीवसदासहाऐ श्री देवजीवसदासहाऐ श्रीमहादेवजीवसदासहाऐ श्रीहनुमानजीवसदासहाऐ श्रीपोथी खीखीदाकांड रामाऐन कीरत भाखा गोसाईं तुलसीदासजी के सोरठा ।

मुकीतजनम महीजानी । ग्यानखान अघानी ।।
कर बसे जाहा शंभु भवानी । सो कासी सइ कस सुनी ।।
जाहा जरत सकल मुनी वीरंद । बीखम गरल जे पान कीये।
तेही न भजसी मतीमंद । को कीरपाल संकर सरीस ।।"

मध्य (पृ० स० १८)- "सुनौ राम सामी सुभग चलन चातुरी मोर ।
प्रभु अजहु मै पापी अंतकाल गती तोर ।।"

अन्त- "भों भेद खेद रघुपती चरीत्र सुनही जौ नर अरु नारी ।
तीन्ह कै सकल मनोरथ सीध करही त्रीपुरारी ।।
भजतलोकपालतनस्याम कामकौटीसौभा अमीत ।
सुनींऐतीसगुनगाराम जासुनाम खगबेधीक ।।
ऐतीस्रीपोथी खीखीदाकांड रामाऐनकीरीतीरथगौसाइतुलसीदासविरचीती समापत जौ देखा सौ लीखाममदोखनदीअते पंडीतजनसोवीनती मोरी टुटलअछरलैसबजोरी"

विषय- रामचरित ।

टिप्पणी-इसमें प्रचलित मुद्रित प्रतियों से अत्यधिक पाठ-भेद है । यह ग्रन्थ अख्तियारपुर, विक्रम (पटना)-निवासी श्रीशिवरत्नप्रसादसिंह के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

'१३९.**भरथ-विलाप**-ग्रन्थकार-तुलसीदास (?) । लिपिकार-तवफलंसिंह। अवस्था-अच्छी । पृष्ठ सं०-७ । प्र० पृं० पं० लगभग-३० । आकार-६" × ९" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । लिपिकाल-सं० १८५७ वि० ।

प्रारम्भ- ''श्रीगनेसाऐनमः श्रीगंगाजीवसहाऐ श्रीभवानीजीवसहाए
श्रीपोथीभ्रथवीलाप
पाशाबंध केकइ कीन्हा, दशरथ राजा हरख भैदीन्हा ।
मांगतु केकइ जो मनकाजु, देव मैवर वजन अस आजु ।।
जो राजा वर देतु मोही, जे मांगहु मै देव सब तोही ।।
जो तोही हीरदै है मन साजु, सो अब आजु देव तोही आजु ।।''

मध्य (पृ० सं० ५) :
''रामचंद्र सो आऐ सुपाइ, लछुमन गए भरथ के ठाइ ।
रोवत भरथ तै अंकम लाइ, भेले वीसारे तु लखन भाइ ।।
मीली के गए रामजी के ठाइ, देखत चरन परे दहराइ ।
राम उठाइके अंकम लावा, दुनो नैन नीर भरी आवा ।।''

अन्त- ''नग्र कै लोग धाइकै आइ । राम के कुसल पुछै मन लाइ ।।
कुसल रामके सभै सुनावा । तब चरनरोपी के नाथ पदावा ।।
चरनोदक लै हीरदै लगावा । पुजा करे पी आनन लाइ ।।
नीस्चै वचन कहौ समुझाइ । बाढै धरम पाप छै जाइ ।।
इतिस्री पोथी भरथवीलाप संपुरन जोदेखासोलीखा ममदीखन दीअते''

विषय-कैकेयी द्वारा दशरथ से राम-वन-गमन की वर-याचना; भरत का अयोध्या-प्रत्यागमन; सब समाचार सुनना; मूर्च्छा, विलाप और पिता दशरथ की दाह-क्रिया; राम-भरत-मिलन; चरणपादुका लेकर लौटना; अयोध्यानिवासियों को राम के समाचार को कह सुनाना तथा पादुका की पूजा ।

टिप्पणी-प्रसिद्ध रामचरित-मानस-प्रणेता । तुलसीदास से भिन्न कोई अन्य तुलसीदास इसके ग्रन्थकार हैं या गोस्वामी तुलसीदास, यह सर्वथा सन्दिग्ध है । लिपि प्राचीन और अस्पष्ट है; ग्रन्थ पूर्ण है । यह ग्रन्थ अख्तियारपुर, विक्रम (पटना)-निवासी श्री शिरत्नप्रसादसिंह से प्राप्त हुआ है ।

१४०.**वैद्यक-ग्रन्थ**-ग्रन्थकार-× । लिपिकार-× । अवस्था-खण्डित, पुराना देशी कागज । पृष्ठ सं०-१४ । प्र० पृं० पं० लगभग-३६ । आकार-६" × ९½" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

प्रारम्भ- ''अथ अगंतुकज्वरचिकित्सा दोहा
ववनविरेचनरक्तक्लिवचलदलजलवृत्ताकीन ।
तीरधष्ट अनेकविधजंत्रमंत्रज्वरछीन ।। ३२ ।।

अथपिपासाज्वरचिकित्सादोहा ।।

कनाकिरातिपिसावतौनीरसीरसोपाइ ।

प्यासत्रासज्वरना रहै बदत लौंगजलछाह ।। ३३ ।।"

मध्य (पृ० सं० ७)

"अथचंद्रकलारसद्विपकीछंद ।।

चंचल गंधक गरलरोहिनीत्रिउषनभृगुषलेतैं

गुंजदीवरीसि तामिलिज्वर बहुभेदकहेतैं ।।'

अन्त- "विषमज्वरचौपारीडीसुनगतिसजडछालिसौकबनौराती

हालि अजाछीरमिलि अवटनकरैंहाडिविषमज्वर सत्तकैंहरै १४०

दुतीअवटनचौपारी दीर्घ दंडसुनगतिसछल

सौंठकलौंजीसहजन षालषरकीजटागूमके पात

सर्वतुल्य सरसौ ले तात धेनुमूत्रपीठीकटुतेल सदा"

विषय-आयुर्वेदविषयक ग्रन्थ; रोग-लक्षण तथा रोगोपचार ।

टिप्पणी-आयुर्वेदविषयक यह खण्डित ग्रन्थ दोहा-चौपाइयों तथा अन्य छन्दों में है । लिपि पुरानी है ।

यह पुस्तक अख्तियारपुर, विक्रम (पटना)-निवासी श्रीशिवरत्नप्रसादसिंह से प्राप्त हुई है।

१४१.पञ्चमुक्त-ग्रन्थकार-कबीरदास । लिपिकार-दयादास । अवस्था-अच्छी, पुराना देशी कागज । पृष्ठ सं०-४५ । प्र० पृं० पं० लगभग-४० । आकार-५" × ६½" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल- चैत सुदी, मंगलवार १६२८ वि० ।

प्रारम्भ-"सत सुकृत आद अदलीअजर अचिंतपुर्समुनींद्रक ठनामे कबीरसुर्त जोग संतापनधनीधर्मदास चुरामनीनामसुदरसन नाम कुलपत्तनाम प्रमोदगुर वालापीर मूलनाम सुर्त्तसनेहीनाम हकनाम पाकनाम प्रगटनाम बंसबेया-लिसकादयासोंस्रीग्रंथ पंचमुद्र चौपाई । सुक्रीतोवचनं ।

सुक्रित कहें सुनो गुरग्यानी । अगम अभेद तुम कहो वषानी ।।

सकल सिस्ट की उत्तपत्त भाषो । मो सो गो ऐक सूजन राषो ।।

ब्रह्म जीव कैसे ऊत्तपानी । सोई अभेद गुर कहो वषानी ।

मुक्त भेद गुर देहु बताई । जाते हंसा लोक सीधाई ।।

जोगजीतोवचन ।।

जोगजीत तब बोले वांनी । सुक्रित सुनो आद सह दानी ।।

जाके मर्म जाने नहीं कोई । तुमसों भाष कहो मे सोई ।।

उतपन को मे भेद बताऊँ । अगम नीगम सब तुम्हे लषाऊँ ।।"

मध्य (पृ० सं० २२) :

चौपाई- ''सहज अंस लग जेतिक भाषा । ते सब रचना प्रले तर राषा ।।
ईहाँ लग प्रले के प्रवांता । आंगै अक्षे लोग अस्थाना ।।
सहज पुर्स ते आंगै जाई । आद पुर्स को लोक दिषाई ।।
सहज ते ऐक असेष प्रवाना । तहावा आदपुर्स निरवाना ।।''

अन्त- ''साषी सिंध समानो बुंद में बुंद हो सिंध समान । सिंध बुंद ऐके भयो बहुरन आवा जांन ।।
अगम ग्यान अदनेत मत । आद रूप विग्यान ।
है सुबूत निरगुण कथा । तुमसो कहों बखान ।।

ऐते श्री ग्रंथपंचमुंद्रा कबीर धर्मदाससंवादे भक्त जोग ग्यान ब्रनसार संपूर्ण समापत । सुभमस्तु ।।''

टिप्पणी-सुकृत और जोगजीत के कथापकथन के रूप में रचित यह कृति कबीर की है, यह संदिग्ध है । इसमें यौगिक क्रियाओं तथा तत्सम्बन्धी विभिन्न मुद्राओं का विशद विवेचन है । कबीर की अद्यावधि उपलब्ध कृतियों में इसके पूर्व इसका उल्लेख कदाचित् नहीं हुआ है । ग्रन्थ की लिपि प्राचीन है । यह ग्रन्थ मलाही (चंपारन)-निवासी श्रीबनारसीप्रसाद से प्राप्त हुआ है ।

१४२.कोकमुकुंदी--ग्रन्थकार-मुकुंददास । लिपिकार-× । अवस्था-खंडित, हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ सं०-२७ । प्र० पृं० पं० लगभग-३२ । आकार-६½" × ६¼" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल- × ।

प्रारम्भ- ''श्री रामचन्द्रजी । श्री पोथी कोक मुकुंदी । श्री गनेसाए नमह श्री सारदाजी सहाए श्री हनुमानजी सहाए श्री महादेवजी सहाए श्री तेतीस कोट देवताजी सहाए श्री.......देवाएनमह श्री पोथी मुकुंदी कोकसास्त्रक्रीत मुकुंददास ।

चौपाई

काम तत मैं कहो बीचारो । लछन पुरुख जाती है नचारी ।।
ससाभ्रीगाब्रीखभतुरंगा । पावही नर रस अघो सुरंगा ।।
पहीले कहो ससा कर लछन । काम कला रसरसीक विहछनछन ।।
रतीरसरसीकतरुनीमन हरई । गावत पढ़त बीस्व बस करई ।।

मध्य (पृ० सं० १४)- क्रीस्न पछ के महीमा, कवि मुकुंद कह जानी ।
दहीने उतरे नारी तनु, सभ बीधी कहो बखानी ।।
माथे कुंतल गहे सुजाना । गाल नीत्र कर चुमन छाना ।।
दसन अध्र धै धै रस लेई, मुस्टीका मारी रस रहे हरेई ।।''

अन्त- "तन सुंदर गज उपमा पाई । कुच उतंग रसीक मन लाई ।।
गाढे.....सभ चहु दीस मोती । करे अलप बहुत रंगाती ।।
पीवजीवकाचीतराखे वो सभ काल परवीन ।
गावत बोलावत गुन करे तरुनी मन रस लीन ।।

विषय-स्त्री-पुरुष के शुभाशुभ-लक्षण और कोकशास्त्र-सम्मत औषधोपचार ।

टिप्पणी-ग्रन्थ खण्डित है, अतः ग्रन्थकार अथवा लिपिकार के समय को संकेतित करनेवाली पुष्पिका-पंक्तियाँ नहीं है । काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के अनुसार सं० १६७२ के लगभग वर्त्तमान; शाहजादा सलीम (जहाँगीर) के आश्रित; दे० ना० प्र० स० का खो० वि० १६०६-११, ग्रं० सं० १८३ ए और बी तथा मिश्रबन्धु-विनोद (गंगा-ग्रन्थागार, लखनऊ, पंचम संस्करण, सं० २०१३ वि०, पृ० ३३५, कवि-सं० ३८२ । कवि की चर्चा काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों का सोलहवाँ त्रैवार्षिक विवरण' (सन् १६३५-३७ ई०) में भी हुई है; दे० पृ० स० ३६ और कवि-सं० ६५ । ग्रन्थ की लिपि अस्पष्ट ओर पुरानी कैथी है ।

यह ग्रन्थ अख्तियारपुर, विक्रम (पटना)-निवासी श्रीशिवरत्नप्रसादसिंह के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

१४३.छप्पै रामायण-ग्रन्थकार-तुलसीदास । लिपिकार-रेवतलाल । अवस्था-पूर्ण, पुराना कागज । पृष्ठ सं०-१५ । प्र० पृं० पं० लगभग-१८। आकार-८¹/₇" × ५¹/₂"। भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-×। लिपिकाल-माघ सुदी ५; रोज एतवार, सन् १२५१ फसली=१६०१ वि० = सन् १८४४ ई० ।

प्रारम्भः- "श्री गनेस जी सेहाए
श्री गुरु चरन सरोज बंदी गेननाथ मनावो ।
जेही प्रसाद शुभ होए नाथ सो वीनै सुनावो।।
आरत हरन क्रीपाल नाम मुनी साधुन गाई ।
सुमीरत गाए.......तनाथ सभ.........सहाइ ।।

छपै । श्रीपती रघुपती अवधपती राखी लेहु सरन आपना ।
श्री रामचंद्रजी क्रीपा करो मम हरीऐ सोग सनतापना ।।
रही कपीत सीसुपती समेत चंद्रजोत रुपासा ।
गगन उड़े सांचा न भुमीतल अगीनीप्रगासा ।।
व्याध गहे करपान देखीं लोचन जल मोचत ।
पंछी सो मनमह सभीत दंपती उर सोचत ।।"

मध्य (पृ० सं० २२) :

चौपाई- "सहज अंस लग जेतिक भाषा । ते सब रचना प्रले तर राषा ।।
ईहाँ लग प्रले के प्रवांता । आंगे अक्षे लोग अस्थाना ।।
सहज पुर्स ते आंगे जाई । आद पुर्स को लोक दिषाई ।।
सहज ते ऐक असेष प्रवाना । तहावा आदपुर्स निरवाना ।।"

अन्त- "साषी सिंध समानो बुंद में बुंद हो सिंध समान । सिंध बुंद ऐके भयो बहुरन आवा जांन ।।
अगम ग्यान अदनेत मत । आद रूप विग्यान ।
है सुबूत निरगुण कथा । तुमसो कहें बखान ।।

ऐते श्री ग्रंथपंचमुंद्रा कबीर धर्मदाससंवादे भक्त जोग ग्यान ब्रनसार संपूर्ण समापत । सुभमस्तु ।।"

टिप्पणी-सुकृत और जोगजीत के कथापकथन के रूप में रचित यह कृति कबीर की है, यह संदिग्ध है । इसमें यौगिक क्रियाओं तथा तत्सम्बन्धी विभिन्न मुद्राओं का विशद विवेचन है । कबीर की अद्यावधि उपलब्ध कृतियों में इसके पूर्व इसका उल्लेख कदाचित् नहीं हुआ है । ग्रन्थ की लिपि प्राचीन है । यह ग्रन्थ मलाही (चंपारन)-निवासी श्रीबनारसीप्रसाद से प्राप्त हुआ है ।

१४२.कोकमुकुंदी--ग्रन्थकार-मुकुंददास । लिपिकार-× । अवस्था-खंडित, हाथ का बना देशी कागज । पृष्ठ सं०-२७ । प्र० पृं० पं० लगभग-३२ । आकार-६½" × ६¼" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल- × ।

प्रारम्भ- "श्री रामचन्द्रजी । श्री पोथी कोक मुकुंदी । श्री गनेसाए नमह श्री सारदाजी सहाए श्री हनुमानजी सहाए श्री महादेवजी सहाए श्री तेतीस कोट देवताजी सहाए श्री.......देवाएनमह श्री पोथी मुकुंदी कोकसास्त्रक्रीत मुकुंददास ।

चौपाई

काम तत में कहो बीचारो । लछन पुरुख जाती है नचारी ।।
ससाभ्रीगाब्रीखभतुरंगा । पावही नर रस अघो सुरंगा ।।
पहीले कहो ससा कर लछन । काम कला रसरसीक विहछनछन ।।
रतीरसरसीकतरुनीमन हरई । गावत पढ़त बीस्व बस करई ।।

मध्य (पृ० सं० १४)- क्रीस्न पछ के महीमा, कवि मुकुंद कह जानी ।
दहीने उतरे नारी तनु, सभ बीधी कहो बखानी ।।
माथे कुंतल गहे सुजाना । गाल नीत्र कर चुमन छाना ।।
दसन अध्र धै धै रस लेई, मुस्टीका मारी रस रहे हरेई ।।"

अन्त- "तन सुंदर गज उपमा पाई । कुच उतंग रसीक मन लाई ।।
गाढे.....सभ चहु दीस मोती । करे अलप बहुत रंगाती ।।
पीवजीवकाचीतराखे वो सभ काल परवीन ।
गावत बोलावत गुन करे तरुनी मन रस लीन ।।

विषय-स्त्री-पुरुष के शुभाशुभ-लक्षण और कोकशास्त्र-सम्मत औषधोपचार ।

टिप्पणी-ग्रन्थ खण्डित है, अतः ग्रन्थकार अथवा लिपिकार के समय को संकेतित करनेवाली पुष्पिका-पंक्तियाँ नहीं है । काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के अनुसार सं० १६७२ के लगभग वर्त्तमान; शाहजादा सलीम (जहाँगीर) के आश्रित; दे० ना० प्र० स० का खो० वि० १६०६-११, ग्रं० सं० १८३ ए और बी तथा मिश्रबन्धु-विनोद (गंगा-ग्रन्थागार, लखनऊ, पंचम संस्करण, सं० २०१३ वि०, पृ० ३३५, कवि-सं० ३८२ । कवि की चर्चा काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से प्रकाशित 'हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों का सोलहवाँ त्रैवार्षिक विवरण' (सन् १६३५-३७ ई०) में भी हुई है; दे० पृ० स० ३६ और कवि-सं० ६५ । ग्रन्थ की लिपि अस्पष्ट और पुरानी कैथी है ।

यह ग्रन्थ अख्तियारपुर, विक्रम (पटना)-निवासी श्रीशिवरत्नप्रसादसिंह के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

१४३.छप्पै रामायण-ग्रन्थकार-तुलसीदास । लिपिकार-रेवतलाल । अवस्था-पूर्ण, पुराना कागज । पृष्ठ सं०-१५ । प्र० पृं० पं० लगभग-१८। आकार-८१/७" × ५१/२"। भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-×। लिपिकाल-माघ सुदी ५; रोज एतवार, सन् १२५१ फसली=१६०१ वि० = सन् १८४४ ई० ।

प्रारम्भः- "श्री गनेस जी सेहाए
श्री गुरु चरन सरोज बंदी गेननाथ मनावो ।
जेही प्रसाद शुभ होए नाथ सो वीनै सुनावो।।
आरत हरन क्रीपाल नाम मुनी साधुन गाई ।
सुमीरत गाए.......तनाथ सभ.........सहाइ ।।

छपै । श्रीपती रघुपती अवधपती राखी लेहु सरन आपना ।
श्री रामचंद्रजी क्रीपा करो मम हरीऐ सोग सनतापना ।।
रही कपीत सीसुपती समेत चंद्रजोत रुपासा ।
गगन उड़े सांचा न भुमीतल अगीनीप्रगासा ।।
व्याध गहे करपान देखीं लोचन जल मोचत ।
पंछी सो मनमह सभीत दंपती उर सोचत ।।"

मध्य (पृं० सं० ८) :

"सो सुनी पवन कुमार तब हरख भैमन आपना ।।
श्री रामचंद्रजी क्रीपा करो मम हरीऐ सोग संतापना ।।
उचकी उठे हनुमान कान सुनी वैन रीछे सो चलत
महाधुनी गर्ज डोल मही दीगज ससा ।।
सुर सो वदन समाऐ सीधु के पार सीधाबहु ।
प्रभु प्रताप जल जान पार सागर होऐ आऐ ।।
मुस्टीकहानी लंकेस नीचले सुमारी प्रभु आपना ।
श्री रामचंद्रजी क्रीपा करो मम हरीऐ सोग संतापना ।।"

अन्त- "बीदा कीए सभ सखही प्रभु जब जाये ग्रीह आपना ।
श्रीरामचन्द्रजी जी क्रीपाकरो मम हरीऐ सोग संतापना ।।
रामचरित्र ओ गाई सीधु कोउ पार न पावौ ।।
सेस न सारध नीगमनेती कही नींज मुख गावौ ।।
संभु उमा संवाद भारदवाज जागवलीक मुनी ।
काग भुसुंडी से मुनी .....तुलसी मानस गुनी ।। छपै ४६

इतीश्री तुलसी पुकार असतुती संपुरन जो देखा सो लीखा मम दीखन न दीअते पंडीत जन सो बीनती मोरी टुटल अछर ले सभ जोरी सं० ६१२ साल समे नाम मीती माघ सुदी ५ राज ऐतवार के तेआर भेल ।

विषय-रामचन्द्र के जीवन से सम्वद्ध घटनाओं पर अवलंवित भक्तिरसपूर्ण स्तुतियाँ ।

टिप्पणी-गोस्वामी तुलसीदास-रचित छप्पय छंद में रामायण का वर्णन । इस ग्रन्थ की अन्य पाण्डुलिपि काशी-नागरी प्रचारिणी सभा तथा वि० रा० भा० प० की खोज में मिली है, ना० प्र० स० (का०) के खोज-विवरणस्थ का लिपिकाल सं० १६२८ वि० = १८७१ ई० है। दे०-ना० प्र० स० (का०) खो० वि० १६०६-८, सं० २४५ एच् और बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से मन्नूलाल पुस्तकालय (गया) के ग्रन्थों का प्रकाशित विवरण (दूसरा खंड), पृ० २३ और ग्रं० सं० २०; इसका लिपिकाल सं० १६१६ वि० = १८६२ ई० है । यह प्रति उपर्युक्त दोनों पाण्डुलिपियों से प्राचीन है ग्रन्थ की लिपि पुरानी अस्पष्ट और कैथी है । यह ग्रन्थ श्रीरंगनाथ पुस्तकालय, गोरखरी (विक्रम, पटना) से प्राप्त हुआ ।

१४४.कृष्ण रामायण-ग्रन्थकार-घनारंग । लिपिकार-बच्चू मल्लिक । अवस्था-पूर्ण और मुद्रित । पृष्ठ सं०-१६७ । प्र० पृं० पं० लगभग-२४ । भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । ग्रन्थकार की जन्मतिथि-सं० १८७६ वि० = १८१६ ई० । मृत्यु-तिथि-सं० १६४४ वि०=१८८७ ई० । लिपिकाल-× । मुद्रणकाल-१८६४ ई० । प्रकाशक-श्रीबच्चू मल्लिक (उपनाम-प्रकाश कवि) । मुद्रण स्थान-हरिप्रकाश यन्त्रालय बनारस ।

प्रारम्भ :

"दोहा । जेहि शुभ सुमिरे होत है सर्व समय सब देस ।
तुमहि मनाओ गजबदन को दोष निरसेस ।।'

सोरठा । श्री गुरु चरन सरोज सुखदायक आनन्दघन ।
अमल ज्ञान को मौज कामधेनु इव लोक में ।।

दोहा । दुख नासक आनँद प्रबल वन्दों श्रीहरि रूप ।
ध्याइ परे ना नर भवहि पद जाकर सु अनूप ।।"

मध्य (पृ० सं० ८४) :

"दोहा । जासु चलत डोलत छमा दबे दसों दिगपाल ।
तेज छीन ससी भानु के जितेहु इन्द्र जम काल ।।

सोरठा । जीते वरुन कुवेर पौन बिस्व जेतो सुभट ।
लग्यो न तुम कहँ देर मन्यो कन्त निज हठहिं ते ।।"

अन्त- "राग बरवा खेमटा ।
हाय वसिया बाजे नारे की । गई कधैया के संग ।।
वैरनि सवको टेरि वोलावति ज्यों डोरी वस चंग ।
अव पिय को ले गई कहाधौं करिके हमे वेरंग ।।
जाके सवद सुनत जिय मोहे ज्यों नट विवस भुजंग ।
श्री शंकर को ध्यान धरो अति दुख देत अनंग ।।
सार हीन ओर्छी निरमोही रगरें जल कुल अंग ।
अधरामृत पी भै ठकुरानीं हम सवरी तप तंग ।।
वन में अपनी सदा सुनावै जेहि सुनि मरत कुरंग ।
छिद्र अनेक गांठ वहु जामे हरि प्रेरक मुख तंग ।।
कुविजा कर पिय दण्ड मुरलि हरि जोड़ी बनी कुढंग ।
घनारंग पर कृपा करो अब हे नटराज त्रिभंग ।।

दोहा । यह पूर्वार्ध कथा कहे जन मन के सुखदाय ।
कहत सुनत लह चारि फल सकलो अध नरि जाय ।।

विषय- कृष्ण-भक्ति से सम्वद्ध विभिन्न रागों में गेय पद ।

टिप्पणी-शाहाबाद जिला के धनगाई 'ग्राम-निवासी और डुमराँव-राज्य के आश्रित ग्रन्थकार कृष्णोपासक और गानविद्या के परम पण्डित थे । कहा जाता है कि इन्हें विभिन्न कवियों के हजारों पद कंटस्थ थे । ये डुमराँव-नरेश महेश्वरबख्शसिंह के दरवार में प्रतिदिन एक नई रचना किसी अद्भुत राग के सुनाया करते थे । रामोपासक राजा ने इन्हें रामायण के समान कृष्ण-सम्बन्धी कथा-ग्रन्थ रचने के लिए कहा । इतना सुनकर मल्लिकजी ने श्रीकृष्ण के प्रति यशोदा के कथन के रूप में यह रचना प्रस्तुत की ।

मध्य (पृ० सं० ८) :

"सो सुनी पवन कुमार तब हरख भैमन आपना ।।
श्री रामचंद्रजी क्रीपा करो मम हरीऐ सोग संतापना ।।
उचकी उठे हनुमान कान सुनी वैन रीछे सो चलत
महाधुनी गर्ज डोल मही दीगज ससा ।।
सुर सो वदन समाऐ सीधु के पार सीधाबहु ।
प्रभु प्रताप जल जान पार सागर होऐ आऐ ।।
मुस्टीकहानी लंकेस नीचले सुमारी प्रभु आपना ।
श्री रामचंद्रजी क्रीपा करो मम हरीऐ सोग संतापना ।।"

अन्त-

"बीदा कीए सभ सखही प्रभु जब जाये ग्रीह आपना ।
श्रीरामचन्द्रजी जी क्रीपाकरो मम हरीऐ सोग संतापना ।।
रामचरित्र ओ गाई सीधु कोउ पार न पावौ ।।
सेस न सारध नीगमनेती कही नीज मुख गावौ ।।
संभु उमा संबाद भारदवाज जागवलीक मुनी ।
काग भुसुंडी से मुनी .....तुलसी मानस गुनी ।। छपै ४६

इतीश्री तुलसी पुकार असतुती संपुरन जो देखा सो लीखा मम दीखन न दीअते पंडीत जन सो बीनती मोरी टुटल अछर ले सभ जोरी सं० ६१२ साल समे नाम मीती माघ सुदी ५ राज ऐतवार कै तेआर भेल ।

विषय-रामचन्द्र के जीवन से सम्बद्ध घटनाओं पर अवलंवित भक्तिरसपूर्ण स्तुतियाँ।

टिप्पणी-गोस्वामी तुलसीदास-रचित छप्पय छंद में रामायण का वर्णन । इस ग्रन्थ की अन्य पाण्डुलिपि काशी-नागरी प्रचारिणी सभा तथा वि० रा० भा० प० की खोज में मिली है, ना० प्र० स० (का०) के खोज-विवरणस्थ का लिपिकाल सं० १६२८ वि० = १८७१ ई० है। दे०-ना० प्र० स० (का०) खो० वि० १६०६-८, सं० २४५ एच् और बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से मन्नूलाल पुस्तकालय (गया) के ग्रन्थों का प्रकाशित विवरण (दूसरा खंड), पृ० २३ और ग्रं० सं० २०; इसका लिपिकाल सं० १६१६ वि० = १८६२ ई० है । यह प्रति उपर्युक्त दोनों पाण्डुलिपियों से प्राचीन है ग्रन्थ की लिपि पुरानी अस्पष्ट और कैथी है । यह ग्रन्थ श्रीरंगनाथ पुस्तकालय, गोरखरी (विक्रम, पटना) से प्राप्त हुआ ।

१४४.कृष्ण रामायण-ग्रन्थकार-घनारंग । लिपिकार-बच्चू मल्लिक । अवस्था-पूर्ण और मुद्रित । पृष्ठ सं०-१६७ । प्र० पृं० पं० लगभग-२४ । भाषा-हिन्दी। लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । ग्रन्थकार की जन्मतिथि-सं० १८७६ वि० = १८१६ ई० । मृत्यु-तिथि-सं० १६४४ वि०=१८८७ ई० । लिपिकाल-× । मुद्रणकाल-१८६४ ई० । प्रकाशक-श्रीबच्चू मल्लिक (उपनाम-प्रकाश कवि) । मुद्रण स्थान-हरिप्रकाश यन्त्रालय बनारस ।

प्रारम्भ :

"दोहा ।	जेहि शुभ सुमिरे होत है सर्व समय सव देस । तुमहि मनाओ गजबदन को दोष निस्सेस ।।'
सोरठा ।	श्री गुरु चरन सरोज सुखदायक आनन्दघन । अमल ज्ञान को मौज कामधेनु इव लोक में ।।
दोहा ।	दुख नासक आनँद प्रबल बन्दों श्रीहरि रूप । ध्याइ परे ना नर भवहि पद जाकर सु अनूप ।।"

मध्य (पृ० सं० ८४) :

"दोहा ।	जासु चलत डोलत छमा दबे दसों दिगपाल । तेज छीन ससी भानु के जितेहु इन्द्र जम काल ।।
सोरठा ।	जीते वरुन कुवेर पौन विस्व जेतो सुभट । लग्यो न तुम कहँ देर मन्यो कन्त निज हठहिं ते ।।"
अन्त-	"राग बरवा खेमटा । हाय बसिया बाजे नारे की । गई कधैया के संग ।। वैरनि सवको टेरि वोलावति ज्यों डोरी वस चंग । अव पिय को ले गई कहाधौं करिके हमे वेरंग ।। जाके सवद सुनत जिय मोहे ज्यों नट विवस भुजंग। श्री शंकर को ध्यान धरो अति दुख देत अनंग ।। सार हीन ओछी निरमोही रगरें जल कुल अंग । अधरामृत पी भै ठकुरानी हम सवरी तप तंग ।। वन में अपनी सदा सुनावै जेहि सुनि मरत कुरंग । छिद्र अनेक गांठ वहु जामे हरि प्रेरक मुख तंग ।। कुविजा कर पिय दण्ड मुरलि हरि जोड़ी बनी कुढंग। घनारंग पर कृपा करो अब हे नटराज त्रिभंग ।।
दोहा ।	यह पूर्वार्ध कथा कहे जन मन के सुखदाय । कहत सुनत लह चारि फल सकलो अध नसि जाय ।।
विषय-	कृष्ण-भक्ति से सम्वद्ध विभिन्न रागों में गेय पद ।

टिप्पणी-शाहाबाद जिला के धनगाई 'ग्राम-निवासी और डुमराँव-राज्य के आश्रित ग्रन्थकार कृष्णोपासक और गानविद्या के परम पण्डित थे । कहा जाता है कि इन्हें विभिन्न कवियों के हजारों पद कंटस्थ थे । ये डुमराँव-नरेश महेश्वरवक्ष्शसिंह के दरबार में प्रतिदिन एक नई रचना किसी अद्‌भुत राग के सुनाया करते थे । रामोपासक राजा ने इन्हें रामायण के समान कृष्ण-सम्बन्धी कथा-ग्रन्थ रचने के लिए कहा । इतना सुनकर मल्लिकजी ने श्रीकृष्ण के प्रति यशोदा के कथन के रूप में यह रचना प्रस्तुत की ।

यह ग्रन्थ मुद्रित है । ग्रन्थ की पुष्पिका में कवि ने अपना वंशोद्भव तथा पूर्वजों के स्थान-परिवर्त्तन पर प्रकाश डाला है । यह ग्रन्थ मल्लिकजी के वंशज श्रीसहदेव दुबे (धनगाईं, सूरजपुरा, शाहाबाद)-निवासी से प्राप्त हुआ है ।

१४५.(क) **निरभैग्यान**-ग्रन्थकार-दरियासाहव । लिपिकार-निर्मलदास । अवस्था-पूर्ण, पुराना, हाथ का बना कागज । पृष्ठ सं०-१४ । प्र० पृं० पं० लगभग-३२। आकार-७½" × ५½"। भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-×। लिपिकाल-सं० १९५६ वि० ।

प्रारम्भ- "गर्थ नीरभैगान भाखल दरीआ साहव हंस उवारन मुकुति के दाता वंदी छोर । साखी-

आदी पूर्ख कता है जीन्ह की सकल पसार ।
प्रीथी नीरभ्र का सजत चाँद सुर्ज बीसतार ।।
अर्ज.........................अम्र अवीनासी ।
हंस उवारी काटही जमफासी ।।"

मध्य (पृ० सं० ७)

"वीनु मनी नाही भुजंग की जाती ।
वीनामनीनाही होऐ उजीआरा ।।
और फिरै सबके.........आ पारा ।
जाके होए मुल मंनीमाला ।
सोइ संत है आन रीसाला ।"

अन्त- 'जोगजुग्ती गहे चीतलाई । ताको काल नीकटनाही आइ ।।
गहीरहोए गहे जो ग्याना । असल भेद करै प्रवाना ।।
मोर साहुकै करै वीनाई । सत्तसब्द गहै चीतलाई ।।
सत्तगुरु सब्द प्रतीति करीं गहो संतचीतलाए ।
छपलोक के जाइहो वहुरी ना भौ जल पाए ।।

ग्रथनीरभए ग्वान समपुरन भइल सन् १३०७ साल, फागुन बदी चउथ बार एतवारः सम्वत १९५६ ।"

विषय-सत्पुरुष और शब्द में विश्वास की आवश्यकता, सत्पुरुष का गुणानुवाद आत्मा पर सद्गुरु का शांतिप्रद और कल्याणकर प्रभाव ।

टिप्पणी-लिपि पुरानी है । लिपिकार धनगाईं (शाहाबाद) के दरियामठ के निवासी है। यह ग्रन्थ श्रीसहदेव दुबे (धनगाईं, सूरजपुरा, शाहाबाद) के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

१४५.(ख) **गणेशगोष्ठी**-ग्रन्थकार-दरिया साहब । लिपिकार-निर्मलदास । अवस्था-पूर्ण, पुराना कागज । पृष्ठ सं०-७ । प्र० पृं० पं० लगभग-१८ । आकार-७¹/₄" × ५¹/₂" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-१६५६ वि० ।

प्रारम्भ- "पंडीत राज सुनो सतवानी । पढी गरंथ कछु लाज न आनी ।।
वेद पढ़ा पर भेद न जाना । ताते जम के हाथ बीकाना ।।
सास्तर वेद पढ़ा तुम गीता । सतवचन की मिला गततीता ।।
करी खटक्रम देवह के पुजा । आतमराम देवनाही दुजा ।।"

मध्य (पृ० सं० ४)
"जो लगी पद नहि उलटि समाना । पंडीत पढ़ी का वेद पुराना ।।
वेदे अरु.................हा सवसारा ।......................
ऐक से अनंदत कंद बड़भारी । बुझो पंडीत ग्यान बीचारी ।।"

अन्त- "लगन मध्य में दीछा लीहो । कलपकोटी दुख कबहिन सहिहो।।
लगन वीचारीऐ साधिकै आजु लगन भी भंग ।
कारहु कइल्लयान इहा जुक्ति है गहो बुहमारो संग ।।
करहुक्रम इअ कहत है काल्ह काल के हाथ ।
बीच अपार कहत है बहुरी गहे कव साथ ।।"

विषय-दरिया-साहित्य । साम्प्रदायिक भेद-भाव, मूर्त्ति-पूजा, कर्मकाण्ड आदि का खण्डन तथा ईश्वर का प्रतिपादन ।

टिप्पणी-उपर्युक्त १४५ (क) और (ख) दोनों ग्रन्थ एक ही जिल्द में हैं । यह ग्रन्थ धनगाई (सूरजपुरा, शाहाबाद)-निवासी श्रीसहदेव दुबे के सौजन्य से प्राप्त हुआ ।

१४६.**सुदामा चरित**'-ग्रन्थकार-हलधरदास । लिपिकार-लक्ष्मीनारायण । अवस्था-प्रारंभ में ४३ पृष्ठ खंडित और ६ पृष्ठ जीर्ण-शीर्ण; पुराना कागज । पृष्ठ सं०-८४ । प्र० पृं० पं० लगभग-२२ । आकार-८¹/₄" × ४¹/₂" । भाषा-हिन्दी । लिपी-नागरी । रचनाकाल - × १ लिपिकाल-१६४० ।

प्रारंभ- "अश भामिनि अज्ञान राम दीए भव........।
जीन्हे एति कई.....तीन्ह केह मींत्र तुम्हारे ।।
कै भीक्षुक न्रीपमीत चीत नहि कीऐ अदेशो ।
ताहु पर अनछ.......वाहु दीए शंदेशो ।।

मध्य (पृ० सं० ६४) :
"भ्रीदुवानी शुनी जगतवन्दीनी बोध करी है ।
शत्तनन्दीनी शुनतकन्त यै हंशीकरी है ।"

* ग्रन्थ-सं० १४६-१५० एक जिल्द में ही गुम्फित ।

अन्त- "क्रीर्स्नक्रीपाते दम्पती अचलराज वसुधा करे ।
शुरपुर नरपुर नागपुर तीहपुर में चरचा भरे ।।
दोउ मुरति के धर्मतरु लगे मधुरमेवाकरन ।
सप्तदीप नवखांडमो शदावर्तलागेकरन ।।
हरिचरीत्र हरीमित्र सुख कहनिहार कवि कौन है ।
जाही सहस्रमुखबोधीदीयो तेउसमुझीके मन है ।।
माहातेज रविक्रीस्न जश जदपीना काहुतें शरे ।
तदपि कनीकहुंके कहें ज्ञानभवनदीपक वरे ।।
अशविचारीके हलधरा कछुक शुजश वरनकीवो ।
मानो माहा शमुन्द्र ते शुची अग्रजलभरिलीवो ।।
इतीश्री पोथी शुदामाचरीत्र शमाप्त ।।"

विषय-सुदामा की कथा ।

टिप्पणी-ग्रन्थकार बिहार के मुजफ्फरपुर जिला-निवासी थे । इनके सम्बन्ध की सूचना पूर्वप्रकाशित हस्तलिखित पोथियो के विवरण-ग्रन्थों में दी गई है । दे० ना० प्र० स० (काशी), खो० वि० १६०६-८, ग्रं० सं० ५६; खो० वि० १६०६-११, ग्रं० सं० १०४; वि० रा० भा० प०, खो० वि०, द्वि० ख०; ग्रं० सं० २५ । इसकी लिपि पुरानी है । लिपिकाल १८४० वि० है । लिपिकार ने अपने को गोरखपुर (उत्तरप्रदेश)-निवासी बताया है । यह ग्रन्थ मुजफ्फरपुर-निवासी श्रीपन्नालाल 'आर्य' के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

१४७. छप्पै रामायण-ग्रन्थकार-गो० तुलसीदास । लिपिकार-लक्ष्मीनारायण । अवस्था-पूर्ण, देशी कागज । पृष्ठ सं०-१५ । प्र० पृ० पं० लगभग-२२ । आकार-८$^1/_4$" × ४$^1/_2$" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-१६४० वि० ।

प्रारंभ- "शप्तकांड रामाएन कहतलगे वीस्तार ।
ताकारन शछेपहि तुलशीकरि नीस्तार ।।
यामें वाचक जनन को शप्तकांड फलहीऐ ।
प्रेमशहीत वानीशुधा पाठकरे जो कोऐ ।।

सोरठा- होत जारी उरज्ञात रामाएन तेही सुझी है ।
भाव भक्ती भगवान रामचरीत्र को कहिसके ।।

छप्पै । श्री गुरुचरनसरोज वन्दी गनपतिहि मनावो ।।
जेहिप्रशाद शुभहोइनाथ शोइवीनए शुनावों ।"

मध्य (पृ०सं०६)-"वरनी रामगुन करि प्रनाम बोले हनुमान ।
हौं अनुचर मैं नाथ मातु मुन्द्रीका मै आना ।।
नीकट बलाऐ ताही लागी पूछन कुशलाना ।।"

अन्त-　　''रामचरीत्र अवगाह सींधु कीई पार ना पावे ।
शेष शारदा नीगम नेती कही नीज मुख गावै ।।
शंभु उमाशन भारद्याज शनजागवलीगमुनी ।
कागभुशुण्डी गडुर शन कवी तुलशी मानशगुनी ।।
कहें शुनें रेतिरामपद होतशदाउर आपना ।
क्रीपा करीऐ श्रीरामचंद्र ममहरीऐ शोक संतापना ।।४५।।

इतीश्रीतुलशीदाशजीक्रीतछपेरामाऐनशप्तोकांड समाप्त शपुरानो जो देखा शोलीखा द:लछीमीनारायन काएसथ ।''

विषय-रामायण की छप्पय छंद में कथा और भगवान् (राम) की स्तुति ।

टिप्पणी-यह रचना पूर्व प्रकाशित खोज-विवरणों में भी आ चुकी है । यह अबतक प्राप्त सभी पाण्डुलिपियों में सम्भवतः प्राचीन है । विस्तार के लिए इस विवरण की ग्र० सं० १४३ की टिप्पणी देखिए । यह ग्रन्थ मुजफ्फरपुर-निवासी श्रीपन्नालाल 'आर्य' के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

१४८. **भक्तनाममाला**-ग्रन्थकार-मानप्रवत (?) । लिपिकार-लक्ष्मीनारायण । अवस्था-पूर्ण, देशी कागज । पृष्ठ सं०-७ । प्र० पृं० पं० लगभग-२२ । आकार-८³/₄" × ४¹/₂" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-१६४० वि० ।

प्रारम्भ-　　''श्री गणेशायनमः सर्वदेवायनमः श्रीपोथी भक्तनाममाला लीखते । दोहा ।।
बन्दौ शतगुरु स्वामीयां परम पुरुष जेहि नाम ।
श्रीस्वरूप घट घट रमे अजर अमर वीश्राम ।।
भक्तमहातम कहतहौं शुनहू शंन्त चीतलाऐ ।
जेहिते हंशाशुखलहे गुरुगमपंथबताऐ ।।

छन्द । शीतानाथ स्वीमीमोर अबजनिलेऊसाहेब मोर ।
करुनाशीलशागरनाम पुरनब्रम्ह अवीचलधाम ।।
जेहिजपतछुटैभ्रमजाल प्रमानंद दीनदेयाल ।
जीनएहलोकिमायाकीन्ह एहजनचारीफलरचीदीन्ह ।।
शोइ शप्तलोक निवास पुरवहि शंतजन को आश ।
जहवा काल कर्म नहि व्यापी तहवा रह्यौ मौनहि शची ।।
जहवा पाप दुख नहि लेख तहवा अमर पुर्ख.....देख ।
जहवा कोटि शशि और शुर ब्रह्मा इन्द्र रहत हजूर ।
रमीताराम ब्रह्म अकेल जाको हाथ कालहि शेल ।।''

मध्य (पृ० सं० २) :
चतुरभुज नामदेव रवीदाश । जाको प्रेम भक्ती प्रकाश ।
हीत ना आन सभ को ज्ञान । नीचहि कीन्ह आपु शमान ।।

भरथरवीक्रम महीप । दायाछत्र कुंल को दीप ।।
बन्दो तीरथराज प्रेयाग । मथुरा अवध अति अनुराग ।।''

अन्त- ''गुरुगमपंथ शुक्रीत है मुल । आतम अमर पावन फुल ।।
शतगुरु दयाकरीको दीन्ह । आपन पुरुष लीजै चीन्ह ।।
दुशार झुठ दुर्मति दंन्द । शाहेबमीले आनंन्दकंन्द ।।
मांगत मानप्रवत दान । दीजे भक्ती क्रीपानीधान ।।''

विषय- निर्गुण-साहित्य । भक्त कवियों की नामावली ।

टिप्पणी-यह ग्रन्थकार नवोपलब्ध हैं । ग्रन्थ के प्रारम्भ या अन्त में गन्थ-रचनाकाल का संकेत नहीं है । ग्रन्थ की लिपि प्राचीन देवनागरी है । यह ग्रन्थ मुजफ्फरपुर-निवासी श्रीपन्नालाल 'आर्य' के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

१४६. छप्पैप्रस्ताद-ग्रन्थकार-नरहर । लिपिकार-लक्ष्मीनारायण । अवस्था-पूर्ण, देशी कागज । पृष्ठ सं०-८ । प्र० पृं० पं० लगभग-२२ । आकार-८१/४" × ४१/३" । भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी । रचनाकाल-× । लिपिकाल-× ।

प्रारम्भ- ''गणेशायन्मः । पोथी छप्पै प्रस्ताव ।
तोलकभाल वनमाल अधीक राजत रशालछवी ।
मोर मुकुटकेलटकचटकवरनत झंटकतकवी ।।
पीतामर फहरात मधुर मुसकान कपोलन ।
रचे उरुचीरमुखपान तान गावत श्रीदुबोलन ।।
रतीकाम शोभा नीरखी दुश्ट नीकंदन गीरचरन।
आनंन्दकंन्दवीजचन्द प्रभु जैजैजै अशरनशरन ।।''

मध्य (पृ० सं० ४)
''जदपी कुशंग शंगलाभ तदपि वोह शंग ना कीजै ।।
जदपि धनीक होए नीरधन तदपि प्रक्रीतनहि लीजै ।।
जदपी दान नहि शुक्रीत तदीप शनमानननाखुदीऐ ।
जदपी प्रीति उर घटै तदपि मुख उलटी ना दुटीऐ ।।
शुनिशुजश दुवार केवार दै कुजशमाल नहि मुक्कीऐ ।
जौवजाइ जों भलपन करत तउ ना भलपन चुक्कीऐ ।।''

अन्त- ''शरशरहंस न होत वाजी गज होत ना दर दर ।
तरु तरु सुफल ना होत नारी पतिब्रता न घर घर ।।
तन तन शुमती न होंही मोती जल बुन्द न घन घन ।
फनी फनी मनी नही होत शर्प मलेआ नही वन वन।।
कहु रन होही ना शुर शभ नर नर होत ना भक्त हर।
नरहरकवी शो वीचारकही शभनर होही ना एक शर ।।
इती छप्पेप्रश्ताव शंम्पुरन ।।

विषय-कृष्ण-भक्ति से सम्बद्ध नीतिपरक छप्पै छन्दों में रचना।

टिप्पणी-ग्रन्थकार अद्यावधिक प्रतीत होते हैं । इस कवि का उल्लेख सम्भवतः पूर्ववर्त्ती अन्य खोज-विवरणों में नहीं हुआ है । ग्रन्थ की लिपि प्राचीन देवनागरी है । यह ग्रन्थ मुजफ्फरपुर-निवासी श्रीपन्नालाल 'आर्य' के सौजन्य से प्राप्त हुआ है ।

१५०. **कवितावली**-ग्रन्थकार-गो० तुलसीदास । लिपिकार-लक्ष्मीनारायण । अवस्था-पूर्ण, पुराना कागज । पृष्ठ सं०-१२१ । प्र० पृं० पं० लगभग-२२। आकार-८$^1/_4$" × ४$^1/_3$"। भाषा-हिन्दी । लिपि-नागरी। रचनाकाल-×। लिपिकाल सं०-१६४० वि० ।

प्रारम्भ- "कवीत्तरामायन । श्रीगणेशाऐन्मः शवैआ ।
अवधेश के द्वार शकारे गए शुतगोद के भुपति लै नीकेश ।
अवलोकीहों शोचवीमोंचन को ठगिशी रही जेन ठगे व्रीगशें ।।
तुलशी मन रंजन रंजीत अंजन नैन शखंजन जातक से ।
शजनी शशि में शमशील उभै नवनील शरोरुहशेवीकशे ।।"

मध्य (पृ० सं० ६०)
"काननवास दशानन आनन शो रीपुश्री ।
ससी जीती लीबोहै वाली महाबल शाली दल्यौ
कपिभालु वीभीषनभुपकीबोहै । तीएहरीरनबंधु
परोपै भरोससरनागत शोच ही वो है ।
बांहपंगार उदारक्रीपाल कहां रघुवीरक्रीपालही वो है ।। १४१ ।।"

अन्त- "पींगल जटा कलाप माथें तो पुनीत आपु पावक प्रतापबल भालपरत है । लोचन वीशाल लाल शोहै चन्द्रवाल भाल कंठ कालकुट ब्याल मुष न धरत है ।।
देत्त दानी रीझ अरु षातयाय आकही के भोरानाथ जोगीजाप अवछर छरत है ।
तुलशी अकथ कहे व्रीडा हरबेको शीव पौरोहीकीएतें शीष दारीद्र हरत है । ।। ३०२ ।।
इतीश्री कवीतावली उत्तरकांड शमाप्त ।। जो देषा शो लीषा मम दोष न दीअते ।।"

विषय- श्रीरामचन्द्र के सम्बद्ध मुक्तक-काव्य ।

टिप्पणी-ग्रन्थ की लिपि पुरानी देवनागरी-लिपि है । अन्त में सूरदास आदि के स्फुट पद भी है । यह ग्रन्थ मुजफ्फरपुर-निवासी श्रीपन्नालाल 'आर्य' के सौजन्य से प्राप्त हुआ है।



परिशिष्ट

* अज्ञात रचानाकारों की कृतियाँ
** ग्रन्थों और ग्रन्थकारों की अणुक्रमणिका
*** महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज-विवरणिकाओं में उल्लेख का विवरण ।

प्रथम परिशिष्ट

अज्ञात रचनाकारों की कृतियाँ

(ग्रन्थों के सामने कोष्ठकों में अंकित संख्याएँ विवरणान्तर्गत क्रम-संख्याएँ हैं ।)

क्रम-संख्या	ग्रन्थों के नाम	विषय	रचनाकाल	लिपिकाल	विशेष
१.	नागलीला (१०८)	कृष्ण-जीवन-सम्बन्धी रचना		१६०५ वि०	
२.	बन्दीमोचन (११०)	पुत्र-प्राप्ति के लिए वन्दना		१८१७ वि० = १८४० ई०	
३.	आयुर्वेद-सम्बन्धी ग्रन्थ (११६)	पारा आदि शोधने की विधि			
४.	वनयात्रा (१२०)	मथुरा के विभिन्न स्थानों के वर्णन			
५.	वैदक-ग्रन्थ (१४०)	रोग-लक्षण और रोगोपचार का आयुर्वेद-विषयक ग्रन्थ			

द्वितीय परिशिष्ट

ग्रन्थों की अनुक्रमणिका

(ग्रन्थों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई क्रमसंख्याएँ हैं ।)

•

ग्रन्थकारों की अनुक्रमणिका

(ग्रन्थकारों के सामने की संख्याएँ विवरणिका में दी गई ग्रन्थ-संख्या की क्रम-संख्याएँ हैं।)

तृतीय परिशिष्ट

महत्त्वपूर्ण हस्तलेखों के समय तथा अन्य प्रकाशित खोज-विवरणिकाओं में उनके उल्लेख का विवरण

क्रम संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	रचनाकाल	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल तथा खोज-विवरणान्तर्गत ग्रथ-संख्या			विशेष
				लिपिकाल	खो०वि०ग्र०	ग्रन्थ-संख्या	
१.	कबीरदास	१ पंचमुद्र		१७४७ वि०	ना० प्र० स० का०१९३५-३७	४९ एस्	
				१९२८ ,,	वि० रा० भा० प० ३ खं०;	१४१	
२.	कृपाराम	१ भागवत भाषा	१८१५ वि०१	१८७६ "	ना० प्र० स० का० १९०५	६	
					" " १९०६-८	१५५	
				१९५० "	वि० रा० भा० प० ३ खं०;	८५	
				१९५० "	" "	११५	
३.	चरणदास	१ ज्ञानस्वरोदय	१७६० वि०	१८३३ "	ना० प्र० स० का० १९०१	७०	
				१८१५ "	" " १९०३	१३५	
					" " १९०६-०८	१४७ ई	
					" " १९१७-१९	३८ ए	
					" " १९२०-२२	२९ बी	
					" " १९२३-२५	७४	
					" " १९२६-२८	७८ ओ	
				१९१८ "	" " १९२९-३१	६५ डब्ल्यू, एक्स, वाई, जेड्	
				१८७७ "	वि० रा० भा० प० १ खं, १९५८	६६	
				१८७७ "	" ३ "	११४	
				१२५९ फ०=१९०९वि०	" ३ "	१३३	
४	तुलसीदास	१ रामचरितमानस		१६४७ वि०क	ना० प्र० स० का० १९००	१	
				१६०४ "	" १९०१	२२	
				१६७४	" १९०१	२८	

क्रम संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	रचनाकाल	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल तथा खोज-विवरणान्तर्गत ग्रथ-संख्या			विशेष
				लिपिकाल	खो०वि०ग्र०	ग्रन्थ-संख्या	
४.	तुलसीदास	१ रामचरितमानस		१८६७ वि०	ना० प्र० स० का०१६०३	१६७, १६८, १६६	
				१८१८ "	" " " १६०४	१४४	
				१६०४ "	" " " १६२०-२२	११८ ए	
					" " " १६२३-२५	४३२	
					" " " १६२६-२८	४८२ ए से जेड तक ३२५ ए से जेड और ३२५ ए२ से ओ २ तक	
				१६१३ "			अर्थात् कुल ४१ पाण्डुलिपियाँ
				१८७८ "			
				१८७६ "			
				१७६० "			
				१८५६ "			
				१७६० "			
				१८८३ "			
				१८८७ "			
				१६०४ "			
				१८६२ "			
				१६०२ "			
				१७६० "			
				१८७२ "			
				१८८८ "			
				१६३२ "	वि० रा० भा० प० १ खं	२	
				१६२२ "	"	३	
				१८४७ "	"	७	
				१८८२ "			

क्रम संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	रचनाकाल	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल तथा खोज-विवरणान्तर्गत ग्रथ-संख्या			विशेष
				लिपिकाल	खो०वि०ग्र०	ग्रन्थ-संख्या	
४.	तुलसीदास			१८५९ वि०	वि० रा० भा० प० १ खं०	५	
				१८६४ "	" "	१८	
				१८३६ "	" "	४१	
				१९०९ "	" "	९९	
					" ३ खं०	१०४	
				१८८७ ई०	" "	१२१	
		१ रामचरितमानस		१८७१ वि०	" "	११८	
					" "	१२७	
					" "	१२९	
				१८५८ वि०	" "	१३०	
				१२६७ फ०=१९१७वि०	" "	१३८	
		२ भरथमिलाप			ना० प्र० स०, का०	४८५ ए	
				१८८८ वि०	वि० रा० भा० प० २ खं०	४८	
				१९०७ ई०	" ३ खं०	१०७	
				१८५७ वि०	" "	१३९	
		३ छप्पै रामायण		१८७१ "	ना० प्र० स० का० १९०६-८	२४५ एच्	
					वि० रा० भा० प० २ खं०	१९, २०	
		४ कवितावली		१९९९ "	ना० प्र० स० का० १९०३	१२५	
		(कविता रामायण)		१८५९ "	१९२०-२२	१९८ एफ	
					" १९२३-२५	४३२	
					" १९२६-२८	४८२ ई, एफ	
					" १९२९-३१	३२५ आर २	
				१९१९ "	वि० रा० भा० प० २ खं०	१३	
				१८९४ "	" "	१२७	
				१९४० "	" ३ खं०	१५०	

क्रम संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	रचनाकाल	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल तथा खोज-विवरणान्तर्गत ग्रथ-संख्या			विशेष
				लिपिकाल	खो०वि०ग्र०	ग्रन्थ-संख्या	
५.	दरियादास	१ प्रेममूला		१२२६ फ०	वि० रा० भा० प० १ खं०	४५ (ङ),५२ (क), ६० (क), ६५ (घ)	
				१६६६ वि०	३ खं०	१३५	
		२ भक्तिहेतु		१८६६ "	ना० प्र० स० का० १६०६-११	५५ सी	
				१२६६ फ०	वि० रा० भा० प० १ खं०	४५ (ग), ५१ (क), ५२ (घ), ६१ (ख), ६५ (ख)	
		३ निरभैग्यान		१३०२ फ०-१६५२ वि०	" "	४५ (ज)	
		४ गणेश-गोष्ठी		१६४६ वि०	ना० प्र० स० का० १६०६-११	५५ जी०	
					वि० रा० भा० प० १ खं०	५० (ख)	
				१८६४ "	" "	५३ (क), ५४	
६.	नन्ददास	१ नाममाला (अनेकार्यमंजरी)			ना० प्र० स० का० १६०२	५८	
				१८०२ "	" " १६०३	१५३	
				१८०६ "	" " १६०६-११	२०८ डी	
				१८०१, १ ४६	" " १६२०-२२	११३ डी, ई	
					" " १६२६-२८	३१६ ए, बी, सी, डी, ई,एफ,जी	
				१८१४ वि०	" " १६२६-३१	२४४ ए	यह पाण्डुलिपि श्रीचैतन्य-पुस्तकालय, गायघाट, पटनासिटी के संग्रहालय में है ।
				१६०१ "	" " "	२४४ बी	
				१८५२ "	" " "	२४४ सी	
					वि० रा० भा० प० २ खं०	८८	
				१८५८ वि०	" " "	१२४	
				१६४१ "	" ३ खं०	१२३'	
				१८४१ "	" "	१३१	

क्रम संख्या	ग्रन्थकार	ग्रन्थ-नाम	रचनाकाल	प्राप्त ग्रन्थों के लिपिकाल तथा खोज-विवरणान्तर्गत ग्रथ-संख्या			विशेष
				लिपिकाल	खो०वि०ग्र०	ग्रन्थ-संख्या	
७.	परमानन्ददास	१ वारहमासा	१८५५ वि०	१६४१ ई०	वि० रा० भा० प० १ खं०	६२	
				१२७७ फ०-१६२७वि०	" " २ खं०	११२	
८.	सूरदास	१ सूरसागर		१८५३ वि०	ना० प्र० स० काशी १६०१	२३	
				१७६२ वि०	" " १६०४	१४२	
				१८७३ वि०	" " १६०६-८	२४४ सी	
				१८६६ वि०-१८२७वि०	" " १६२६-२८	४७१ एम्, एन्	
				१८२५ वि०	वि० रा० भा० प० १खं०	४३	
				१६१३ वि०	" २ खं०	३६	
				१६२४ वि०	" "	८०	
					" ३ खं०	११३	
६.	सूरजदास	१ रामजन्म		१६०६ वि०-१८५२ई०	ना० प्र० स० का० १६२६-२८	४७३ बी	
				१६३७ वि०	वि० रा० भा० प० १ खं०	४५ क	
				१६८८ वि०	" २ खं०	४७	
					" ३ खं०	१०५	
१०.	हलधरदास	१ सुदामाचरित		१६११ वि०	ना० प्र० स० का० १६०६-११	१०४	
				१८०० वि०	" " १६२६	१६३	
					वि० रा० भा० प० २ खं०	२५	

